04 - पापा कुछ न कहेंगे

05 - अंधेरे का संबंध तो माँ के पेट से ही रहता है- दिलीप शर्मा

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 15 जून, 2025

06 - जर्जर सरकारी स्कूलों की मरम्मत के लिए नहीं मिला बजट

07 - परदे पर कई कहानियां कहती है फिल्मी बरसात

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 276, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

ऑटो की फिजूलखर्ची को टालते हुए
रेलवे स्टेशन से पैदल
पिता लौटते हैं घर
ये उनके गला साफ़ करने की आवाज़ है
और हम अपनी कॉपी क़िताब खोल कर
अच्छे बच्चों की तरह पढ़ने के अभिनय में हैं
उनकी चप्पलें गाँव के कच्चे रास्तों पर
कीचड़ में धंस कर टूट चुकीं
उनके पांवों में कंकड़-पत्थर चुभने के घाव हैं
और वे चले आ रहे हैं
अँधेरे में घर की तरफ़
वे इतवार के हाट से लौट रहे हैं
वे ट्यूशन पढ़ा कर लौट रहे हैं
वे सब्जीमंडी से लौट रहे हैं
लम्बे डग भरते हुए
अँधेरे में देखते हुए अपना घर
वे लौटते हैं पैदल
अँधेरे में खड़ा वह ट्रक भी
उन्हें आते हुए देखता है
जिसमें सरिये लदे हुए हैं
अँधेरे में अपने नुकीले सिरे
उनकी ओर बढ़ाए हुए
अपने ज़ख्मी गले को रुमाल से दबाए
खून से लाल हुए कुर्ते को
देखते हुए कुछ ताज्जुब से
लौटते हैं वे
कुछ नहीं हुआ
यह बस ज़रा सा है ठीक हो जाएगा
कहते हुए मुस्कुराते हैं
एक दिन चिता से उतर कर
लौट आते हैं पैदल
अपनी तस्वीर में।

- आशुतोष दुबे

हाई लेवल जांच कमेटी तीन महीने में दे देगी रिपोर्ट

एविएशन मिनिस्टर ने कहा-हादसे की जांच पहले दिन से ही जारी

मरने वालों का आंकड़ा 275 पहुंचा, मलबे से एक और शव मिला

अहमदाबाद (एजेंसी)। अहमदाबाद में विमान हादसे पर शनिवार को सिविल एविएशन मिनिस्टर के राममोहन नायडू ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने बताया कि पहले दिन से हादसे की जांच जारी है। केंद्रीय गृह सचिव के नेतृत्व में जांच कमेटी गठित की गई है। जो 3 महीने में अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। इधर, विमान के मलबे से एक और शव बरामद हुआ है। बीजे मेडिकल कॉलेज हॉस्टल से जब मलबा हटाया जा रहा था, तब विमान की टेल (पिछले हिस्से) में फंसा हुआ शव दिखा। इसका पोस्टमॉर्टम हुआ है। ऐसा कहा जा रहा है कि यह शव एयर होस्टेस का हो सकता है। उधर, आज भी मारे गए

लोगों की डीएनए सैंपलिंग का काम जारी है। सिविल अस्पताल के बाहर परिजन की भीड़ है। यहां सुरक्षा के कड़े इंतजाम है। पोस्टमॉर्टम यूनिट के आसपास बाहरी लोगों की एंट्री बंद है। सिविल अस्पताल में अब तक 270 से ज्यादा शवों का पोस्टमॉर्टम हो चुका है। इसके अलावा, 230 लोगों की डीएनए सैंपलिंग की जा चुकी है। 8 शवों की शिनाख्त हो गई है। उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने कहा, पिछले दो दिन बहुत मुश्किल भरे रहे हैं। अहमदाबाद एयरपोर्ट के पास हुई दुर्घटना ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया। इस दुर्घटना में अपने प्रियजनों को खोने वाले सभी परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदना है।

- **हादसे वाले दिन क्या हुआ था, सरकार ने बताया-** वहीं, नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सचिव समीर कुमार सिन्हा ने कहा, 12 जून को दोपहर करीब 2 बजे हमें सूचना मिली कि अहमदाबाद से गैटविक लंदन जा रहा विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया है। हमें तुरंत एटीसी अहमदाबाद के जरिए इस बारे में विस्तृत जानकारी मिली। यह एआईसी 171 था और इसमें कुल 242 लोग सवार थे, जिसमें 230 यात्री, 2 पायलट और 10 क्रू मेंबर शामिल थे। इस विमान ने दोपहर 1.39 बजे उड़ान भरी और कुछ ही सेकंड में करीब 650 फीट की ऊंचाई पर पहुंचकर यह गिरने लगा, यानी इसकी ऊंचाई कम होने लगी।
- **एयरपोर्ट से दो किलोमीटर दूर दुर्घटनाग्रस्त हुआ विमान-** उन्होंने बताया, दोपहर 1.39 बजे पायलट ने अहमदाबाद एटीसी को सूचना दी कि यह मेडी है, यानी पूरी तरह से इमरजेंसी है। एटीसी के मुताबिक, जब उसने विमान से संपर्क करने की कोशिश की तो उसे कोई जवाब नहीं मिला। ठीक एक मिनट बाद यह विमान मेघानीनगर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जो एयरपोर्ट से करीब 2 किमी की दूरी पर स्थित है। विमान के कैप्टन सुमित सभरवाल थे और फर्स्ट ऑफीसर क्लाइव सुंदर थे।

कनाडा, साइप्रस के अलावा क्रोएशिया भी जाएंगे मोदी

पहली बार होगा किसी भारतीय पीएम का दौरा, शेड्यूल जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 15 से 19 जून 2025 तक तीन देशों (साइप्रस, कनाडा और क्रोएशिया) की महत्वपूर्ण यात्रा पर रहेंगे। विदेश मंत्रालय ने शनिवार को इसकी आधिकारिक घोषणा की। इस यात्रा के दौरान पीएम मोदी साइप्रस में द्विपक्षीय वार्ता करेंगे, कनाडा में जी-7 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेंगे और क्रोएशिया में नेताओं से मुलाकात करेंगे। यह यात्रा भारत के वैश्विक कूटनीतिक संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। प्रधानमंत्री मोदी 15 जून को साइप्रस की राजधानी निकोसिया पहुंचेंगे। यह दो दशकों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की साइप्रस की पहली यात्रा होगी। साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलाइड्स के निमंत्रण पर हो रही इस यात्रा में पीएम मोदी राष्ट्रपति के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। इसके अलावा, वे लिमासोल में व्यापारिक नेताओं को संबोधित करेंगे। विदेश मंत्रालय के अनुसार, यह यात्रा भारत और साइप्रस के बीच संबंधों को गहरा करने और भूमध्यसागरीय क्षेत्र तथा यूरोपीय संघ के साथ भारत की भागीदारी मजबूत करेगी।

भीषण गर्मी ने ढाया कहर, उबल रहे शहर

● राजस्थान में गर्मी का रेड अलर्ट, श्रीगंगानगर में पारा 49.4 डिग्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। मानसून के मुंबई-छत्तीसगढ़ बॉर्डर पर रुकने के कारण, दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर को छोड़कर सभी राज्यों में भीषण गर्मी पड़ रही है। शुक्रवार को राजस्थान के श्रीगंगानगर में पारा 49.4 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। लगातार छठे दिन श्रीगंगानगर देश में सबसे गर्म शहर रहा।

उधर, भीषण गर्मी के चलते उत्तर प्रदेश के सरकारी प्राइमरी स्कूलों में छुट्टियां 15 दिन बढ़ा दी गई हैं। अब स्कूल 30 जून तक बंद रहेंगे। पूर्वी राजस्थान, जम्मू संभाग, हरियाणा और मध्य प्रदेश में कुछ स्थानों पर लू चली। देश के 22 शहरों में पारा 44 डिग्री से ज्यादा रिकॉर्ड किया गया। मानसून के 25 जून तक उत्तर-पश्चिम भारत के राज्यों में पहुंचने की उम्मीद है। आईएमडी के मुताबिक 22-23 जून तक दिल्ली पहुंचने की संभावना है। दक्षिण-पश्चिम मानसून आमतौर पर 1 जून तक केरल में दस्तक देता है, 11 जून तक मुंबई पहुंचता है और 8 जुलाई तक पूरे देश को कवर कर लेता है।

अब सोमवार को लाड़ली बहनों के खाते में आएंगे पैसे

सीएम 1551.44 करोड़ करेंगे ट्रांसफर

भोपाल। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की जून माह की किस्त सोमवार को लाड़ली बहनों के खाते में डाली जाएगी। अहमदाबाद में हुई विमान दुर्घटना के चलते 13 जून को जबलपुर में होने वाले कार्यक्रम को स्थगित कर दिया गया था और इसी दिन राशि ट्रांसफर की जानी थी। अब सोमवार को यह राशि भेजी जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सोमवार 16 जून को जबलपुर जिले के बरगी में होने वाले कार्यक्रम में शामिल होंगे। यहां पर सीएम यादव मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना, संबल योजना और सिलेंडर रिफिलिंग योजना में हितग्राहियों के खातों में जून माह की राशि ट्रांसफर करेंगे।

जो अंतिम क्षण तक विद्यार्थी हैं, वही ला सकते हैं परिवर्तन

प्रशिक्षण वर्ग हमारे मन विचार को साफ करने की प्रक्रिया- शाह

अपने कार्य के आधार पर जिम्मेदारी मिलती है- सीएम यादव

तीन दिन में 14 अलग-अलग सत्रों में पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का मिलेगा मार्गदर्शन-बीडी शर्मा

भोपाल/पचमढ़ी। केन्द्रीय गृह व सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने पचमढ़ी में सांसद एवं विधायकों का 3 दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग का दीप प्रज्जवलित एवं महापुरूषों को पुष्पांजलि अर्पित कर शुभारंभ किया।

सत्र के प्रारंभ में अहमदाबाद में हुए हृदयविदारक विमान हादसे पर शोक व्यक्त किया गया। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने उद्घाटन सत्र में ''जनसंघ से भाजपा-1951 से 2025'' विषय पर सम्बोधित करते हुए कहा कि परिवर्तन वही ला सकते हैं, जो अंतिम क्षण तक विद्यार्थी रहते हैं, जिनमें सीखने की ललक होती है। आज पंचायत से लेकर पार्लियामेन्ट तक भाजपा की स्वीकारोक्ति देख सकते हैं। सुव्यवस्थित, शिक्षित, विकसित देश के लिए भाजपा सरकार जरूरी है। तीन साल में गंगानगर तक बहेगा सिन्धु जल, पाकिस्तान बून्द-बून्द के लिए तरसेगा। मध्यप्रदेश भाजपा की एक शानदार परंपरा रही है।

स्व. कुशाभाऊ ठाकरे अपने जीवन का क्षण-क्षण पार्टी को समर्पित किया है और स्वर्गीय राजमाता विजयाराजे सिंधिया एवं स्व. सुंदरलाल पटवा जी जैसे मनीषियों का इसे आशीर्वाद मिला है। हम सभी पार्टी के कार्यकर्ता हैं और पार्टी ने हमारी योग्यता तथा क्षमता के आधार पर हमें आगे बढ़ाया है, सांसद विधायक बनाया है। उदघाटन सत्र की प्रस्तावना भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने रखी। उदघाटन सत्र को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सम्बोधित किया। उद्घाटन सत्र के दौरान केन्द्रीय मंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान, श्री भूपेन्द्र यादव, श्री डीडी उइके, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह एवं प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा एवं श्री राजेन्द्र शुक्ल मंचासीन रहे। संचालन प्रदेश महामंत्री व विधायक श्री भगवानदास सबनानी ने किया।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने स्थापना की, पं. दीनदयाल जी ने विचार दिया- केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने कहा कि देश जब आजाद हुआ, उस समय कांग्रेस का शासन था और कांग्रेस पार्टी पर पूरी तरह पं. नेहरू हावी थे। उस समय नेहरू सरकार ने जो नीतियां बनाई, उनमें देश की मिट्टी की सुगंध नहीं थी। उनमें हमारी चिर पुरातन संस्कृति का कोई प्रतिघोष नहीं था। वो पाश्चात्य संस्कारों से प्रेरित थीं। उस समय कई नेता थे, जो इन नीतियों से सहमत नहीं थे। उन्हीं में से एक थे डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी जो नेहरू मंत्रिमंडल में उद्योग मंत्री थे। पं. नेहरू ने जब नेहरू-लियाकत पैक्ट के फलस्वरूप कश्मीर में धारा 370 लगाई, तो डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी जी ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। उन्हें देश में एक ऐसी राजनीतिक पार्टी की आवश्यकता महसूस हुई, जो देश के इतिहास, धर्म, परंपरा और संस्कृति से जुड़ी हुई हो।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 32 °c

न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 15 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

फादर्स डे

अम्बिका कुशवाहा अम्बी

आधुनिक समय में बदली है भारतीय पिता की भूमिका

हमारे समाज में माता-पिता की भूमिका को लंबे समय तक एक रूढ़िगत दायरे में देखा गया है। पिता को घर का मुखिया, आर्थिक आधार, और अनुशासक माना गया। भारतीय समाज में पिता को अक्सर वह व्यक्ति माना जाता था, जो परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए दिन-रात मेहनत करता है, लेकिन भावनात्मक रूप से दूरी बनाए रखता है। वही मां की जिम्मेदारी रसोई से लेकर परिवार की सेवा तक घर के अंदर सीमित रखा गया।

भारतीय संस्कृति में माताओं को पूजनीय माना गया, और उनकी मेहनत, त्याग, और बलिदान की गाथाएँ पीढ़ियों से गूँजती रही हैं। हालाँकि, आधुनिक समय में यह परिभाषा तेजी से बदल रही है। आज का पिता न केवल आर्थिक स्तंभ है, बल्कि भावनात्मक समर्थन, लैंगिक समानता का समर्थक, और घरेलू जिम्मेदारियों में सक्रिय भागीदार भी है। वही महिलाएं भी घर से बाहर समाज, राजनीति एवं आर्थिक क्षेत्र में भागीदार बन रही है। फिर भी, इस बदलाव के बीच पिता की उपेक्षा एक हकीकत है।

आधुनिक पिता अब केवल परिवार का आर्थिक रक्षक नहीं है। वह बच्चों का दोस्त, मार्गदर्शक, और भावनात्मक सहारा बन रहा है। वह बच्चों के साथ समय बिताता है, उनकी भावनाओं को समझता है, और उनकी रुचियों को प्रोत्साहित करता है। पिता अब लैंगिक समानता के प्रबल समर्थक भी हैं। वे बेटियों को खेल, विज्ञान, या तकनीक जैसे क्षेत्रों में प्रोत्साहित करते हैं और बेटों को घर के कामों में भाग लेना सिखाते हैं। साथ ही, वे घरेलू जिम्मेदारियों में सक्रिय हैं– खाना बनाने से लेकर बच्चों को स्कूल छोड़ने तक। एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में 62त्न शहरी पिता घर के कामों में नियमित रूप से योगदान करते हैं। यह बदलाव न केवल परिवारों में समानता को बढ़ावा देता है, बल्कि समाज में भी सकारात्मक प्रभाव डालता है।

हालाँकि पिता की भूमिका में यह सकारात्मक बदलाव आया है, लेकिन उनकी मेहनत और योगदान को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है। भारतीय संस्कृति में माताओं के त्याग और बलिदान की कहानियाँ तो खूब सुनाई जाती हैं, लेकिन पिता के संघर्ष और समर्पण को उतना महत्व नहीं दिया जाता। पिता को परिवार का ÷मजबूत आधार÷ मानकर उनकी भावनात्मक और मानसिक जरूरतों को अनदेखा कर दिया जाता है। समाज की यह अपेक्षा कि ÷पिता को हमेशा मजबूत रहना चाहिए÷ उनके लिए एक अदृश्य बोझ है। समाज में अवधारणा बनी हुई है कि, जो महिलाएं घर परिवार संभालती है, कड़ी मेहनत सिर्फ वो करती है बाकी

मर्द जो कमाकर घर आता है, उनकी मेहनत कम होती है।

भारतीय पिता अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाते हैं। ÷मर्द को दर्द नहीं होता÷ जैसी रूढ़ियाँ उन्हें अपनी कमजोरियों या तनाव को छिपाने के लिए मजबूर करती हैं। आधुनिक पिता से अपेक्षा की जाती है कि वह न केवल आर्थिक जिम्मेदारियाँ निभाए, बल्कि भावनात्मक रूप से उपलब्ध हो, घर के कामों में मदद करे, और बच्चों की परवरिश में सक्रिय रहे। यह तभी संभव है, जब महिलाएं भी आर्थिक जिम्मेदारी में बराबरी की जिम्मेदार और हिस्सेदार बने।

माताओं की तुलना में पिताओं की मेहनत को कम सराहा जाता है। माँ का त्याग और प्रेम तो कविताओं, गीतों, और सिनेमा में अमर है, लेकिन पिता के संघर्ष को अक्सर सामान्य मान लिया जाता है। फादर डे जैसे अवसर भी मदर डे की तुलना में कम उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। यह असंतुलन पिताओं को यह महसूस कराता है कि उनके योगदान को पर्याप्त महत्व नहीं मिलता।

भारतीय पिता को कानूनी एवं सामाजिक भेदभाव का भी सामना करना पड़ता है। तलाक या पारिवारिक विवादों में पिताओं को अक्सर बच्चों की कस्टडी या भावनात्मक रिश्ते में कम प्राथमिकता दी जाती है। भारतीय कानून और सामाजिक धारणाएँ माँ को प्राथमिक देखभालकर्ता मानती हैं, जिससे पिता अपने बच्चों से दूर हो सकते हैं। यह उनके लिए भावनात्मक और मानसिक रूप से कष्टकारी होता है।

पिता की उपेक्षा का असर न केवल उन पर, बल्कि परिवार और समाज पर भी पड़ता है। जब पिता की भावनात्मक जरूरतों को अनदेखा किया जाता है, तो वे तनाव, अवसाद, या अलगाव का शिकार हो सकते हैं। इससे परिवार में संवाद की कमी और रिश्तों में तनाव बढ़ सकता है। बच्चे भी पिता के साथ गहरे भावनात्मक रिश्ते से वंचित रह सकते हैं, जो उनके व्यक्तित्व विकास पर असर डालता है। समाज में भी, पिता की अनदेखी लैंगिक रूढ़ियों को और मजबूत करती है, जिससे पुरुषों के लिए अपनी भावनाएँ व्यक्त करना और मुश्किल हो जाता है। फिर भी, समाज में अपनी जगह बनाने का सबसे मजबूत पक्ष पिता होता है।

आज का पिता न केवल परिवार की नींव है, बल्कि भावनात्मक सहारा, लैंगिक समानता का समर्थक, और समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। हम पिताओं के योगदान को न केवल सराहें, बल्कि उनकी भावनात्मक और मानसिक जरूरतों को भी समझें। एक ऐसा समाज बनाएँ, जहाँ पिता को न केवल ÷मजबूत÷ बल्कि ÷संवेदनशील÷ और ÷सम्मान÷ के रूप में भी देखा जाए। क्योंकि पिता भी उतने ही पूजनीय हैं, जितना कि माँ।

फादर्स डे

पिता: नाविक है पतवार के

नलिन खोईवाल

घर में होते जब पिता , गम हो जाते दूर ।
होती सुख की बारिशें, तर हो जाते पूर ।।
खार भरे सब रास्तें , दुनिया बोती शूल ।
सूरत है भगवान की, हरदम खिलते फूल ।।

प्यार भरी इस राह में, कितनी उड़ती धूल।
पापा मुझसे क्यों खफा ,क्या हो गई है भूल।।
पापा धूरी हैं प्रेम की , रेशम की है डोर ।
पोथी हैं वो ज्ञान की , सागर का है छोर ।।

घर का अनुशासन पिता , चेहरे की मुस्कान ।
सब कुछ हैं अपना यहां , उनका ही वरदान ।।
उम्मीदों का है गगन , जीवन का विश्वास ।
मुश्किल के इस दौर में, जीने की है आस ।।

इनसे सब त्योहार है,इनसे हर दिन खास ।
अपना सब कुछ त्याग कर,पूरी करते आस ।।
तम भागे हैं दूर ही, हर सिम्त हो उजास ।
दूर करें हर दर्द को , रहें खुद क्यों उदास ।।

देखा ना मैंने कहीं, पिता सा भी अमीर ।
बच्चों के सुख के लिए,लूटा दें जागीर ।।
होते जब मझधार में,किश्ती खेते पार ।
नाविक है पतवार के,हमको देते तार ।।

होने से उनके बनीं, मेरी दुनिया खास ।
उनसे ही तो फूल में, है खुशबू का वास ।।
सपनों की अपनी जमीं, हसरत का आकाश ।
जीवन का भूगोल है, दुनिया का इतिहास ।।

अधर खिला मुस्कान वो,पी जाते हैं पीर ।
सबकी चाहत साधते, खुद धरते हैं धीर ।।
जादू है वरदान है , ईश्वर का है रूप ।
बन जाते हैं छाँव वो , बारिश हो या धूप ।।

हम सबका अभिमान है, घर भर की है शान ।
दिल की हैं वो धड़कनें, जिसमें बसती जान ।।
सुख में दुख में साथ है, फिर क्यों रहो उदास ।
याद करो उनको जहाँ , होते हरदम पास ।।

नीट यूजी 2025 में राजस्थान के महेश बने टॉपर

● एमपी के उत्कर्ष की दूसरी रैंक,टॉप 10 में सिर्फ एक लड़की ● कहा-यूपीएससी करना चाहता था,टीचर ने नीट की सलाह दी

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने नीट यूजी 2025 का रिजल्ट शनिवार को जारी कर दिया। 20.08 लाख स्टूडेंट्स बैठे थे। इनमें से 112.3 लाख स्टूडेंट्स क्वालिफाई हुए हैं। राजस्थान के हनुमानगढ़ के महेश केसवानी ने टॉप किया है। उन्हें 720 में से 686 मार्क्स मिले हैं। ऑल इंडिया रैंक 1 हासिल करने वाले हनुमानगढ़ के महेश केसवानी ने बताया कि 10वीं के बाद वो आर्ट्स लेकर यूपीएससी की तैयारी करना चाहता था। मगर एक टीचर के समझाने से उसने साइंस ली और नीट की तैयारी करने लगा।

एमपी के इंदौर के उत्कर्ष अवधिया की सेकेंड और महाराष्ट्र के कृषांग जोशी की थर्ड रैंक आई

है। टॉप 10 में केवल 1 लड़की है। दिल्ली की अविका अग्रवाल को फीमेल कैटेगरी में पहला स्थान मिला है। कैंडिडेट्स एनटीए की ऑफिशियल वेबसाइट पर लॉग इन करके नीट रिजल्ट 2025 डाउनलोड कर सकते हैं। 2024 में अनारक्षित कैटेगरी के लिए कट-ऑफ स्कोर 162 था, जो इस साल घटकर 144 हो गया है। बीते साल एआईआर 1 पर 17 स्टूडेंट्स थे। इन सभी ने 720 में से 720 स्कोर किए थे। इस साल मुश्किल पेपर की वजह से टॉपर का स्कोर और कट-ऑफ नीचे आ गया है। इंदौर के सेंटर्स पर नीट यूजी परीक्षा देने वाले 75 कैंडिडेट्स ने शिकायत की थी कि 4 मई को आंधी-तूफान और बिजली चली जाने की वजह से उनका पेपर बिगड़ गया। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर बेंच में दायर याचिकाओं पर 9 जून को सुनवाई हुई। कोर्ट ने कहा है कि एनटीए इन 75 कैंडिडेट्स को छोड़कर बाकी सभी का रिजल्ट जारी कर सकता है। इन 75 छात्रों का रिजल्ट बाद में जारी किया जाएगा। इसके बाद नीट यूजी 2025 की फाइनल मेरिट बनेगा। 22.7 लाख से ज्यादा कैंडिडेट्स ने नीट यूजी के लिए रजिस्ट्रेशन किया था। इसमें 13.76 लाख लड़कियों और 9.98 लाख लड़कों ने रजिस्ट्रेशन किया है।

साउथ अफ्रीका पहली बार बना वर्ल्ड टेस्ट चैंपियन

● फाइनल में ऑस्ट्रेलिया को 5 विकेट से हराया, 27 साल बाद डब्ल्यूटीसी टूर्नामेंट जीता

लंदन (एजेंसी)। साउथ अफ्रीका ने वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) जीत ली है। टीम ने शनिवार को डिफेंडिंग चैंपियन ऑस्ट्रेलिया को 5 विकेट से हरा दिया। साउथ अफ्रीका क्रिकेट के किसी भी फॉर्मेट में पहली बार वर्ल्ड चैंपियन बना है। इतना ही नहीं, टीम ने 27 साल के बाद कोई आईसीसी टूर्नामेंट जीता है। टीम ने 1998 में चैंपियंस ट्रॉफी जीती थी। लंदन के द लॉर्ड्स स्टेडियम में मैच के चौथे दिन लंच से पहले साउथ अफ्रीका ने 282 रन का टारगेट 5 विकेट खोकर हासिल कर लिया। ऐडन मार्करम ने 136 रन बनाए, जबकि टेम्बा बावुमा ने 66 रन की पारी खेली। काइल वेरियन ने 84वें ओवर में मिचेल स्टार्क के खिलाफ सिंगल लिया और अपनी टीम को ऐतिहासिक जीत दिला दी। वे 4 रन बनाकर डेविड बेडिंघम (21 रन) के साथ नॉटआउट रहे। ऐडन मार्करम प्लेयर ऑफ द मैच रहे। ऑस्ट्रेलिया ने दूसरी पारी में 218 रन बनाते हुए साउथ अफ्रीका को 282 रन का टारगेट दिया था।

विदेश में प्रकाशित सबसे पुराने हिंदी दैनिक को खोज निकाला डॉ. कर्नावट ने

भोपाल।हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में एक और महत्वपूर्ण पन्ना जुड़ गया है। हाल ही में विदेश में हिंदी मीडिया के अध्येता और भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी सम्मान से अलंकृत डॉ. जवाहर कर्णावट ने दक्षिण अमेरिका के देश त्रिनिदाद-टोबेगो की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन से सन 1898 में प्रकाशित हिंदी अखबार 'हिंदुस्तानी कोहिनूर का अखबार 'खोज निकाला है जो अब तक विदेश से प्रकाशित हुए हिंदी अखबारों में उपलब्ध सबसे पुराना अखबार है। डॉ. कर्नावट को नेशनल काउंसिल आफ इंडियन कल्चर ,त्रिनिदाद टोबेगो द्वारा आयोजित 'ग्लोबल इंडियन डायसपोरा कॉन्फ्रेंस 2025 'में व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया था। डॉ. कर्नावट ने पोर्ट आफ स्पेन के राष्ट्रीय अभिलेखागार से इस पत्र की अनेक प्रतियां प्राप्त की है। भारत से लगभग 14000 किलोमीटर दूर स्थित पोर्ट ऑफ स्पेन से प्रकाशित होने वाले इस दैनिक अखबार में उन प्रवासी भारतीयों के लिए विशेष सामग्री होती थी जिनका आगमन हजारों की संख्या में 30 मई 1845 से प्रारंभ हो गया था ।यह चार पृष्ठीय अखबार हाथ से लिखकर तैयार किया जाता था और फिर उसे प्रिंट भी करवाया जाता था। इसमें त्रिनिदाद- टोबेगो के विभिन्न क्षेत्रों की खबरों के अलावा भारत के विभिन्न प्रांतो की खबरें भी प्रकाशित होती थी। 28 नवंबर 1898 के अंक में मुंबई समाचार, उत्तर पश्चिमी और अवध तथा पंजाब समाचार प्रकाशित हुए हैं। इस अखबार में अनेक रोचक विज्ञापन भी प्रकाशित होते थे ।हिंदी पत्रकारिता जगत के लिए यह समाचार पत्र ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में है। उल्लेखनीय है कि डॉ. कर्नावट द्वारा 27 देशों में 120 वर्षों की हिंदी पत्रकारिता पर लिखित पुस्तक अत्यंत लोकप्रिय हुई है और उसकी सामग्री को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स 2023 में भी स्थान मिला है।

ईरान ने और मिसाइलें दागी तो तेहरान जला देंगे

● इजराइल के रक्षा मंत्री की धमकी,24 घंटे में 138 की मौत

तेलअवीव (एजेंसी)। इजराइल और ईरान के बीच टकराव में पिछले 24 घंटे में अब तक 138 लोग मारे गए हैं। इजराइल ने शुक्रवार रात 10.30 बजे दूसरी बार ईरान के परमाणु ठिकानों पर फाइटर जेट्स हमले किए। इस हमले में 60 लोगों की मौत हो गई। 350 से ज्यादा लोग घायल हुए। इससे पहले शुक्रवार सुबह 5.30 बजे हुए हमले में 78 लोग मारे गए थे। इनमें 6 परमाणु वैज्ञानिक और 20 से ज्यादा ईरानी कमांडर्स की मौत हुई। ईरान ने शुक्रवार रात हमले के तुरंत बाद पलटवार किया और ईजराइल की ओर 150 से ज्यादा

मिसाइलें दागीं। 6 मिसाइलें राजधानी तेल अवीव में गिरीं, जिसमें 3 लोगों की मौत हो गई। 90 से ज्यादा लोग घायल हैं। ईरान ने दावा किया कि मिसाइल इजराइली रक्षा मंत्रालय पर भी गिरी। हालांकि अभी तक इजराइल ने इसकी पुष्टि नहीं की है। इजराइली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू को सुरक्षित ठिकाने पर शिफ्ट कर दिया गया था। रक्षा मंत्री ने कहा- ईरान ने आगे मिसाइलें दागीं तो तेहरान जला देंगे।

● यूएन में चीन के राजदूत बोले- हद पार कर रहा इजराइल- संयुक्त राष्ट्र में चीन के राजदूत फू कांग ने इजराइल के ईरान पर हमले की निंदा की। उन्होंने कहा कि यह ईरान की संप्रभुता का उल्लंघन है। ईरान के न्यूक्लियर फैसिलिटी पर हमला हुआ, इसे लेकर हम चिंतित हैं। इजराइल ने एक बार फिर से हद पार की है। ईरान की सरकारी टीवी चैनल तस्मीन न्यूज के मुताबिक इजराइली हमले में 2 और बड़े ईरानी जनरल को मारे जाने की पुष्टि हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक सेना के खुफिया विभाग के डिप्टी चीफ जनरल गुलाम रेजा मेहराबी और ऑपरेशन डिप्टी चीफ जनरल मेहदी रब्बानी मारे गए हैं। इससे पहले ईरान ने माना था कि उनके 4 बड़े सैन्य अफसरों की मौत हो चुकी है।

पहले सिखाते हैं भाषा-बोली, फिर बनाते हैं 'भारतीय'

वेस्ट बंगाल में अवैध घुसपैठ के बड़े नेटवर्क का भंडाफोड़

कोलकाता (एजेंसी)। म्यांमार से बांग्लादेश के रास्ते भारत आने वाले घुसपैठियों को एजेंटों के जरिये सुनियोजित तरीके से भारत में बसाया जा रहा है। रोहिंग्य को भारत में दाखिल कराने के लिए गुवाहाटी और बंगाल से एजेंटों का नेटवर्क संचालित है। ये बांग्लादेश से पारगमन समझौते की आड़ में रोहिंग्या को भारत में घुसपैठ करने में मदद करते हैं। एक बार जब रोहिंग्या देश में आ जाते हैं, तो उन्हें यहां अन्य हिस्सों में ले जाने से पहले बंगाल के मालव, नादिया, उत्तर और दक्षिण दिनाजपुर जिलों को अस्थायी बस्तियों में रोका जाता। इन बस्तियों में उन्हें उर्दू और हिंदी बोलना सीखते हैं। उसके बाद जहां उनको भेजा जाता है, वहां के स्थानीय मुस्लिम संगठनों के जरिए रोहिंग्या और बांग्लादेशियों के भारतीय दस्तावेज

बनवाए जाते हैं। यह सच्चाई 20 मई को कानपुर में पकड़े गए रोहिंग्या साहिल से पूछताछ के बाद सामने आई है। वह आठ साल पहले परिवार के 14 सदस्यों के साथ म्यांमार से बांग्लादेश पहुंचा, वहां से बंगाल के रास्ते दिल्ली पहुंच कर वहां मस्जिदों में रहने के बाद नेटवर्क के जरिये उन्नाव के शुक्लागंज के शक्तिनगर गंगा कटरी आ बसा। स्थानीय नेटवर्क में शामिल पूर्व सभासद शहजादे की मदद से आधार और ड्राइविंग लाइसेंस के साथ निवास प्रमाणपत्र तक बनवा लिए। खहिल पत्नी अनीदा, भाई अनवर, बहनोई जुनैद के अलावा चार बच्चों के साथ रह रहा था।

भारत ने किया कमाल, ट्रंप की इच्छा रह गई है अधूरी!

● राष्ट्रपति की धमकी के बावजूद भारत में आईफोन्स का प्रोडक्शन बढ़ा

वाशिंगटन (एजेंसी)। ऐसा लगता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की वह इच्छा अधूरी ही रह गई है, जिसमें वह चाहते थे कि अमेरिका में बिकने वाले आईफोन भारत में असेंबल ना किए जाएं। लेकिन आंकड़े कुछ और ही गवाही दे रहे हैं। रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में आईफोन्स की असेंबलिंग करने वाली प्रमुख कंपनी फॉक्सकॉन ने आईफोन्स को अमेरिका में भेजा है।

तीन महिला नक्सलियों का एनकाउंटर

बालाघाट के जंगल में मुठभेड़, बढ़ सकती है मारे गए नक्सलियों की संख्या

बालाघाट (नप्र)। बालाघाट में पुलिस ने एक मुठभेड़ में तीन महिला नक्सलियों को मार गिराया है। मुठभेड़ शनिवार दोपहर में बिठली पुलिस चौकी क्षेत्र के पचामा दादर के जंगल में हुई है। हॉक फोर्स और जिला पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में यह सफलता मिली। एसपी आदित्य मिश्रा ने मुठभेड़ की पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि

अभी भी ऑपरेशन जारी है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, मारे गए नक्सलियों की संख्या बढ़ सकती है। पुलिस को पचामा दादर के जंगल में नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना मिली थी। इसके बाद फोर्स यहां भेजी गई। मुठभेड़ में मारी गई तीनों महिला नक्सलियों के शव बरामद कर लिए गए हैं।पुलिस, हॉक फोर्स, सीआरपीएफ और कोबरा टीम जंगल में सर्च ऑपरेशन में जुटी है।

फरवरी में 4 महिला नक्सली मारी गई थीं- इससे पहले 19 फरवरी को भी बालाघाट पुलिस को बड़ी सफलता मिली थी। कान्हा के वनक्षेत्र सूपखार में रौंदा फारेस्ट कैंप के पास हुई मुठभेड़ में 4 महिला नक्सली मारी गई थीं। इनमें आशा, शीला, रंजीता और लख्खे मरावी शामिल थीं। इन पर कुल 62 लाख रुपए का इनाम था। ये 2015-16 से नक्सली गतिविधियों में सक्रिय थीं।

महिला ने फांसी लगाकर किया सुसाइड

भाई बोला- पति प्रताड़ित करता था, सुसाइड से पहले बहन से झगड़ा किया था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के अयोध्या नगर में रहने वाली एक महिला ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। मायके वालों का आरोप है कि पति महिला को प्रताड़ित करता था। इसी कारण उसने जान दी है। वहीं पति ने बताया कि पत्नी गुस्से की तेज थी। बच्चे के मस्ती करने पर उसे तेज धूप में सजा के तौर पर खड़ा कर दिया था। इसी बात को लेकर पत्नी को सामान्य तौर पर फटकार लगाई थी। इससे नाराज होकर उसने जान दी है। इधर पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

कृति सिंह (28) पत्नी दीपक सिंह अयोध्या बाइपास की एक कॉलोनी में रहती हैं। 12 जून को उन्होंने घर में स्थित एक कमरे में पंखे के सहारे दुपट?टे का फंदा बनाकर फांसी लगा ली। इस समय पति घर में मौजूद थे, उन्होंने तत्काल पत्नी को फंदे से उतारकर अस्पताल पहुंचाया। जहां इलाज के दौरान शनिवार की तड़के सुबह महिला ने दम तोड़ दिया। शनिवार की दोपहर को पीएम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है।

भाई बोला सुसाइड से पहले आखिरी बार बात की- मृतका के भाई राकेश सिंह ने बताया कि जीजा एक शराब कंपनी में काम करता है। गुस्से का बेहद तेज है और मारता पीटता रहता था। सुसाइड से पहले बहन ने उन्हें आखिरी बार कॉल किया था। तब उसने पति से विवाद की बात कही थी। इसके बाद उसकी मौत की सूचना मिली।

अविवाहित बताकर शादीशुदा युवक ने युवती से किया रेप

भोपाल (नप्र)। भोपाल में युवती के साथ शादी करने का झांसा देकर शादीशुदा युवक करीब दो साल से उसके साथ रेप कर रहा था। पहली बार आरोपी ने एमपी नगर जोन टू के एक होटल में पीड़िता के साथ ज्यादती की थी। अब आरोपी ने शादी करने से इनकार कर दिया तब पीड़िता ने एफआईआर दर्ज कराई है। पुलिस ने इस मामले में आरोपी युवक के खिलाफ केस दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है।

महिला थाना प्रभारी अंजना दुबे के मुताबिक 26 वर्षीय युवती प्रायवेट काम करती है। करीब दो साल पहले पीड़िता की पहचान सुरेंद्र सिंह नामक युवक से हुई थी। इस दौरान आरोपी युवक ने उससे शादी करने का झांसा दिया और होटल में ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म किया।

एमपी में आंधी-बारिश

उज्जैन में रेलवे ट्रैक पर पेड़ गिरा, कई ट्रेनें प्रभावित

नीमच में टीनशेड उड़ा, भोपाल, जबलपुर, सागर, शाजापुर में भी पानी गिरा

भोपाल (नप्र)। एमपी में मानसून की एंट्री बस आज-कल में होने वाली है। इससे पहले प्रदेश में आंधी-बारिश का दौर जारी है। शनिवार को भी उज्जैन, जबलपुर, सागर, भोपाल,नीमच और शाजापुर जिले में तेज हवाओं के साथ बारिश हुई है। नीमच में आंधी से एक मकान पर टीनशेड उड़ गया।

आंधी के कारण उज्जैन के पास बेरछा और पीर अमरूद के बीच रेलवे ट्रैक पर पेड़ गिर गया। जिससे कई ट्रेन प्रभावित हुई है। भोपाल से चलकर दाहोद जाने वाली 19340 गाड़ी को बीच में रोकना पड़ा। करीब एक घंटे से गाड़ी रुकी है।

जबलपुर में शनिवार दोपहर अचानक मौसम बदलाव बदल गया। शहर के रांझी, गोपालपुर, जीसीएफ क्षेत्र में झमाझम बारिश हुई। करीब 15 मिनट तक हुई बारिश से लोगों को गर्मी से काफी हद तक राहत मिली है।

मौसम विभाग का इन जिलों में अलर्ट- मौसम विभाग ने शनिवार को भोपाल, इंदौर, उज्जैन, जबलपुर, आगर-मालवा, धार, बड़वानी, खरगोन, राजगढ़, शाजापुर, देवास, खंडवा, बुरहानपुर, हरदा, सीहोर, विदिशा, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, सागर, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, दमोह, पन्ना, सतना, मऊगंज, मैहर, कटनी, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, डिंडौरी, मंडला, बालाघाट में भी तेज आंधी, गरज-चमक और हल्की बारिश होने की संभावना है।

एक-दो दिन में होगी मानसून की एंट्री- दक्षिण-पश्चिम मानसून ने फिर से रफ्तार पकड़ी है। ऐसे में उम्मीद है कि अगले 2 दिन यानी, 15-16 जून को मानसून मध्यप्रदेश में प्रवेश कर लेना।

बिजली गिरने से 2 की मौत, कई पेड़ उखड़े, ट्रैक पर ट्रेनें थमी

इससे पहले शुक्रवार को प्रदेश के कई जिलों में तेज आंधी और बारिश का दौर रहा। शिवपुरी के ककरवाया गांव के पास भूसा से गट्ठा बनाने वाली दो फैक्ट्री को भारी नुकसान पहुंचा। आंधी में दोनों फैक्ट्रियों के जमीन में गढ़े पिलर और शेड उखड़कर हवा में उड़ गए। जिससे शेड के नीचे रखा भूसा और भूसे से बनी ब्रिक बारिश में धुल गई। गुना में तेज आंधी चली। शिवपुरी में धूलभरी आंधी चलने के साथ बारिश हुई। कोलारस में तेज पानी गिरा। खंडवा में भीषण गर्मी के बीच तेज बारिश का दौर रहा। मुरैना में तेज आंधी से कई पेड़ उखड़ गए और झोपड़ियों को नुकसान पहुंचा। रतलाम रेल मंडल के गौतमपुरा बड़नगर रेलवे ट्रैक के बीच आंधी-तूफान के साथ हुई तेज बारिश से पेड़ ट्रैक पर आ गिरा। इससे महू से रतलाम आने वाली पैसेंजर ट्रेन गौतमपुरा में खड़ी हो गई। रतलाम के मोयाखेड़ा में बिजली गिरने से एक 15 वर्षीय बालिका और तंबोलिया में एक युवती की मौत हो गई। एक अन्य युवती घायल हो गई। गुना में एक इंच से ज्यादा पानी गिरा। आलोट में ग्राम जोयन में महिला श्यामू बाई पर पेड़ गिर गया। जिससे उसकी की मौत हो गई। वहीं ग्वालियर के डबरा के पिछोर थाना क्षेत्र के पहाड़ी गांव में शुक्रवार शाम को आसमानी बिजली गिरने से एक 15 वर्षीय छात्रा की मौत हो गई।

नीट यूजी-2025 में इंदौर के उत्कर्ष की सेकंड रैंक

टॉप 100 में एमपी के 4 स्टूडेंट, एमपी से 60,346 ने क्वालिफाई किया

भोपाल, इंदौर, उज्जैन (नप्र)। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने शनिवार को नीट यूजी (नीट यूजी 2025) परीक्षा का रिजल्ट जारी कर दिया है। इंदौर के उत्कर्ष अवधिया की 99.9 पर्सेंटाइल के साथ ऑल इंडिया सेकेंड रैंक आई है। देशभर के टॉप 100 में एमपी के 4 स्टूडेंट हैं। अगम जैन ने 45वीं, अनुभव पांडे ने 79वीं और मोहित भारती ने 82वीं रैंक हासिल की है। एमपी के 60,346 ने स्टूडेंट्स ने एग्जाम क्वालिफाई किया है। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर बेंच ने याचिका दायर करने वाले 75 उम्मीदवारों को छोड़कर बाकी सभी के नीट यूजी परीक्षा 2025 के नतीजे घोषित करने के निर्देश दिए हैं।

नीट यूजी देश की सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा है, इसमें करीब 20 लाख छात्र एमबीबीएस और बीडीएस सीटों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। मेडिकल प्रवेश परीक्षा 4 मई को आयोजित की गई थी। रिजल्ट जारी होने से वेबसाइट पर भारी ट्रैफिक है। ऐसे में सर्वर डाउन या वेबसाइट स्लो होने पर घबराएं नहीं।

टॉप 100 में एमपी 10वें स्थान पर, दिल्ली सबसे आगे- नीट यू 2025 के नतीजों में मध्यप्रदेश देश में 10वें स्थान पर रहा, जिसमें प्रदेश से केवल 4 ही उम्मीदवार जगह बना पाए। यह आंकड़ा निराशाजनक माना जा रहा है। वहीं, दिल्ली ने सबसे शानदार प्रदर्शन करते हुए टॉप 100 में 17 उम्मीदवारों के साथ पहला स्थान

हासिल किया। राजस्थान 14 उम्मीदवारों के साथ दूसरे पायदान पर रहा। महाराष्ट्र ने 11 उम्मीदवारों के साथ तीसरा स्थान प्राप्त किया। टॉप 100 में कुल 15 राज्यों के उम्मीदवारों ने ही अपनी जगह बनाई।

प्रदेश में कुल एमबीबीएस की 4938 सीटें- मध्यप्रदेश में एमबीबीएस की कुल सीटों की संख्या 4938 है। इनमें से 17 सरकारी मेडिकल कॉलेजों में 2488 सीटें और 13 निजी मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस की 2450 सीटें हैं। काउंसलिंग में एमबीबीएस के साथ बीडीएस में भी दाखिला दिया जाएगा। प्रदेश में 13 निजी डेंटल कॉलेज हैं जिसमें कुल बीडीएस की कुल 1220 सीटें हैं।

टॉप 100 में एमपी 10वें स्थान पर, दिल्ली सबसे आगे- नीट यूजी 2025 के नतीजों में मध्यप्रदेश देश में 10वें स्थान पर रहा, जिसमें प्रदेश से केवल 4 ही उम्मीदवार जगह बना पाए। यह आंकड़ा निराशाजनक माना जा रहा है। वहीं, दिल्ली ने सबसे शानदार प्रदर्शन करते हुए टॉप 100 में 17 उम्मीदवारों के साथ पहला स्थान हासिल किया। राजस्थान 14 उम्मीदवारों के साथ दूसरे पायदान पर रहा। महाराष्ट्र ने 11 उम्मीदवारों के साथ तीसरा स्थान प्राप्त किया। टॉप 100 में कुल 15 राज्यों के उम्मीदवारों ने ही अपनी जगह बनाई।

मुरैना के अंबाह के रहने वाले अनुराग तोमर पहले प्रयास में ही नीट में सफलता हासिल की है। अनुराग ने 720 में से 529 अंक हासिल किए हैं। उन्होंने बताया कि राजाना करीब 15 घंटे पढ़ाई की। इसके लिए सुबह 6 बजे उठते थे। दोपहर 2 बजे के 2 घंटे सोते थे। फिर शाम 4 बजे से रात 11 बजे तक पढ़ाई करते थे। अनुराग के पिता किसान हैं।

एमपी में समर्थन मूल्य पर मूंग-उड़द खरीदेगी सरकार

19 जून से शुरू होगा पंजीयन, सीएम ने कहा- केंद्र सरकार को भेजा प्रस्ताव

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में सरकार किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर मूंग और उड़द की खरीदी करेगी। इसके लिए 19 जून से पंजीयन शुरू होगा। सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि इस संबंध में मेरी केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान से चर्चा हुई है। राज्य सरकार की ओर से केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजा गया है।

सीएम यादव ने ट्वीट के जरिए इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि जो किसान उड़द और मूंग का उत्पादन करते हैं। वे इसके लिए पंजीयन कराएं ताकि सरकार इसकी खरीदी कर सके और उन्हें उनकी उपज का उचित दाम दिलाया जा सके।

बता दें कि इस साल सरकार ने मूंग का न्यूनतम समर्थन मूल्य 8768 रुपए तय किया है, जबकि खुले बाजार में भाव 5000 से 5500 रुपए प्रति क्विंटल पर

आ गए हैं। किसानों के विरोध की जानकारी मिलने के बाद गुरुवार को सीएम यादव ने कहा था कि वे जल्द ही केंद्रीय कृषि मंत्री से बात करेंगे और किसानों के हित में फैसला लेंगे।

किसानों ने दी थी आंदोलन की चेतावनी- राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ शिवकुमार शर्मा 'कक्काजी ने कहा था कि समर्थन मूल्य पर प्रदेश में मूंग की खरीदी नहीं होने से किसान चिंतित और असमंजस की स्थिति में है। सरकार को अपना रुख स्पष्ट करना चाहिए। सरकारी खरीदी नहीं होने से किसानों को मजबूरन अपनी फसल मंडियों में बेचनी पड़ रही है, जिससे उन्हें काफी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। हम तीन दिन तक सरकार के रुख का इंतजार करेंगे, इसके बाद प्रदेशव्यापी आंदोलन शुरू किया जाएगा।

किसानों को कम दाम पर बेचना पड़ रही थी फसल

मूंग की बिक्री को लेकर इस समय प्रदेश के किसानों में काफी नाराजगी देखी जा रही है। कई जगह किसान प्रदर्शन, नारेबाजी और जल सत्याग्रह कर अपना विरोध जता रहे हैं। इसका कारण मूंग की सरकारी खरीदी राज्य में नहीं होना है, जिससे किसानों को समर्थन मूल्य से करीब-करीब 3000 रुपए क्विंटल के नीचे भाव पर कृषि उपज मंडियों में बेचना पड़ रहा है। किसानों का कहना है, उन्हें प्रति एकड़ 7 से 8 हजार रुपए क्विंटल का खर्चा आ रहा है जबकि मंडियों में दाम काफी घटाकर बोले जा रहे हैं। खुले बाजार में भाव 5000 से 5500 रुपए प्रति क्विंटल पर आ गए हैं। बीते वर्ष खुले बाजार में 8000 रुपए क्विंटल से ऊपर के भाव मिले थे।

पानी की बौछार से कांग्रेसियों को खदेड़ा

जबलपुर में प्रदर्शनकारी गिरफ्तार, फ्लाईओवर ब्रिज का उद्घाटन करने पहुंचे थे

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में फ्लाई ओवर ब्रिज का लोकार्पण करने पहुंचे कांग्रेस कार्यकर्ताओं को पुलिस ने पानी की बौछार कर खदेड़ दिया। इसके बाद कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी शुरू कर दी। इसके विरोध में कार्यकर्ताओं ने वहां जमकर नारेबाजी की।

दरअसल, कांग्रेसियों ने सोमवार को कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर 4 दिन के भीतर फ्लाई ओवर ब्रिज के लोकार्पण की मांग की थी। कहा था कि करीब एक हजार करोड़ रुपए की लागत से प्रदेश का सबसे लंबे फ्लाईओवर ब्रिज बनकर तैयार हो चुका। मार्च माह में लोकार्पण होना था, लेकिन जून आ गया।

मंत्री राकेश सिंह और जबलपुर के सांसद आशीष दुबे के बीच आपसी खींचतान चल रही है। श्रेय लेने की राजनीति के कारण अब तक इस फ्लाईओवर का विधिवत लोकार्पण नहीं हो पाया है। कांग्रेस ने 4 दिन का अल्टीमेटम देते हुए कहा है कि अगर इसके बाद भी इस और ध्यान नहीं दिया गया तो जनता फ्लाईओवर ब्रिज का उद्घाटन कर देगी।

509 पटवारियों के जिले बदले, शिक्षकों की सूची जल्द

16 जून तक होने हैं टीचर्स के तबादले, मंगलवार तक जारी होंगे आदेश

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में कर्मचारियों और अधिकारियों के तबादले की डेडलाइन को अब तीन दिन बचे हैं और अब इस बार डेट बढ़ने के कोई चांस नहीं हैं। इसलिए जिन विभागों में तबादला आदेश जारी नहीं हुए हैं। वहां के विभाग प्रमुख अगले तीन दिनों में स्थानांतरण आदेश जारी करने वाले हैं। आयुक्त भू अभिलेख ने आज 509 पटवारियों के जिले बदल दिए हैं। वहीं स्कूल शिक्षा विभाग शिक्षकों की तबादला सूची जारी करने की शुरुआत आज कर सकता है। अन्य विभागों में भी आदेश जारी करने की तैयारी है।

आयुक्त भू अभिलेख अनुभा श्रीवास्तव ने पटवारियों की संविलयन और तबादला नीति के आधार पर 509 पटवारियों की सूची आज जारी की है। इस तबादला सूची में पटवारियों का एक जिले से दूसरे जिले में तबादला नीति के आधार पर संविलयन किया गया है। प्रदेश में करीब 22 हजार से अधिक पटवारी हैं।

पटवारियों की तबादला नीति में कहा गया है कि पटवारी परीक्षा 2022 के 16 फरवरी 2024 को घोषित रिजल्ट के पूर्व के नियुक्त पटवारी ही दूसरे जिले में संविलियन के लिए आवेदन कर सकेंगे। ऐसे पटवारी जिनके विरुद्ध लोकायुक्त आपराधिक प्रकरण चल रहे हैं। वह तबादले के लिए अपात्रता की श्रेणी में आएंगे। पटवारी को एक बार जिला आवंटित हो जाने पर उसे उस जिले में उपस्थिति देनी ही होगी। जिस जिले में संविलयन चाहा है।

पटवारियों को गृह तहसील से हटा रहे कलेक्टर- उधर पटवारियों के तबादला नीति में किसी भी पटवारी को उसके गृह तहसील में पदस्थ नहीं किए जाने का भी फैसला किया गया है। इसके आधार पर जिलों में कलेक्टरों द्वारा गृह तहसील में पदस्थ पटवारियों को स्थानांतरित करने की कार्यवाही की जा रही है।

इसके बाद अब राजस्व निरीक्षकों की भी तबादला सूची जल्दी ही जारी होने की संभावना है। राजस्व निरीक्षकों की पोस्टिंग राजस्व अनुविभाग वाले गृह क्षेत्र में नहीं करने का फैसला राजस्व विभाग ले चुका है। राजस्व विभाग इसके पहले 159 प्रभारी तहसीलदार, प्रभारी नायब तहसीलदार और तहसीलदार की तबादला सूची जारी कर चुका है।

16 जून तक होना है शिक्षकों के तबादले, आ सकती है सूची

स्कूल शिक्षा विभाग में सबसे अधिक तबादले होना है। इसे देखते हुए विभाग ने 16 जून तक तबादले का समय तय कर रखा है। पोर्टल के माध्यम से इसके आदेश जारी किए जाने हैं। आज टीचर्स के तबादले की पहली स्थानांतरण सूची जारी होने की संभावना है।

स्कूल शिक्षा विभाग की तबादला सूची में देरी का फायदा दूसरे विभागों को मिला है और इसी कारण 10 जून को खत्म होने वाली तबादला आदेश जारी करने की समय सीमा सीएम डॉ. मोहन यादव ने 17 जून तक तय कर दी है। सभी अन्य विभाग मंगलवार 17 जून तक तबादला आदेश जारी कर सकेंगे।

राजा मर्डर केस- सोनम से पूछताछ में कई राज खुले

शिलॉन्ग पुलिस ने मेडिकल चेकअप कराया, आरोपियों ने खाने में मांगी दाल-रोटी

भोपाल (नप्र)। इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी मर्डर केस के आरोपियों से मेघालय पुलिस तीसरे दिन भी पूछताछ की। पूछताछ शुरू करने से पहले सभी आरोपियों का मेडिकल चेकअप कराया गया। अब तक की पूछताछ में ये खुलासा हो चुका है कि सोनम का प्रेमी राज हत्या का मास्टरमाइंड है और सोनम इस साजिश में बराबर की हिस्सेदार रही है। इस बात की संभावना है कि पुलिस अब आरोपियों का आमना-सामना कराए।

राजा की हत्या के बाद सोनम 26 मई से 7 जून तक इंदौर में ही थी। वह 26 से 29 मई तक स्कीम 114 में एक होटल में ठहरी थी। 30 मई से 7 जून तक इसी इलाके की एक बिल्डिंग में फ्लैट में रुकी थी।

11 मई को राजा और सोनम की शादी हुई थी। 21 मई को दोनों हनीमून के लिए शिलॉन्ग

पहुंचे थे, जहां सोनम ने अपने प्रेमी राज और साथियों के साथ मिलकर राजा की हत्या कर दी थी। मेघालय पुलिस ने 15 दिन बाद 7 से 9 जून के बीच सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। अब ये सभी पुलिस रिमांड पर है।

इंदौर के जिस फ्लैट में रुकी उसके संचालक ने बताया कि विशाल चौहान ने अपने नाम से लिया था फ्लैट। ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की हत्या करने के बाद पत्नी सोनम रघुवंशी इंदौर आई थी। वह यहां 26 मई से 7 जून तक रुकी थी। इस दौरान वह 26 से 29 मई तक स्कीम 114 में एक होटल में ठहरी थी। 30 मई से 7 जून तक इसी इलाके की एक बिल्डिंग में फ्लैट में रुकी। यह बिल्डिंग ग्वालियर निवासी लोकेंद्र सिंह तोमर की है।

विशाल ने खुद को बताया था इंटीरियर डिजाइनर- इस बिल्डिंग को ठेके पर लेने वाले शिलाम जेम्स ने बताया कि यह फ्लैट विशाल चौहान ने अपने नाम से किराए पर लिया था। उसने अपने आप को इंटीरियर डिजाइन का काम करने वाला बताया था। उसने यह भी बताया कि वह प्लायवुड और स्टील का काम भी करता है। हमने 17 हजार रुपए किराया बताया था।

तीन महीने के लिए 51 हजार रु. दिए- एग्रीमेंट की शर्त के अनुसार विशाल ने 29 मई की शाम करीब 7 बजे दो महीने का डिपॉजिट सहित एक महीने के एडवांस (कुल तीन माह) किराए के रूप में हमें 51 हजार रुपए दिए थे। सोनम यहां आई या नहीं, मुझे इस बारे में मालूम नहीं। विशाल ने बताया था कि अभी वह जहां रह रहा है, उस फ्लैट के मालिक से विवाद हो गया है। इसलिए मुझे किराए पर आपका फ्लैट चाहिए।

हसदेव अरण्य आंदोलन, अभी हम हारे नहीं और न वो जीते

भोपाल। अंतरराष्ट्रीय गोल्डमैन पर्यावरणीय प्राइज़ से सम्मानित हसदेव अरण्य बचाओ संघर्ष समिति के कार्यकर्ता आलोक शुक्ला ने गांधी भवन में आयोजित परिचर्चा में 'छत्तीसगढ़ के फेफड़े' कहे जाने वाले हसदेव अरण्य को बचाने के लिए बीते डेढ़ दशक से चल रहे जन आंदोलन के सफर और इसके सभी पहलुओं पर गहन चर्चा की। आलोक ने बताया कि 2010 से इस आंदोलन की शुरुआत हुई जब इस सघन, प्राकृतिक, जैव विविधतता और वन्य जीवों से समृद्ध जंगल में कोयला खदानों का आवंटन हुआ।

हसदेव अरण्य बचाओ संघर्ष समिति वस्तुतः इस इलाके की ग्राम सभाओं का एक संगठन है जो संविधान की पाँचवीं अनुसूची का क्षेत्र होने के नाते विशेष अधिकारों से सम्पन्न हैं। ग्राम सभाएं संविधान द्वारा प्रदत्त अपने इन्हीं अधिकारों का इस्तेमाल कर रही हैं। आलोक ने बताया कि हसदेव अरण्य को बचाने का संघर्ष केवल जंगल बचाने का संघर्ष नहीं है बल्कि यह इस मानव जीवन के हर पहलू को बचाने का संघर्ष है। हसदेव अरण्य जंगल न सिर्फ़ स्थानीय आदिवासियों की आजीविका का मुख्य साधन हैं, बल्कि हसदेव नदी का मुख्य कैचमेंट क्षेत्र है जिससे जांजगीर, कोरबा, बिलासपुर की लाखों हेक्टेयर जमीन सिंचित होती है द्य पेयजल और निस्तार का भी प्रमुख जल स्रोत है। पर्यावरणीय संवेदनशीलता और विशेष पारिस्थितिकीय क्षेत्र होने के कारण ही वर्ष 2009 में सम्पूर्ण हसदेव को खनन से मुक्त रखने का निर्णय केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने लिया था द्य वर्ष 2021 में भारतीय वन्य जीव संस्थान ने छत्तीसगढ़ शासन को प्रस्तुत रिपोर्ट में पुनः संपूर्ण हसदेव क्षेत्र को नो गो घोषित करने की अनुशंसा की है। संस्थान ने रिपोर्ट में चेतावनी देते हुए लिखा है कि हसदेव अरण्य में एक भी खदान की अनुमति मानव - हाथी संघर्ष की स्थिति को विकराल बना देगा और हसदेव नदी और बांगो जलाशय के अस्तित्व पर गंभीर संकट पैदा हो जाएगा द्य 26 जुलाई 2022 को छत्तीसगढ़ विधानसभा के सदन ने सर्व-सम्मति से हसदेव अरण्य के सभी कोल ब्लॉक निरस्त करने का संकल्प लिया द्य मई 2023 में सुप्रीम कोर्ट में शपथ पत्र प्रस्तुत करते हुए संचालित पीईकेबी कोयला खदान के अलावा किसी अन्य खदान को अनुमति नहीं देने का वचन दियाद्य दुर्भाग्य से प्रदेश में सरकार बदलते ही उक्त सभी निर्णयों के विपरीत जाकर पुलिस फोर्स की उपस्थिति में परसा कोल ब्लॉक के पेड़ काटे जा रहे हैं।

फादर्स डे

सुरेश सौरभ

पापा कुछ न कहेंगे

बेटी, मेरी प्यारी बेटी! तुम कहाँ हो? तुम किस हाल में हो? यह जानने के लिए मैं कई महीनों से बहुत ही व्यग्र हूँ। परेशान हूँ। अगर तुम्हें जाना ही था, तो मुझे बता कर जाती। मुझे न सही अपनी मम्मी से ही बता कर जाती, मम्मी से न सही, अपने छोटे-छोटे भाई-बहनों से ही बता कर जाती। उनसे न सही तो अपनी किसी सखी सहेली से, अपने किसी नातेदार-रिश्तेदार से ही बता कर जाती, पर तुमने ऐसा नहीं किया? तुम चुपके से किसी को बगैर बताए ही चलीं गईं। आखिर ऐसा क्यों किया तुमने? क्या मेरी परवरिश में कोई कमी रह गई थी? क्या हमारी ममता की छाँव में, मेरे प्रेम वात्सल्य के घने साये में तुम्हारे लिए ही थोड़ी सी जगह न थी? क्या मेरे दिल में तुम्हारे लिए कोई खोट आ गया था? क्या मेरे लिए तुम प्यारी बेटी, दुलारी बेटी नहीं थीं, क्या मैं तुम्हें स्नेह न करता था? आखिर तुमने ऐसा क्यों किया?

तुम्हारी खोज-खबर करते-करते बहुत पैसा और वक्त ज़ाया कर चुका हूँ, पर तुम हमें कहीं न मिलीं, अब बहुत पस्त हो चुका हूँ। अंदर से बिलकुल चिन्दी-चिन्दी टूट चुका हूँ। अब कुछ लोग बताने लगे हैं कि तुम्हें वह लड़का पसंद था।....और तुमने उसके साथ.....अगर वह ही तुम्हारी पसंद थी तो हमको चुपके से बताती, अगर हमसे बताने में कोई संकोच था, तकलीफ थी, तो अपनी माँ को बताती, अपनी छोटी बहन या छोटे भाई से बताती। हम लोग तुम्हारी शादी, बड़ी धूमधाम से, उसी लड़के से, कर देते, हम तुम्हारी पसंद को जरूर पसंद करते, तनिक हम पर विश्वास तो किया होता बेटी! बस एक बार कहा तो होता बेटी। हम जति-धर्म का भेद भी अपने मन-मस्तिष्क से बिलकुल विस्मृत कर देते, समाज के तानों-उलाहनों की कोई फिक्र न करते, पर यूँ बिना बताए चुपचाप अकेले तुम्हारा चले जाना, कुछ न बताना हमें,...हमें बहुत खल रहा है। हमें बिलकुल अच्छा न लग रहा है, यह तुम्हारा आचरण। तुम्हारे लिए हम लोगों ने कितने अरमान अपने दिलों में पाल रखे थे, हमने तुम्हारी शादी के लिए कितने हसीन कमसिन अहसास अपने जिगर में संजोए रखे थे, उसे शब्दों से बयाँ नहीं कर सकते? तुम्हारे लिए मैंने तुम्हारी माँ ने एक-एक रुपए जोड़-जोड़ कर सुकन्या वाले खाते में बडी ख्वाहिशों से जमा करा के रखे थे। इसलिए कि जब तुम बड़ी होगी,सयानी होगी,तुम्हारी शादी होगी, फिर हम जी खोलकर अपने दिल के सारे अरमान पूरे करेंगे। अहा! कैसा वह सुहावना हसीन दिलकश मंजर होता, जब शहनाई हमारे द्वारे बजती, ढोल-ताशे बजते, सारा समाज, सारे परिवारी जन और इष्ट मित्रों के सामने, एक भोला-भाला सुन्दर शहजादा बड़े मान से, बड़े सम्मान से, बड़े एहतराम से, मेरे द्वारे से तमाम कर्णप्रिय मंगलगानों के बीच, डोली में बिठा कर मेरी फूलों से भी नाजुक लाडली बेटी को विदा करके अपने साथ ले जाता, अपना हमराह बनाता , पर सब बह गए अरमान तेज बारिशों में...जैसे मेरे बोये सींचें पल्लवित पौधों को उनकी क्यारियों को अपने साथ बहा ले गयी हो बहुत तेज बारिश और मैं बस अपने सामने अपने गुलशन को उजड़ते बहते,अपने टूटे दिल से मौन खड़े-खड़े बस ताक रहा हूँ, सिर्फ अपने हाथ मलते देख रहा हूँ। इस माली की अरदास सुनने वाला कोई नहीं? इसकी दरयाफ्त सुनने वाला कोई नहीं?

अगर किसी संदेश से ही मुझे सूचित करके ही जाती, तो शायद इतनी दिन-रात घुटन न होती। इतनी पीड़ा न होती पोर-पोर में, पर तुम्हें पापा-मम्मी की पीड़ा का तिल भर अहसास न रहा। ईश्वर करे, वक्त तुम्हें यह कभी अहसास दिलाए और तुम दौड़ी-दौड़ी चली आओ, अपने पापा के पास, अपनी मम्मी के पास, ऐसी आस लिए, ऐसी प्यास लिए, ऐसी तृष्णा लिए हम बस किसी तरह यह जिन्दगी ढोए जा रहे हैं, जिए जा रहे हैं।

तुम मुझे बिना बताए गईं, बिना बताए ही उससे शादी कर ली, क्या हमारे प्यार-मनुहार में, कोई कमी थी, आखिर तुम्हारे पापा के घर में क्या कोई कमी थी? तुम्हें यह मुझे बताना चाहिए था कि नहीं? तुम्हें न पता होगा, तुम्हारी माँ का रो-रो कर कैसा हाल हो रहा है? गंगा-जमुना तुम्हारी माँ की आँखों से हमेशा बहती रहती हैं। तुम्हारे अचानक चले जाने के बाद मैं कई दिनों तक घर से न निकला। न चैन से खा सका, न सो सका। कई दिनों तक अपने काम पर न गया। अब जब घर से निकलता हूँ, तो मेरी गर्दन झुकी-झुकी रहती है, मेरी नजरें झुकी-झुकी होती हैं,लोग पीछे फब्तियाँ कसते हैं, 'अरे! देखो कैसे गर्दन झुकाये जा रहा है। बेचारा शर्म से गड़ा जा रहा है, गर्दन उठाए भी तो कैसे? बेटी क्या चली गई, इस बेचारे की तो नाक ही कट गई। अरे! घर में कोई न कोई कमी रही जरूर होगी। खर्च-पानी न देते होंगे, ढंग से खाना-पानी न देते होंगे। कभी इस बहाने, कभी उस बहाने रोज बेटी को परेशान करते होंगे। सताते

होंगे।अखिर कब तक सहती? कब तक बर्दाश्त करती? जवान खून कभी न कभी तो उबाल मारता ही है। चली गयी, अच्छा किया। जब समय से शादी-ब्याह नहीं कर पाओगे, तब यही ही होगा। बच्चे अपने कदम बाहर निकालेंगे ही .... अरे! आजकल माँ-बाप जब अपनी हवा में हैं, तब वह अपने बच्चों को क्या देख पाएँगे कि कौन कहाँ जा रहा है। कहाँ से आ रहा है.....मेरा तो समाज में, रिश्तेदारियों में आना-जाना, निकलना-बैठना बिलकुल दूभर हो चुका है, समझो बंद सा हो चुका है....फब्तियों से, तानों से, उलाहनों से मेरा जिगर छलनी-छलनी हो चुका है। मेरा मन, मेरी आत्मा कितनी दुखी होती है, किसी तरह भी शब्दांकन नहीं कर सकता? मेरा हृदय गीली लकडियों की तरह बिलकुल सुलग रहा है। धुआँ-धुआँ हो रहा है। जब से तुम गई हो। मैं क्या करूँ, मेरी कुछ समझ में नहीं आता? बेवजह भटकता कोई पथिक सा बिलकुल बन चुका हूँ, जिसे न अपनी कोई मंजिल पता है न ठिकाना?

मैं एक पिता हूँ और पिता की घर-परिवार में एक वट वृक्ष के घने साये की तरह भूमिका होती है, ऐसा लोग कहते हैं, जो घर में सबको प्रेम-विश्वास की, संरक्षण की सघन छाया देता है, शीतलता देता है, पर अब मैं मुरझा कर किसी पौधे की मंजरी सा बन चुका हूँ। तुम मुझे अब देखोगी तो बिलकुल पहचान ही न पाओगी कि सदा हँसने और सबको हँसाने वाला तुम्हारा यह पापा कैसा बिलकुल असहाय निरुपाय मौन प्राणी सा बन चुका है। जिसके चेहरे पर कभी एक शिकन तक न आती थी, आज समय की मार से, दुःख और रंज की मार से, उसी के चेहरे पर इतनी सिलवटें आ चुकीं हैं, तुम्हें देखकर घोर आश्चर्य होगा, विस्मय होगा और अनंत दुख भी।

बेटी मुझे अपनी सुन्दर, सुकोमल, मासूस बचपन की, वह प्यारी दन्त पंक्तियों वाली एक झलक, जरा एक पल के लिए ही दिखा जा ? मेरी आँखें पानी बिन मीन की तरह तेरे एक दरस पाने के लिए व्याकुल प्यासी तड़प रही हैं। बस एक बार आ जाओ मेरे सामने बेटी। फिर तुम्हारी सारी खताएँ मुआफ! सरी सजाएँ मुआफ!.... मुझे याद आ रहा है, वह तुम्हारा बचपन, जब मैं तुम्हें अपने कंधों पर बिठाकर पूरे घर में टहलाता था। घुमाता था। कभी घोड़ा बन कर, कभी हाथी बन कर अपनी पीठ पर बिठाकर कर तुम्हें कैसे-कैसे करतबों से यहाँ-वहाँ मैं दौड़ता-भागता रहता था, घर की पूरी फर्श पर पूरे आँगन में, तब तुम्हारी मम्मी का दादी का, सबका हँस-हँस कर कैसा बुरा हाल हो जाता था। तुम्हें खूब पता होगा...हर हफ्ते तुम्हें पार्क में ले जाना, झूला झूलाना, याद है तुमको, स्लाडर पर जब तुम फिसलने से घबराती थी। तब मैं तुम्हारा हाथ पकड़ कर कैसे फिसलाता था, कुछ याद करो मेरी बिटिया रानी। तुम सबसे बड़ी थी। पहलौठी बेटी थी। हम सबकी तुम बड़ी प्यारी बिटिया दुलारी बिटिया थी। दादी की तो तुम बड़ी लाडली बिटिया थी। अपनी दादी से रोज रात में कहानी सुनकर ही सोया करती थी। ....'पापा देखो भैया बहुत परेशान कर रहा है। मेरी गुड़िया नहीं दे रहा है। पापा देखो मम्मी मुझे मार रही है....तुम्हारी वह निश्छल आवाजें, तुम्हारी वह भोली वात्सल्य से भीगी मासूम आहें, तुम्हारी खिलदंड कराहें, मेरे कानों में हर वक्त भी गूंजती रहती हैं। मुझे बेचैन करती रहती हैं। तुम्हारी किसी गलती पर मम्मी जब तुम्हें मारने दौड़तीं थीं। तब तुम दौड़ते हुए पापा-पापा करते हुए मेरे पीछे-पीछे छिप जाया करती थी, मैं तुम्हें मम्मी की मार से बचा लिया करता था। तब तुम्हारी मम्मी क्रोधावेश में कहती थीं- ''चढ़ाओ खूब अपने सिर पर, एक दिन यह तुम्हें ही खूब परेशान करेगी, तब देखना?'' मुझे पता न था कि तुम एक दिन, इस कदर, इस तरह, इस उम्र में, इस मोड़ पे, मुझे यूँ परेशाँ करोगी,यूँ संसार भर में रूसवा करोगी, यह तिल भर अहसास न था। तुम लौट आओ बेटी। हर राह तक रहा हूँ। हर पल सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी याद में खोया रहता हूँ, लौट आओ बेटी, मेरे दिल की हर धड़कन, मेरी हर श्वांस तुम्हें पुकार रही है, बस तुम्हारी एक आहट पाने के लिए, मेरी रूह तेरे नाम की हर वक्त बस टेर लगाए रहती है। बेटी लौट आ बस एक बार...बस एक बार....पापा तेरे कुछ न कहेंगे। तेरी मम्मी भी कुछ न कहेंगी। यह मेरी पक्की गारन्टी है, मेरी परी, मेरी बच्ची, मेरी लाडो ,मेरी मेरी डॉटर, मेरी मुनिया, मेरी प्यारी गुड़िया, तुम्हारा पापा अपने हृदय के किवाड़ हर पल खोले बैठा, बस तेरी एक झलक पाने की चाह में व्यग्र है। आकुल है। व्याकुल है। अधीर है, किसी परकटे पक्षी तरह मैं बस अपने घायल पंख फड़फड़ा रहा हूँ,...फड़फड़ा रहा हूँ, तड़प रहा हूँ। अब तुम्हारी खुशियों पर बलि-बलि जाने के लिए हम सब कटिबद्ध हैं। संकल्पित हैं। तुम्हारे लिए, अपनी पलक पावड़े बिछाए, तुम्हारे इंतजार में बैठे हैं। बेटी एक पिता के आँसूओं की सदाओ को सुन ले। जिस माँ ने तुझे नौ माह अपनी कोख में रखा, कम से कम उस माँ की कोख की आवाज को ही सुन ले। अपनी माँ के तड़पते दिल की दारुण टीस ही सुन ले। उसकी रोती आत्मा की करुण पुकार ही ले सुन ले।

बेटी! अपनी भीगी पलकें बिछाकर बैठा, बस तेरी प्रतीक्षा में। दुनिया से हारा, खुद से हारा, तुझसे हारा, तेरा दुखियारा, जग का पतियारा एक पिता।

फादर्स डे पर विशेष

डॉ. जीवन एस. रजक

लेखक संयुक्त कलेक्टर एवं साहित्यकार हैं।

पिता ! एक अदम्य साहस

पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता हि परम तपः ।
पितरि प्रितिमापन्ने सर्वाः प्रीयन्ति देवताः ॥- महाभारत

अर्थात् पिता ही धर्म है, पिता ही स्वर्ग है, और पिता ही सबसे बड़ी तपस्या है। पिता के प्रसन्न हो जाने से देवता प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार पिता सर्वश्रेष्ठ है, सर्वदा पूजनीय है। हमारी आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपरा में पिता के महत्त्व को समग्रता से बहुत ही आदर्श रूप में वर्णित किया गया है।

पिता एक अदम्य साहस है। पिता का साहस ही बच्चों में ऊर्जा का संचार करता है। उन्हें प्रेरणा देता है और जीवन में पथ प्रदर्शक का कार्य करता है। पिता नींव की शिला है, जिस पर पूरे घर का भार धारित है। वह एक विराट् वृक्ष की तरह है, जिसकी टहनियों में घोंसला बनाकर बच्चे सारी उम्र व्यतीत करते हैं। पिता एक मील का पत्थर है, जो बच्चों के जीवन की दशा और दिशा को तय करता है।

एक पिता अपने बच्चों के जीवन का निर्माण करता है। उनके जीवन-चरित्र का निर्माण करता है। पिता की उँगली पकड़कर ही हम अपने भविष्य का निर्माण करते हैं। अगर मैं अपनी बात करूँ तो मेरे पिता दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पिता थे। मेरे गरीब कृषक पिता शिक्षित तो नहीं थे, किंतु उनकी शिक्षाओं ने ही मुझे इन्सान होने का वास्तविक अर्थ समझाया है। उनका आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच ही मेरे जीवन का आधार और मेरी छोटी सी सफलता का मूल हैं। मनुष्य के जीवन में पिता मील का पत्थर होता है। जीवनभर अपनी संतान को रास्ता दिखाता है। वर्ष 2000 में रीवा मेडिकल कॉलेज से मैं एम.बी.बी. एम. कर रहा था, किंतु डॉक्टर बनने में मेरी कोई रुचि नहीं थी। मैं एक प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहता था, इसलिए छह माह मेडिकल की पढ़ाई करने के बाद एक दिन मैं पढ़ाई छोड़कर वापिस अपने गाँव आ गया। मेरे पिता पढ़े-लिखे तो नहीं थे, किंतु पढ़ाई के प्रति बहुत ज्यादा सजग थे। उन्होंने मुश्किल से पैसों की व्यवस्था करके मेरा मेडिकल कॉलेज में एडमिशन कराया था। मेरे बचपन से ही वह चाहते थे कि मैं डॉक्टर बनूँ। जब मेरा पी.एम.टी. में चयन हुआ तो पिता बहुत ज्यादा खुश थे, क्योंकि उनके परिचितों, समाज और रिश्तेदारों में मेडिकल में चयन होनेवाला मैं पहला छात्र था। मेडिकल की पढ़ाई छोड़ने से मेरे पिता का स्वप्न टूट रहा था। मुझे लगा, घर जाने पर पिता बहुत नाराज होंगे। जब मैं घर पहुँचा और पिता को सारी बात बताई तो पिता मुस्कराकर बोले, कोई बात नहीं। जिस काम को करने का मन न हो, वह काम नहीं करना चाहिए। तुझे जो करना है, जो बनना है, बन, मैं हमेशा हर स्थति में तेरे साथ हूँ।÷ मेरे पिता आज इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनके द्वारा उस दिन कहे गए उन शब्दों के कारण ही मैं राज्य प्रशासनिक सेवा का अधिकारी बन पाया हूँ। बच्चों के प्रति पिता का विश्वास ही बच्चों के जीवन को निर्धारित करता है।

वास्तव में पिता, जीवन की बुनियाद और इस सृष्टि की शाश्वत अभिव्यक्ति है। भारत की महान् संस्कृति की दार्शनिक परंपरा में माता-पिता को सर्वदा पूजनीय माना गया है। हमारे शास्त्रों में माता के लिए सर्वोच्च स्थान निश्चित किया गया है। साहित्य में भी माँ का वर्णन विराट् रूप में किया गया है। निस्संदेह माँ का स्थान जीवन में सर्वोपरि है, किंतु पिता भी जीवन का एक महत्त्वपूर्ण आधारस्तंभ है। यदि माँ जन्मदात्री होकर ममतामयी है, तो पिता जीवन निर्माण की आधारशिला है। इसलिए वैदिक ग्रंथों में पिता का वर्णन 'रक्षक', 'पालक' और 'पोषक' के रूप में किया गया है। जिस प्रकार सूर्य प्रतिदिन उदित होकर अपने प्रकाश और प्रकाश में समाहित ऊर्जा से समस्त संसार को जीवन प्रदान करता है और प्राणियों के जीवन संचालन की सुचारू व्यवस्था करता है, ठीक उसी प्रकार परिवार में पिता का स्थान होता है। पिता के जीवन का उद्देश्य परिवार का सुचारू जीवन होता है। वह न केवल माता को बीज प्रदान कर इस सृष्टि की रचना में अपना बराबर का योगदान देता है, बल्कि अपनी संतान को अपनी मेहनत से सींचकर एक विशाल वृक्ष बनाने का सार्थक प्रयास भी करता है। पिता के सान्निध्य को प्राप्त करते ही संतान सुरक्षित और शांत महसूस करती है। जिस प्रकार अपनी विशाल शाखाओं की छाया में सुरक्षा का अहसास प्रदान करनेवाला वृक्ष, जो प्रकृति की मार से संघर्षरत रहने का अहसास छाया लेनेवाले को नहीं होने देता, उसी प्रकार पिता सदैव संघर्ष कर अपनी संतान के जीवन को आकार देने के लिए अपनी खुशियों का त्याग करता है।

वाल्मीकि रामायण में भी कहा गया है-

न तो धर्म चरणम् किंचिदस्ति महत्तरम।
यथा पितरि शुश्रुषा तस्य वा वचनक्रिया ॥
यतः मूलम् नरः प्रश्नेत् प्रादुर्भावम् इह आत्मनः ।
कथम् तस्मिन् न वर्तेत प्रत्यक्षे सति दैवते ॥
दारूणे च पिता पुत्रे नैव दारूणतां व्रजेत।
पुभार्थे पदः कष्टाः पितरः प्राप्नुवन्ति हि ॥

अर्थात् पिता की सेवा और उनकी आज्ञा का पालन करने से बड़ा कोई धर्माचरण नहीं है। जब मनुष्य की स्वयं की उत्पत्ति के मूल में पिता ही है तो वह पिता के रूप में विद्यमान साक्षात् भगवान् को ही क्यों नहीं पूजता है? पुत्र का स्वभाव क्रूर हो जाए, तब भी पिता उसके लिए निष्ठुर नहीं हो सकता है, क्योंकि पुत्रों के लिए पिता अनेक कष्ट और विपत्तियों को सहन करता है। इस प्रकार रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों में पिता के महत्त्व को बहुत ही श्रेष्ठ रूप में वर्णित किया गया है।

पौराणिक ग्रंथों में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि उस पुत्र को धिक्कार है जो समर्थ होते हुए भी पिता के मनोरथ को पूर्ण करने में उद्धत नहीं होता है। जो पुत्र पिता की चिंता को दूर नहीं कर सकता, उस पुत्र का जन्म प्रयोजनहीन है। मनुस्मृति में लिखा गया है- 'पिता मूर्तिः प्रजायतेः' अर्थात् पिता पालन-पोषण करने से प्रजापति अर्थात् राजा व ईश्वर के समान है। वास्तव में जीवनदाता होने के कारण पिता सर्वदा पूजनीय है।

'चाणक्य नीति' कहती है-

जनिता चोपनेता च यस्तु विद्यां प्रयच्छति।
अन्नदाता भयमाता पञ्चैते पितरः स्मृताः ॥

अर्थात् वह जो हमें जन्म देते हैं, वह, जो हमें ज्ञान का मार्ग दिखाते हैं, विद्या प्रदान करते हैं, जो अन्नदाता हैं, और जो भय से रक्षा करते हैं, यह पाँचों गुण पिता के हैं। अर्थात् संतान के लिए एक पिता ही है, जो उसे सबकुछ प्रदान कर एक अच्छा जीवन देता है। शास्त्रों में माता को समस्त तीर्थ और पिता को सभी देवताओं के समान माना गया है इसलिए माता-पिता सर्वदा पूजनीय हैं, उनकी सेवा ही सर्वोत्तम धर्म है।

गरूड़ पुराण में कहा गया है-

पितृन्नमस्येदिवि ये च मूर्ताः स्वद्याभुजः काम्यफलाभिसन्धौं ।
प्रदान शम्ताः सकलेटिसतानां विमुक्तिद्य येऽनभिसंहितेषु ॥

अर्थात् मैं अपने पिता को नमन करता हूँ, जो सभी देवताओं का प्रत्यक्ष रूप हैं। मेरे पिता मेरी समस्त आकांक्षाओं को पूर्ण करते हैं। मेरे हर संकल्प को सिद्ध करने में मेरे आदर्श हैं। पिता मुझे कठिनाइयों और चिंताओं से मुक्त करते हैं। मैं प्रभु रूप ऐसे पिता को प्रणाम करता हूँ।

मेरा विश्वास है कि पिता हाड़-मांस की देह मात्र नहीं हैं। वास्तव में पिता आदि से अंत तक सृष्टि की अटूट अभिव्यक्ति है, जिसमें सारा ब्रह्मांड समाहित है। माता के गर्भ में प्रतिस्थापन से लेकर अंतिम यात्रा तक जीवन का हर क्षण पिता का ऋणी है। रक्त की हर बूँद, हर साँस पिता की ऋणी है। इस सृष्टि में पिता शाश्वत है, यदि सहस्त्रों जन्म लेकर भी प्रत्येक जन्म का प्रत्येक क्षण पिता के स्मरण में व्यतीत किया जाए, कदाचित् तब भी पितृ ऋण से मुक्त हो पाना संभव नहीं होगा। पिता जीवन मूल्यों का केंद्रबिंदु है। जीवन में आत्मविश्वास, सकारात्मक ऊर्जा, सद्गुण और नैतिकता का स्त्रोत पिता ही होता है। पिता की उँगली पकड़कर हम उसके आदर्शों और आचरण को अपने जीवन में समाहित करते हैं। पिता की सोच और उसके स्वप्न हमारे जीवन-निर्माण का आधार बनते हैं।

भारतीय दर्शन और धार्मिक साहित्य में पिता के महत्त्व का वर्णन बहुत ही श्रेष्ठ रूप में किया गया है। भारतीय संस्कृति और साहित्य में बहुत ही दृढ़तापूर्वक कहा गया है कि माता-पिता द्वारा जन्म पाकर मनुष्य जब बड़ा हो जाता है तो माता-पिता के प्रति उसके कुछ कर्तव्य हो जाते हैं। संतान को उन कर्तव्यों का निर्वहन पूरे मनोयोग से करना चाहिए। स्मरण रहे! माता-पिता ही सर्वोपरि हैं। उनका हमारे ऊपर जो ऋण है, उस ऋण से मुक्त हो पाना संभव नहीं है। उनकी सेवा ही सर्वश्रेष्ठ तप है।

पिता अपनी संतान को सुखमय जीवन देने के लिए जीवनभर आँधी-तूफानों से टकराता है, लेकिन बच्चों को कभी परेशान नहीं होने देता। वास्तव में पिता एक वट वृक्ष की तरह होता है, जिसकी जटाएँ हमारे लिए सुरक्षा कवच का काम करती हैं। वट वृक्ष की छाया में जीवन बहुत ही आसान हो जाता है। पिता अपने स्वप्न के मलबे से अपनी संतान के सपनों का साकार महल बनाता है। स्वयं के अधूरे स्वप्नों की क्षतिपूर्ति अपनी संतान की सफलता से करने के लिए अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को तिलांजलि देकर परिवार के लिए आजीवन अगाध समर्पण और त्याग करता है। पिता वह बीज है, जो स्वयं को तोड़कर अपनी संतान को एक विराट वृक्ष बनने का मार्ग प्रशस्त करता है। भगवान् महावीर कहते हैं, 'परिग्रह मूर्च्छा है, किंतु पिता जब यह परिग्रह अपनी संतान और परिवार के लिए करता है, वह मूर्च्छा नहीं रहता, नैतिक कर्त्तव्य और धर्म हो जाता है।'

आज के भौतिकतावादी आधुनिक युग में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं में टूटन दिखाई देने लगी है। आधुनिक पीढ़ी रिश्तों की मर्यादा का उल्लंघन करने लगी है। हमारी सामाजिक परंपरा में पिता को पूजनीय माना गया है। आज के समाज में पिता संतान से सिर्फ प्रेम और सम्मान की आशा करता है, किंतु यह हमारे समाज का दुर्भाग्य ही है कि कतिपय संतानें पिता का तिरस्कार और उपेक्षा करती हैं। निस्संदेह यह हमारी आधुनिक शिक्षा पद्धति और संस्कारों के अवमूल्यन का ही दुष्परिणाम है। आधुनिक पीढ़ी को संकल्प लेना चाहिए कि वह हमारी गौरवपूर्ण सांस्कृतिक परंपरा का अनुसरण कर पिता के प्रति अपने दायित्वों का पूर्ण मनोयोग से निवर्हन करेंगे।

पिता को आकाश से भी ऊँचा माना गया है। मेरे पिता मेरे आदर्श हैं। मेरे जीवन के निर्माता हैं। आज मैं थोड़ा-बहुत जो कुछ भी हूँ, समाज में मेरा थोड़ा, जो स्थान है, वह सिर्फ मेरे पिता की देन है। पिता के पथ-प्रदर्शन और मेरे प्रति उनके अदम्य साहस के कारण ही मेरे जीवन-चरित्र का विकास होना संभव हुआ है। यदि मैं अपने जीवन का प्रत्येक क्षण भी उनके स्मरण में व्यतीत करूँ, तब भी उनके ऋण से मुक्त हो पाना संभव नहीं है। वास्तव में पिता जीवन दर्शन हैं।

महाभारत में यक्ष-युधिष्ठिर संवाद में जब यक्ष युधिष्ठिर से पूछते हैं, कि पृथ्वी से भारी कौन है, तब युधिष्ठिर उत्तर देते हैं - 'माता'। और जब यक्ष पूछते हैं कि आकाश से ऊँचा कौन है, तब युधिष्ठिर उत्तर देते हैं - 'पिता'। इससे पिता के विराट स्वरूप का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। वास्-तव में पिता ही जीवन का आधार और सृजन है। पिता ही आकाश को झुका देने का अटल विश्वास है। पिता समस्त देवताओं का मूल है और समस्त तीर्थों का संकल्प है। भारतीय दर्शन में पिता को सर्वदा पूजनीय माना गया है। शास्त्रों के अनुसार, तीन तरह के ऋणों को चुकाने के उपरांत ही मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। ये ऋण हैं- देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि धर्म शास्त्रों में पिता को कितना महत्त्व दिया गया है। यद्यपि धर्म शास्त्रों में कुछ भी लिखा हो, लेकिन मुझे लगता है कि पिता का ऋण उतार पाना मानव के लिए संभव नहीं है। वास्तव में पिता साक्षात् ईश्वर हैं और ईश्वर के ऋण से मुक्त हो पाना मनुष्य के लिए असंभव है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

फादर्स डे

विनोद कुमार विक्की

पिता का प्रेम अव्यक्त और अपरिभाषित

जून माह का तीसरा रविवार पिता के सम्मान प्रेम और योगदान को समर्पित किया गया है। इस वर्ष यह दिवस 15 जून को मनाया जा रहा है।

मातृत्व की महत्ता से अभिभूत तथा मदर्स डे के उपदेशों से प्रेरित होने वाली सोनोरा स्मार्ट डोड ने अपने पिता के सम्मान में 19 जून 1910 को वाशिंगटन के स्पोकेन में पहली बार फादर्स डे मनाने की परंपरा का आगाज किया। पितृत्व त्याग और प्रेम को समर्पित इस दिवस को माता के सम्मान में मनाये जाने वाले मदर्स डे का पूरक माना जाता है। स्मार्ट डोड के पिता विलियम जैक्सन स्मार्ट, अमेरिकी गृह युद्ध के एक जांबाज योद्धा थे। पहली पत्नी एलिजाबेथ और दूसरी पत्नी एलेन विक्टोरिया चीक की मृत्यु के उपरांत विलियम ने अकेले पिता के रूप में कठिन परिस्थितियों के बावजूद नवजात शिशु सहित अपने छ बच्चों के परवरिश की गहन जिम्मेदारी का निर्वाह किया। अपनी संतान के प्रति उनका अटूट प्रेम, संघर्ष और त्याग ही फादर्स डे के पीछे की प्रेरणा बन गया।

इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि लौकिक ईश्वर का दर्जा प्राप्त माता-पिता के त्याग, समर्पण और प्रेम को शब्दों एवं समय की परिधि से बांधा नहीं जा सकता। इनके योगदान के प्रति भावनात्मक अभिव्यक्ति के लिए संभवतः संपूर्ण जीवन भी कम पड़ जाए। भाग-दौड़ भरी व्यस्तता और परिवार के मुखिया के लिए अव्यक्त अभिव्यक्ति के बीच जून का तीसरा रविवार यह मौका देता है कि फादर्स डे के बहाने पिता के योगदान और भूमिका का अहसास कर अपने पिता के प्रति प्रेम, सम्मान और आभार को खुल कर व्यक्त कर सकें। फादर्स डे पिता के महत्व को पहचानने और उनके योगदान को सराहने का अवसर देता है। यह विशेष दिवस पारिवारिक बंधन को मजबूत करने में पिता की भूमिका का मार्मिक अहसास कराने के साथ ही पिता और बच्चों के बीच के रिश्ते को और भी प्रगाढ़ करने में मदद करता है। परिवार एवं समाज में पिता की भूमिका और उनके महत्व को बढ़ावा देने के साथ ही उनके योगदान को सराहने का अवसर भी प्रदान करता है।

जून के तीसरे रविवार को फादर्स-डे के रूप में मनाये जाने हेतु अमेरिकी राष्ट्रपति

लिंडन बी जॉनसन ने वर्ष 1966 में इसे आधिकारिक मान्यता प्रदान की थी। वर्ष 1972 में राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने फादर्स डे को एक स्थायी राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया। हालांकि सोनोरा स्मार्ट डोड द्वारा प्रारंभ फादर्स-डे मनाये जाने को 1924 में राष्ट्रपति कैल्विन कूलिज ने समर्थन देने की घोषणा की थी, किंतु आधिकारिक तौर पर इसे वर्ष 1966 में ही मान्यता मिल पायी।

पिता के प्रेम को परिभाषित कर पाना काफी मुश्किल है, क्योंकि यह प्रेम अनकहा और अक्सर अल्प व्यक्त होता है, लेकिन इसका प्रभाव बच्चों के जीवन पर गहरा होता है। पिता का प्रेम एक माँ के प्रेम से अलग होता है। यह प्रेम एक मार्गदर्शक प्रकाश है, जो हर बच्चे के लिए प्रेरणा और शक्ति का स्रोत है। परिवार में पिता की भूमिका संरक्षक एवं मार्गदर्शक का होता है। परिवार के लिए आदर्श स्थापित करने वाले पिता से उनकी संतान ज्ञान, शक्ति और साहस प्राप्त करते हैं। मुश्किल समय में सहारा और भावनात्मक शक्ति पिता से प्राप्त होती है। अनुशासन मिश्रित पिता का प्रेम बच्चों को सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। पिता अपने बच्चों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत होता है। वो हमेशा अपनी मेहनत और समर्पण से उन्हें प्रेरित करते हैं।

पिता अपनी संतान को ना केवल दैहिक और आर्थिक सुरक्षा देता है, बल्कि उन्हें सामाजिक पहचान, प्रतिष्ठा और भावनात्मक समर्थन भी प्रदान करता है। प्रेरणा और मार्गदर्शन तथा जीवन के मूल्यों से परिचय कराते हुए बच्चों में साहस, ज्ञान और आत्मविश्वास उत्पन्न करता है। हालांकि यह एक कड़वा सच है कि अक्सर पिता परिवार की आर्थिक जरूरतों एवं संतान की जरूरत को पूरा करने के लिए परिवार एवं बच्चों को ज्यादा समय नहीं दे पाता है। जिस कारण माता की अपेक्षा पिता का प्रेम प्रायः अव्यक्त और अपरिभाषित ही रह जाता है।

माँ है ममता की फर्श, पिता छत और दीवार होता है

माँ से होता है घर जनाब, तो पिता से संसार होता है।

सरल शब्दों में कहा जाय तो सामाजिक दायित्व और पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रहा सामान्य ऊर्जा और साधारण व्यक्तित्व वाला पिता अपने बच्चों के लिए उसके जीवन का आदर्श और उसका सुपर हीरो होता है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

अंधेरे का संबंध तो माँ के पेट से ही रहता है-दिलीप शर्मा

बचपन में जब खेलने-कूदने, मौज-मस्ती करने का समय होता है, दोस्तों के साथ समय को बेवकूफ समझ कर खुद बेवकूफी करने में आनंद प्राप्ति का समय होता है। जिस कार्य को करने हेतु रोका-टोकी हो उसी को डटकर करने का समय होता है। दिन में कम से कम चार बार डाँट खाने का समय होता है ऐसे ही समय में यदि कलाकारी का भूत सवार हो जाए तो यकीन मानिए बाकी की सारी बिमारियाँ उड़न-छू हो जाती हैं। मन रंगों में रमा एक हसीन दुनिया के सफर पर निकल जाता है जहाँ सवार होने के बाद हम जहाँ होते हैं यकीन मानिए वास्तव में हम वहाँ नहीं होते और ये तब और गज़ब हो जाता है जब दुनिया काली में झाँकते थोड़े से लाल रंग की हो। मैं एक बार के घटना का जिक्र करना चाहूँगा जब मुंबई के लोकल में यात्रा करते हुए एक इंसान जिसकी नजर तो सामने बैठी एक युवती पर थी पर हकीकत में वो कहीं और खोया हुआ था। विरोध दर्ज करने हेतु लड़की द्वारा कई प्रश्न दागे गये, जिसका कोई उत्तर नहीं मिला यहाँ तक कि उसके आँखों के सामने, बगल बैठे इंसान द्वारा हाथ भी लहराया गया फिर भी पलक में कोई फेरबदल नहीं हुआ?। इन सभी से अनभिज्ञ वो इंसान अपने सफर पर था। कहना गलत नहीं होगा कि इतने भीड़ में भी जो इंसान अपना एकांत खोज लेता है और सृजित कर लेता है एक नई रचना, क्या वो किसी तपस्वी से कम होता है? बाद में पता चला कि वो मुंबई के बहुत प्रसिद्ध कवि हैं। उनकी कई रचनाएं बहुत ही प्रसिद्ध और सराही गई हैं और कमाल की बात कि अधिकतर रचनाएं लोकल में यात्रा के दौरान ही ऐसे ही परिस्थितियों से गुजरते हुए लिखी गई थीं। महिला को अपने बेवकूफी पर बड़ी ग्लानि हुई बाद में। इस पूरे व्याख्यान के पीछे का मूल उद्देश्य यही था कि सृजन का कीड़ा जिसे भी काट खाता है वो सामान्य दुनिया में होकर भी सामान्य नहीं रह जाता, वो कहीं भी, भरे बाजार के बीच रहकर भी अपना एकांत खोज ही लेता है और मन में उठ रहे विरेचन को रचना में तब्दील कर लेता है। ये कीड़ा यदि बचपन में ही काट खाए तो यकीन मानिए इंसान पचपन तक आते-आते कमाल ही कर जाएगा। आज हम बात कर रहे हैं मुजफ्फरनगर बिहार के छोटे से गाँव के कलाकार दिलीप कुमार शर्मा जी (जन्म-1977 में) की, जो आज देश की राजधानी दिल्ली में निरन्तर सक्रिय होकर काम कर रहे हैं और कला की दुनिया में एक साथ बहुत कुछ कर रहे हैं। अच्छे नाम और काम के साथ यहाँ रचनाशील हैं। बाजार, कलाकार समूह और सांस्कृतिक हलचलों के साथ सक्रिय भी हैं। दिल्ली आने के बाद तमाम झंझावातों से जूझना हुआ, परिस्थितियों के खिलाफ लड़ना हुआ। कलाकृतियों और कलाकारों को लेकर कुछ ऐसी घटनाओं से भी सामना हुआ जिनका जिक्र करना अब वो नहीं चाहते पर जिससे सीखने को बहुत कुछ मिला, जो जीवन के गूढ़ता को सरलता से समझाने में मुख्य भूमिका निभाता है और जिसकी वजह से कलाकार दिलीप खुद को भविष्य में ठगा हुआ महसूस नहीं करेंगे या ऐसी घटनाओं से बचने का प्रयास करेंगे।

दिलीप जिन्हें बचपन से ही कलाकारी का कीड़ा काट खाया था और जिसमें इनके मित्र जो बाद में पटना आर्ट कॉलेज से जुड़ गए थे तथा मो. शकूर का मुख्य हाथ था। दिलीप जी बताते हैं कि चीजों को मैं शुरू से ही खूब ऑब्जर्व करता था, खूब देर तक निहारता था, घूरता था उसके बेसिक फॉर्म्स, स्ट्रक्चर पर गहनता के साथ खोज करता और सोचता था। उसके बनावट, प्रकृति उसके होने के पीछे के कारण और उद्देश्य पर भी खूब सोचता था और आड़े-तिरछे रेखाओं के माध्यम से बनाने और रंगने का प्रयास करता था। मो. शकूर साहब के साथ कई बार आस-पास के गाँवों में शादी-ब्याह के मौकों पर मड़वा या ऐसे ही तमाम मांगलिक पर्वों, उत्सवों हेतु, सजावट हेतु, फूल-पत्ती, डिजाइन बनाने हेतु जाना होता था और बड़ा आनंद आता था, जहाँ काम करते हुए उन्होंने मुझे देख लिया, अरे वही.. पटना आर्ट कॉलेज वाले, जो आज भी हमारे मित्र हैं। फिर उन्होंने ही मुझे जोर दिया कि मैं इसी क्षेत्र में आगे बढ़ूँ और मैं आगे बढ़ा। कहा जा सकता है कि बेसिक चीजें तो यहीं क्लियर हो चुकी थीं। बाद में पोस्टर, बैनर, साइन बोर्ड आदि कार्य भी आपने किया, नाटक, थिएटर से भी आप जुड़ें रहे और अपने कला को माँझते रहे। कलाकार दिलीप कहते हैं कि मेरे हिसाब से जीवन को देखने का जो आपका नजरिया होता है या जिस पर्सपेक्टिव से आप जीवन को देखते हैं, वही आपके जीवन में आगे काम आता है। शुरू में जब गाँव में लाइट नहीं हुआ करती थी और दिए के सामने पढ़ना होता था, पढ़ना क्या? बल्कि पढ़ने के बहाने चित्र बनाना होता था वो भी दादी से छिपकर कि कहीं डाँट ना दें। उन्हें देखते ही छिपा लेना पड़ता था। गाँव में दूर-दूर तक कोई कला और इसके भविष्य को समझने वाला तो था नहीं फलत- कलाकारी करना अच्छे बच्चों की श्रेणी में नहीं आता था और आप निरंतर बुरे बच्चे बनकर अच्छा सृजन करते रहे। ऐसे ही बहुत सारी समस्याएँ थी जिसको दिलीप को फेस करना पड़ा था क्योंकि जहाँ से वो आ रहे हैं उस जगह पर किसी को कला का नॉलेज नहीं था। वहाँ पर सब कुछ नया ही था और जमाना गवाह है कि कुछ नया करने हेतु संघर्ष तो करना ही होता है। मेरा संघर्ष समय, परिस्थितियों और अंधेरे-उजाले के बीच मचे घमासान से था। जिसका असर मेरे कलाकृतियों में भी दिखाई पड़ता है और उसी संघर्ष के बदौलत मैं आज यहाँ पहुँच सका हूँ।

कलाकृतियों की अगर बात करी जाए तो ये बात बिल्कुल ही आसानी से कही जा सकती है कि विविध रंगों को आपके यहाँ जगह नहीं। आपके कृतियों में अंधेरे को ज्यादा तवज्जो मिला है। अंधेरा वो भी एकदम नये फॉर्म में, जहाँ पहुँच कर शुरू में दर्शकों को थोड़ा भ्रमित होना पड़ता है लेकिन जल्दी ही वो कृतियों से जुड़ाव महसूस करने लगते हैं। पहले तो लगता है कि कैसे कृतियों से पाला पड़ा है हाय!,

लेकिन समय, जब दर्शक थोड़ा सा समय देता है और कृतियों से संवाद का प्रयास करता है तो हैरान रह जाता है वही कृति जो कुछ समय पूर्व समझ के परे की वस्तु थी, अचानक कई परतों में अलग हो जाती है और संवाद के बेहद ही एकांत मार्ग पर आपके साथ खड़ी हो जाती है और पूरी कहानी आपके सामने। आप तूफान के समय किसी नाव में सवार लहरों से जूझते हुए कथानक को खुद में जज्ब़ कर जाने को आतुर वहीं कृतियों पर आँख गड़ाए खड़े रहते हैं और सारा परिदृश्य आपके आँखों के सामने चलचित्र सा चलता हुआ अपनी बात आप तक पहुँचाता रहता है। बेहद ही संवेदनशील मुद्दों पर अपनी बात रखने वाले चित्रकार दिलीप कुमार शर्मा कहते हैं कि कृतियाँ शुरू से ही जब बनती है तो उसमें बदलाव की गुंजाइश होती है उसी के साथ मैं आगे बढ़ता रहा हूँ। शुरू से ही माइथॉलजी में मेरा ध्यान रहा है। हिंदू देवी के प्रति शुरू से ही मैं कुछ उत्सुक सा रहा हूँ। इस फॉर्म पर मैं लगातार काम कर रहा हूँ और उसी फॉर्म को कैसे और मिनिमाइज करके काम किया जा सकता है इसी पर निरंतर शोध भी कर रहा हूँ, काम कर रहा हूँ। अभी भी मैं फॉर्म तलाश ही रहा हूँ। दौड़ निरंतर जारी है।

पेंटिंग में अधिकतर काले घने रंगों का प्रयोग करने के पीछे का कारण क्या है? पूछने पर दिलीप कहते हैं कि- डार्क का रिलेशन तो माँ के पेट से ही रहता है। बच्चा नौ महीने पेट में ही रहता है वहाँ भी उसे अंधेरा ही नजर आता है तो देखा जाए तो जीवन की शुरुआत ही अंधेरे से है और इंसान जब अपने अंतिम यात्रा पर होता है तब भी अनंत अंधेरे की तरफ चला जाता है, ऐसा अंधेरा जिसका कहीं ओर-छोर ही नहीं होता, पर जो होता है। जीवन में अंधेरे का ही महत्व है। अंधेरे के बाद ही उजाले की बात है, दूसरा अगर डार्क नहीं होगा तो उजाले का महत्व क्या समझ में आएगा? मेरे कृतियों में कलर की जरूरत नेचुरल हो, म्यूट हो, बस जरूरत भर के लिए हो, मैं यही चाहता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि ज्यादा कलर का प्रयोग करने से फॉर्म भी दबने लगता है। कलर का प्रभाव जरूरत भर हो मैं वही चाहता हूँ। कलर की फिलॉसफी अगर देखी जाए तो माइथॉलजी में एक ही कलर है ब्लैक, थोड़ा सा रेड भी है। बचपन से ही रीति-रिवाजों, उत्सवों-आयोजनों, त्योहारों, जहाँ संस्कृतियों को जगह है में ब्लैक और रेड का कॉम्बिनेशन हम देखते आए हैं और उसके प्रभाव को महसूस भी करते आए हैं इस वजह से मेरे कृतियों में रेड और ब्लैक का एक मंझा हुआ संयोजन है। इसके बीच में जितने भी कलर होते हैं, मैं प्रयोग करता हूँ। सब्जेक्ट खुलकर आए, आँखों को चुभे नहीं, वर्क देखने योग्य हो यही प्रयास रहता है मेरा। कलाकृति दिलीप शर्मा की है।

पुस्तक समीक्षा

सचिन सिंह परिहार

समीक्षक

समय से साक्षात्कार: एक सजग कवि की यात्रा

कुछ कृतियाँ पृष्ठों से नहीं, प्रश्नों से बनती हैं – और कुछ कविताएँ केवल पढ़ी नहीं जातीं, जिया जाती हैं। भूपेन्द्र भारतीय (वास्तविक नाम- भूपेन्द्र सिंह परिहार) का पहला काव्य संग्रह 'समय से साक्षात्कार' ऐसी ही एक संवेदनशील साहित्यिक प्रस्तुति है, जिसमें कवि की आत्मा से लेकर समाज के मन तक की यात्रा बड़ी गहराई और सच्चाई से प्रतिबिंबित होती है।

भूपेन्द्र सिंह परिहार पेशे से अधिवक्ता हैं, परंतु उनका रचनात्मक पक्ष उन्हें केवल एक लेखक नहीं, एक सजग सामाजिक विचारक भी बनाता है। व्यंग्य विधा में उनकी पूर्व प्रकाशित कृति 'भिया के तेजस्वी पंखे' को पाठकों और समीक्षकों से सराहना मिली है। 200 से अधिक व्यंग्य-लेखों के बाद यह काव्य-संग्रह उनकी लेखनी के भावात्मक पक्ष का प्रमाण है, जो उन्हें एक संपूर्ण साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

'समय से साक्षात्कार' में 2007 से 2024 तक लिखी गई कविताएँ संकलित हैं। इस संग्रह की प्रमुख विशेषता इसकी विषयवस्तु की विविधता है। नारी विमर्श, राष्ट्र चेतना, किसान की पीड़ा, पर्यावरणीय संकट, जल संकट और आत्मखोज – इन सभी विषयों पर कवि की दृष्टि गहरी, ईमानदार और प्रश्नाकुल है। जल संकट पर लिखी कविता 'बूँदें नदियों की कहाँ' एक ऐसा ही उदाहरण है, जिसमें आधुनिक सभ्यता की पर्यावरणीय लापरवाही

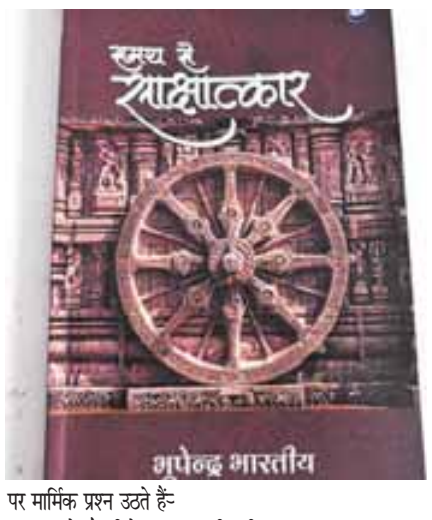

पर मार्मिक प्रश्न उठते हैं-

काटने दौड़ती रेत, पत्थर भरी नदी ।
मानो अब हर अंश पुकारे, बूँदें नदियों की कहाँ?

यह कविता न केवल जल स्रोतों के क्षरण की पीड़ा को उजागर करती है, बल्कि 'बूँद' को प्रतीक बनाकर विकास के नाम पर हो रही विनाशलीला पर भी गहन टिप्पणी करती है।

भूपेन्द्र भारतीय की काव्य शैली मुख्यतः मुक्त छंद की है, जिसमें भाषा की सहजता और भावों की सच्चाई प्रमुख रूप से उपस्थित है। शब्दों में कृत्रिमता नहीं, बल्कि जीवन की अनुभूतियाँ बोलती हैं। कई स्थानों पर प्रतीकों का उपयोग इतना सटीक है कि पाठक ठहरकर उन्हें आत्मसात करने को विवश होता है।

हाँ, यह अवश्य उल्लेखनीय है कि कुछ रचनाओं में विचारों की गहराई के चलते शिल्प थोड़ा जटिल हो जाता है, जिससे सामान्य पाठक को अर्थ ग्रहण में प्रयास करना पड़ सकता है। हालांकि गंभीर पाठकों के लिए यह अनुभव अधिक तृप्तिकर सिद्ध होता है। शीर्षकों में यदि थोड़ी और विविधता होती, तो संग्रह और भी संपूर्ण प्रतीत होता।

'समय से साक्षात्कार' केवल कविताओं का संग्रह नहीं, बल्कि एक संवेदनशील आत्मा का समाज से साक्षात्कार है। यह संग्रह चुप्पियों से संवाद करता है, मन की परतों को खोलता है और कई बार अनकहे को कहने का माध्यम बनता है।

यह काव्य संग्रह सर्व भाषा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है, जिसकी कीमत 180/- निर्धारित है। पुस्तक Amazon पर ऑनलाइन उपलब्ध है, जिससे पाठक इसे सहजता से प्राप्त कर सकते हैं।

विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस

संध्या अग्रवाल

बुजुर्गो के साथ सद्व्यवहार- युवाओं का दायित्व

कभी बैठा करो बुजुर्ग रूपी दरख्तों की छाया में सुना है कि ये अनुभव का खजाना हुआ करते हैं। आज वर्तमान समय में युवा पीढ़ी को ये समझना नितांत आवश्यक है कि बुजुर्ग सम्पूर्ण मानव समाज की अमूल्य धरोहर हैं, उनकी थाती है, जिनके साये में बच्चे पल-बढ़कर युवा हुए। किन्तु समय के साथ पाश्चात्य संस्कृति भारत में भी पैर पसार रही है। सीनियर सिटिजन होम जैसी परंपरा का विदेशों में काफी चलन है। ये चलन हमारे यहाँ भी पाँव पसार चुका है। अक्सर देखा गया है कि बच्चे माता-पिता से दूर कहीं सर्विस करने चले जाते हैं। सर्विस के कारण देश में ही दूर दूसरे शहर में रहने लग जाते हैं या कहीं विदेशों में चले जाते हैं। ऐसे में कई घरों में ये भी देखा गया कि कई बुजुर्ग अपने घर से नहीं जाना चाहते तो वे केयर टेकर केयर सर्वर के भरोसे अपने जीवन के उत्तरार्ध को जीते हैं, इसके विपरीत अकेलेपन के चलते कई बुजुर्ग सीनियर सिटिजन होम में रहना ज्यादा पसंद करते हैं।

न्यूयार्क टाइम्स में एक लेख प्रकाशित हुआ- कि बुजुर्गों के साथ एल्डर स्पीक घटे, इसलिए उनके साथ व्यवहार अच्छा करें, इसमें यह तथ्य उभरकर आया है कि उन्हें अपने बातों से ये महसूस ना कराएं कि वो कमजोर हैं और दूसरों पर निर्भर हैं। इससे बुजुर्ग गुस्सा हो जाते हैं,निराश हो जाते हैं। ऐसे में जब उनको खाना खिलाने की कोशिश करो वो हाथ से धक्का देकर कई बार खाना फेंक देते हैं, कई बार दवाइयाँ फेंक देते हैं।

आशय ये है कि जिन हाथों ने युवाओं को, जब वे बच्चे थे, तब उन्हें ऊँगलियाँ पकड़कर चलना सिखाया, जिनके साये में युवाओं का व्यक्तित्व सृजन हुआ। आज उन बुजुर्ग हाथों को युवा पीढ़ी की जरूरत है। ऐसे में व्यस्तता के कारण युवा उन्हें उतना समय नहीं दे पा रहे तो कम से कम उनकी अच्छी व्यवस्था तो करें। घर में या फिर जहां संभव हो बाकी दूसरी जगहों पर ताकि बुजुर्ग अपनी वृद्धावस्था में खुद को सुरक्षित महसूस कर सकें। आज युवा पीढ़ी की जवाबदारी हो जाती है कि बुजुर्गों को उनके जीवन के उत्तरार्ध के दिन सम्मान पूर्वक जीने देने के लिए उचित व्यवस्था में सक्रिय भागीदार बने।

उनके साथ बातचीत करते समय पेश आने के तरीकों पर ध्यान देना होगा। बुजुर्गों के साथ युवा बातचीत करते समय, उन्हें सम्मानजनक शब्दों से पुकारें, उन्हें बच्चों जैसी तोतली भाषा में बात ना करें, बुजुर्गों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करना बहुत महत्वपूर्ण है। जब बुजुर्गों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करते हैं, इससे उन्हे गरिमा और आत्मसम्मान को बनाए रखने में मदद मिलती हैं। यह महत्वपूर्ण है कि बुजुर्गों को उनकी उम्र और कमजोरी के कारण कम नहीं आंकें, बल्कि उनकी अनुभव और ज्ञान का सम्मान करें।

एल्डर स्पीक का ध्यान रखें। एल्डर स्पीक एक संवाद शैली है जो बुजुर्गों के साथ संवाद करने के लिए उपयुक्त है। इसमें धीमी गति से बोलना, स्पष्ट और सरल भाषा का उपयोग करना, और बुजुर्गों की जरूरतों और भावनाओं को समझने का प्रयास करना शामिल है।

बुजुर्गों के साथ व्यवहार करना एक महत्वपूर्ण विषय है जो हमें उनकी जरूरतों और भावनाओं को समझने के लिए प्रेरित करता है। एल्डर स्पीक एक ऐसा तरीका है जिससे हम बुजुर्गों के साथ संवाद कर सकते हैं और उनकी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं।

जब बुजुर्गों के लिए केयरटेकरझकेयरसर्वर की नियुक्ति करते हैं, तो कुछ सावधानियों का ध्यान रखना चाहिए। इनमें शामिल हैं- केयरटेकर केयरसर्वर में ये गुण हो जैसे- बुजुर्गों की बात सुनने का प्रयास करना - उनके साथ संवाद करने के लिए एल्डर स्पीक का ध्यान रखना, सम्मानजनक भाषा का उपयोग करना,उनकी जरूरतों, भावनाओं और पसंद को समझना, उनकी स्वतंत्रता का सम्मान करना, उन्हें अपने निर्णय स्वयं लेने देना, उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना, उनके साथ धैर्य और सहानुभूति के साथ व्यवहार करना,

केयरटेकर केयर सर्वर के भरोसे छोड़ते समय भी ध्यान रखें कि केयरटेकर केयर सर्वर उनसे दुर्व्यवहार ना करें, अकेले में बुजुर्गों के साथ किसी प्रकार का घृणित कृत्य- धोखा, पैसा छीनना या मारपीट ना करें।

बुजुर्गों के लिए सीनियर सिटिजन होम का चुनाव करते समय यह जरुर देखे की वो उनकी सभी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला सीनियर सिटिजन होम हो। यह एक ऐसा विकल्प है जो बुजुर्गों को सुरक्षित और सुविधाजनक जीवन प्रदान कर सकता है। हालांकि, यह ज्यादा महत्वपूर्ण है कि संभव हो तो बुजुर्गों को उनके परिवार से अलग करने के बजाय, उनके साथ जुड़ने और उनकी जरूरतों को पूरा करने के तरीके ढूंढें। अगर इन सभी त्थ्यों का ध्यान रख हम बुजुर्गों के साथ सद्व्यवहार करेगें तो बुजुर्ग सुख से अपने जीवन की उत्तरार्ध को जी सकेगें।

स्टोलन: देखने लायक क्राईम थ्रिलर

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

फिल्म के लिये एक अच्छे कथ्य के बारे सोचना और उस पर एक अच्छी फिल्म बनाना दोनों बहुत अलग अलग बातें हैं। इस एक सच को आप करण तेजपाल के निर्देशन में बनी डेढ़ घण्टे की फिल्म - ' स्टोलन ' देखकर महसूस कर सकते हैं । इस फिल्म कथ्य यानी थीम तो शानदार है मगर पटकथा की कमज़ोर बुनावट से अपेक्षित प्रभाव नहीं बन पाया फिल्म ' द ठग लाइफ' और ' हाउसफुल फाइव 'की रिलीज़ के साथ ' स्टोलन' गुम न हो जाये इस आशंका के चलते इस फिल्म को बुधवार को रिलीज किया गया । बुधवार की रिलीज़ को हम भरोसे के रुप में भी देख दिख रहा है। सहीदुर्रहमान का काम इस फिल्म में गौर करने लायक है। कास्टिंग डायरेक्टर्स की नजरें उन पर पहले से रही हैं, उनकी इस फिल्म के बाद फीस बढ़नी तय लग रही है ।

अभिनय के मामले में फिल्म समृद्ध है। अभिनेताओं ने अपनी अभिनय क्षमता से इस फिल्म को 'मस्ट वॉच ' (अवश्य देखें) की श्रेणी में ला दिया है । गौतम के रूप में अभिषेक बनर्जी ने उदासीन, घमण्डी, आत्मकेंद्रित मगर आगे जाकर इमोशनल हो जाने वाले चरित्र को बहुत ही जानदार ढंग से निभाया है। अपने भाई गौतम की तुलना में रमन का किरदार शान्त, सौम्य और सामाजिक विषमताओं को लेकर फिक्रमन्द नजर आता है, जिसे शुभम वर्धन ने संयमित और प्रभावशाली ढंग से निभाया है। इन दो दमदार अभिनेताओं के बीच अभिनेत्री मिया मेल्जर एक शक्तिस्वरूपा की तरह उभरती हैं। अगवा की गई बच्ची की माँ के रूप में उसकी दुर्दशा देखते बनती है। मगर वह पूर्वाग्रह से ग्रस्त व्यवस्था और समाज के आगे घुटने टेकने को तैयार नहीं है।

निर्देशक के रुप में करण तेजपाल की यह पहली फिल्म है जो परतदार है और हर परत के साथ रहस्य का एक

सकते हैं । वैसे तो यह एक औसत दरजे की टाइमपास फिल्म है, मगर हॉलीवुड सिनेमा पसन्द करने वाले हिंदी दर्शकों को यह फिल्म कमाल की लग सकती है और यही दर्शक वर्ग इस फिल्म के लिये नब्बे मिनट खपा सकता है।

फिल्म की सबसे बड़ी खामी फिल्म की लचर पटकथा है जो एकदम पूर्व अनुमानित घटना क्रम के अनुसार चलती है। फिल्म सुखांत होगी या दुखांत, इस पर मामला देर तक टिका रहता है, लेकिन अभिषेक बनर्जी का अभिनय आधी फिल्म के बाद पुर असर हो जाता है । अभिषेक की केन्द्रीय भूमिका वाली यह पहली फिल्म है लेकिन युवा मनोज बाजपेयी की जगह ले पाना उनके लिए बहुत मुश्किल है। भीखू म्हात्रे जैसा मानसिक रूप से थका देने वाला किरदार कभी अभिषेक को मिला तो उनका कैरेट भी तभी तय हो जाएगा।शुभम ने बेचैन बालक टाइप का किरदार किया है और अपनी उद्विग्नता से प्रभावित भी किया है। फिल्म में तारीफ के काबिल काम किया है बच्ची की मां बनी मिया मैजलर ने। बीते दस-ग्यारह साल से अपनी पहचान बनाने की कोशिशों में लगी है और मामला अब जाकर जमता अन्तर्प्रवाह है । इस एक अन्तर्प्रवाह से दर्शक का बेचैन होना स्वाभाविक है । फिल्म की कहानी के मुताबिक बच्ची के गायब हो जाने के साथ ही तनाव शुरू हो जाता है और जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती जाती है, यह एक इमोशनल क्राइम-थ्रिलर में तब्दील होने लगती है। निर्देशक ने झुम्पा के किरदार के जरिए मार्मिकता से अमीरी और गरीबी के विभाजन को पेश किया है। इसी खूबी के साथ इंटरनेट पर फैली अफवाहों की भयावहता को भी दर्शाया है। फिल्म सामाजिक और न्याय व्यवस्था के साथ-साथ नैतिकता पर भी सवाल करती है।सुष्मित नाथ का बैकग्राउंड स्कोर कहानी के अनुरूप है। ईशान घोष और सचिन एस पिल्लई का कैमरा वर्क कमाल का है।

सत्य घटना पर आधारित क्राइम-थ्रिलर के शौकीनों के लिए यह एक ग्रिपिंग मूवी हो सकती है।यह क्राइम थ्रिलर फिल्म आपको इमोशनल करने के साथ -साथ बिना किसी भाषणबाजी के यह सन्देश भी दे जाती है कि इंटरनेट मीडिया पर जंगल में आग की तरह फैलने वाली ख़बरों के दुष्परिणाम क्या हो सकते हैं.जिस वजह से यह फिल्म ज़रूर देखी जानी चाहिए।

ट्रांसफॉर्मर में लगी आग, बिजली आपूर्ति बाधित

बैतूल। शहर के रैन बसेरा चौक पर शुक्रवार रात एक ट्रांसफॉर्मर में अचानक आग लग गई। यह ट्रांसफॉर्मर चौपाटी के पास लगा था। लोगों ने बिजली विभाग और पुलिस को सूचना दी। कुछ ही देर में फायर ब्रिगेड की टीम भी मौके पर पहुंची। सुरक्षा के लिहाज से क्षेत्र

की बिजली सप्लाई तत्काल बंद कर दी गई। इससे आग को फैलने से रोका जा सका। दमकल कर्मियों ने कुछ ही समय में आग पर काबू पा लिया। किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है, लेकिन ट्रांसफॉर्मर पूरी तरह जल गया। बिजली विभाग के एई टाउन घनश्याम धुर्वे ने बताया कि आग लगने की प्राथमिक वजह ट्रांसफॉर्मर से निकली चिंगारी और उसके नीचे जमा सूखी पत्तियां रहीं। उन्होंने बताया कि शहर में बिजली फुल लोड पर चल रही है, जिससे उपकरणों पर दबाव बढ़ा है। घटना के बाद क्षेत्र की बिजली आपूर्ति कुछ देर बाधित रही। सुबह बिजली विभाग ने ट्रांसफार्मर बदलकर सप्लाई बहाल कर दी है। आग लगने के कारणों की तकनीकी जांच अभी जारी है।

मुलताई में दो भाइयों ने की किसान की हत्या

बैतूल। मुलताई थाना क्षेत्र के ग्राम बोरपेंड में जमीन सीमांकन के दौरान हुए विवाद में एक बुजुर्ग की मौत हो गई। मृतक की पहचान सालकराम उइके (63) के रूप में हुई है। घटना 27 मई को हुई, जब सीमांकन के लिए राजस्व विभाग की टीम मौके पर पहुंची थी। इसी दौरान माणिकराव आहके (35) और उनके बड़े भाई बालकराम आहके (38) ने सालकराम पर हमला कर दिया। आरोपियों ने पहले सालकराम को सीढ़ियों से धक्का दिया। फिर उनके सिर पर डंडे से वार किया। गंभीर हालत में सालकराम को पहले आठनेर अस्पताल ले जाया गया। बाद में उन्हें बैतूल जिला अस्पताल और फिर भोपाल रेफर किया गया। दो सप्ताह तक चले इलाज के बाद शनिवार को उनकी मौत हो गई। मासोद चौकी प्रभारी वंशज श्रीवास्तव के अनुसार पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर लिया है। दोनों ही आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस द्वारा कार्रवाई शुरू कर दी गई है। ग्रामीणों के मुताबिक, दोनों पक्षों के बीच वर्षों से जमीन बंटवारे को लेकर विवाद चल रहा था। पुलिस मामले में जांच कर रही है। मारपीट को लेकर पुलिस द्वारा पहले ही मारपीट का प्रकरण दर्ज किया जा चुका था।

स्वतंत्रता सेनानी कृष्णा मोदी को दिया गार्ड ऑफ ऑनर

बैतूल। सारणी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कृष्णा मोदी का शुक्रवार शाम निधन हो गया था। उन्होंने 97 साल की उम्र में अंतिम सांस ली। सुबह उनकी तबीयत बिगड़ने पर परिजन जिला अस्पताल लेकर पहुंचे थे। हार्ट प्रॉब्लम सामने आने पर नागपुर रेफर करने की तैयारी की जा रही थी, लेकिन इलाज के दौरान ही उनका निधन हो गया। शनिवार को पाथाखेड़ा में राजकीय सम्मान के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी गई।

मुखाग्नि उनके दोनों पोते शिवम और पंकज मोदी ने दी। राजकीय सम्मान के तहत प्रशासन और पुलिस अधिकारियों की मौजूदगी में गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इस दौरान एडीएम राजीव नंदन श्रीवास्तव और पुलिस प्रशासन से मयंक तिवारी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। प्रशासन ने परिजनों को 10 हजार रुपए की सम्मान निधि भी दी। इस दौरान डब्ल्यूसीएल के महाप्रबंधक लक्ष्मीकांत पात्रा, बीएमएस के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. बसन्त रॉय, नगर पालिका अध्यक्ष किशोर वरदे और भाजपा जिला महामंत्री कमलेश सिंह, एटक नेता श्रीकांत चौधरी समेत कई नेता और पाथाखेड़ा सहित आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रमिक संगठन के लोग मौजूद थे।

जर्जर सरकारी स्कूलों की मरम्मत के लिए नहीं मिला बजट

जर्जर बारिश में टपकती छतों के बैठकर होगी पढ़ाई

संजय द्विवेदी, बैतूल। नवीन शैक्षणिक सत्र की 16 जून से पुन: शुरूआत हो जायेगी यानि सोमवार से स्कूल खुल जायेंगे और अभी तक स्कूलों की मरम्मत नहीं हुई है। जबकि जिले के सरकारी स्कूल मरम्मत के अभाव में जर्जर हो गये है। कई स्कूलों की स्थिति ज्यादा खराब है। स्कूलों की मरम्मत के लिए जिला शिक्षा केंद्र ने शासन को प्रस्ताव भी भेजा है, पर बजट मंजूर नहीं किया है। ऐसे में बच्चों को स्कूलों की टपकती छत और जर्जर स्कूल भवनों में ही बैठकर पढ़ाई करनी होगी। दरअसल जिले के 624 स्कूलों को मरम्मत की जरूरत है। इनमें अति आवश्यक मरम्मत वाले स्कूलों की संख्या 146, आवश्यक मरम्मत वाले 367, सामान्य मरम्मत वाले 111 स्कूल शामिल हैं। जिनकी मरम्मत के लिए लंबे समय से बजट की मांग की जा रही है। लेकिन राशि नहीं मिलने और मरम्मत के अभाव में स्कूल भवनों की हालत पहले से भी और बदत्तर होते जा रही है। इधर अभिभावकों का आरोप है कि सरकार एक तरफ बच्चों को स्कूल भेजने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर रही है और सीएम राइज जैसे बड़े-बड़े स्कूल भवनों के निर्माण के लिए करोड़ों का बजट जारी किया जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ जिले के 624 सरकारी स्कूलों की मरम्मत के लिए बजट तक पास नहीं किया है। जिससे बच्चों को अव्यवस्थाओं के बीच बैठकर पढ़ाई करनी होगी।

89 स्कूलों की मरम्मत को मिली मंजूरी पर बजट नहीं- स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों की मरम्मत के लिए अलग से बजट दिया जाता है। पिछले साल भेजे गए प्रस्तावों में 89 स्कूलों की मरम्मत के लिए मंजूरी तो मिल गई हैं, लेकिन अभी तक बजट नहीं मिला है। जबकि 16 जून से स्कूल शुरू हो जाएंगे और जल्द ही मानूसन की बारिश भी शुरू हो जायेगी। ऐसे में छात्रों को टपकती छत के नीचे पढने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। बताया गया कि स्कूलों की मरम्मत के लिए जिला शिक्षा केंद्र ने 600 से अधिक स्कूलों का प्रस्ताव बनाकर भेजा हैं लेकिन सरकार द्वारा चंद स्कूलों की मरम्मत के लिए ही मंजूरी दी गई है।

बारिश के समय छत टपकने से कक्षाओं में बैठना तक मुश्किल- शिक्षा व्यवस्था को लेकर शासन के दावों की हकीकत विपरीत है। कई सरकारी स्कूलों की बिल्डिंग जर्जर हो चुकी है, उन्हें लंबे समय से मरम्मत की दरकार है। लेकिन बजट का अभाव बना हुआ है। हालात यह है कि जर्जर स्कूल भवनों की वजह से बच्चे डर के साये में बैठकर पढ़ाई करते है। यहीं हाल शिक्षकों के भी है। कई स्कूलों की दीवार का प्लास्टर झड़ रहा है और बिल्डिंग की नींव कमजोर होते जा रही है। बिल्डिंग गिरने की हालात में है। स्कूल का जर्जर भवन बरसात में बच्चो के लिए मुसीबत बन सकता है। बारिश में स्कूल की छत से पानी टपकता है। इसके बाद भी विभाग के अफसरों ने सरकारी स्कूल भवन की मरम्मत या नये भवन के निर्माण के लिए कोई ठोस योजना नहीं बनाई।

ब्लॉक जर्जर आवश्यक सामान्य
आमला 12 20 43
आठनेर 25 44 06
बैतूल 13 30 32
भैंसदेही 11 39 05
भीमपुर 07 96 00
चिचोली 26 21 01
घोड़ाडोंगरी 09 52 03
मुलताई 02 12 00
प्रभातपट्टन 10 29 15
शाहपुर 31 24 06
योग 146 367 111

इनका कहना है -

स्कूलों की मरम्मत के लिए कोई राशि अभी तक नहीं आई है। शिक्षा विभाग से इस साल कंपोजिट ग्रांट की राशि का 25 प्रतिशत मिला है। राशि का वितरण शालाओं में दर्ज संख्या के अनुपात में किया जाता है। जैसे ही स्कूलों की मरम्मत के लिए राशि आती है, मरम्मत का कार्य शुरू करवा देंगे।

- जितेंद्र भनारिया,
डीपीसी, जिला शिक्षा केंद्र बैतूल

उपनिषद की तरंग जैसी है जनपरिषद: इंटरनेशनल मॉडल विद्या जोशी पटेल

जनपरिषद सम्मान समारोह में सराहनीय कार्य करने वालों का हुआ सम्मान

बैतूल/भौंरा। अग्रणी संस्था जन-परिषद का 36 वां वार्षिक उत्सव समारोह आयोजित हुआ। जिसमें एयर मार्शल प्रमोद कुमार श्रीवास्तव ने कहा है कि युवाओं को संस्कारी बनाना समाज की जिम्मेदारी है। नये युग के बच्चों को छोटे-छोटे संस्कार देकर उज्ज्वल भविष्य और नये भारत का निर्माण किया जा सकता है। बी यूनिक इंटरनेशनल मिसेस दुबई, मोस्ट पापुलर फेस ऑफ आबूधाबी, लोकप्रिय रनवे मॉडल एवं एक्ट्रेस सुश्री विद्या जोशी पटेल ने संस्था की प्रशंसा करते हुए कहा कि उपनिषद सी है जन-परिषद संस्था। यह संस्था लोगों के द्वारा लोगों के लिये काम करती है। वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. निर्भय श्रीवास्तव ने भी समारोह को संबोधित किया। वरिष्ठ साहित्यकार जीवन सिंह रजक ने कहा कि भारतीय संस्कृति में सामाजिक संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। इस तरह की संस्थाएँ नई पीढ़ी को परम्पराएँ सिखाती हैं। कार्यक्रम में व्यंग्य संग्रह व्यंग्य भए क्वारंटाइन और जन-परिषद की स्मारिका का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन रामजी श्रीवास्तव और आभार प्रदर्शन अजय श्रीवास्तव नीलू ने किया। समारोह में सुश्री विद्या जोशी पटेल को ब्यूटी ब्रिलिएंट ऑफ एशिया सम्मान, एडिशनल एस.पी. श्रीमती कमला रावत को लक्ष्मी रायकवार स्मृति सम्मान, श्रीमती भावना डेहरिया को प्रिन्सेस ऑफ हाइट सम्मान, डॉ. प्रवीण दाताराम को माँ प्रभा देवी सम्मान, डॉ. निर्भय श्रीवास्तव को राजकमल एक्सीलेन्सी सम्मान से सम्मानित किया गया, वहीं बैतूल जिले के भौंरा के वरिष्ठ पत्रकार स्व. केके अग्निहोत्री की स्मृति में रऊफ खान लाला को केके अग्निहोत्री सम्मान से सम्मानित किया गया। इसी प्रकार जीवन सिंह रजक को कवि प्रदीप चौबे सम्मान, एडवोकेट मनीष त्रिपाठी को जस्टिस पी.के. तारे सम्मान, शरद फाउण्डेशन को कुलभूषण दिल्लौरी सम्मान, श्रीमती तृप्ति शिन्दे मिसेस यूनिवर्स को चार्मिंग पर्सनालिटी, रागिनी द्विवेदी लखनऊ मिस इंडिया को फोटोजेनिक पर्सनालिटी और दिव्या चौधरी भोपाल मिसेस इंडिया को लुमिनस आइस से नबाजा गया। अप्रिशिएसन के लिए जितेन्द्र पुरोहित, अंकलेश्वर दुबे (अन्नी भैया) और नवीन पालीवाल को सम्मानित किया गया। वेस्ट चैप्टर के लिये आष्ठा, दमोह और मुलताई की जन-परिषद संस्था को सम्मान दिया गया। सर्वश्री राजेश गुप्ता, विनोद श्रीवास्तव, नितिन श्रीवास्तव, अजय श्रीवास्तव नीलू और दुर्गेश रायकवार को भी उनके कार्यों की सराहना के लिये सम्मानित किया गया।

जन परिषद् भोपाल ने किया प्रवीण गुगनानी का सम्मान

बैतूल। अग्रणी एवं प्रसिद्ध स्वयंसेवी संस्था जन परिषद् ने शुक्रवार को एक प्रतिष्ठापूर्ण आयोजन में बैतूल के लेखक प्रवीण दाताराम गुगनानी का सम्मान किया है। पुलिस हेडक्वार्टर्स, भोपाल के पारिजात सभागार में आयोजित जन परिषद् के 36 वें स्थापना समारोह में कई दिग्गज हस्तियों की उपस्थिति के मध्य प्रवीण को उनके कार्यों हेतु सम्मानित किया गया। प्रवीण दाताराम को एयर

मार्शल प्रमोद श्रीवास्तव एवं मिस दुबई किरण जोशी से सम्मान चिह्न दिलवाते समय जन परिषद् के आधार स्तंभ रामजी श्रीवास्तव ने भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए प्रवीण के उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएं दी। इस भव्य कार्यक्रम में मंच पर भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय, एयर मार्शल प्रमोद श्रीवास्तव, मिस दुबई एवं एक्ट्रेस सुश्री विद्या जोशी एवं जनपरिषद् के अध्यक्ष एवं पूर्व पुलिस कमिश्नर एन के त्रिपाठी एवं जन परिषद् के आधारस्तंभ रामजी श्रीवास्तव आदि उपस्थित थे। जन परिषद् से प्रतिष्ठापूर्ण सम्मान प्राप्त होने पर बैतूल जिले के समस्त मित्रों, शुभचिंतकों ने प्रवीण को बधाइयाँ प्रेषित की है।

गंज के प्राचीन कुएं की सफाई शुरू

गंज व्यापारियों ने व्यक्त किया नपाध्यक्ष का आभार

बैतूल। गंज का प्राचीन कुंवा जो क्षेत्र का एक मात्र जल आपूर्ति का स्रोत था विगत कई वर्षों से रख रखाव के अभाव में उपेक्षा का शिकार हो रहा था, कुछ स्थानीय लोग उसमें कचरा और गंदगी डालकर उसे दूषित कर रहे थे।जिसकी शनिवार सुबह से नगरपालिका कर्मचारियों द्वारा सफाई शुरू कर दी गई।

व्यापारी संघ कैट के प्रचार सचिव राजेश मदान ने बताया कि गंज के व्यापारियों, समाजसेवियों व श्री कृष्ण पंजाब सेवा समिति द्वारा विगत कई वर्षों से गंज मंडी में श्री कृष्ण मंदिर और रामलीला मंच के बीच स्थित लगभग 100 वर्ष पुराने कुंवे की सफाई कर उसे जाली से कवर्ड किए जाने की मांग की जा रही थी। जिस पर नपाध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर ने तत्काल संज्ञान लेते हुए शहर के कई जल कूपों का निरीक्षण करवाकर स्टीमेट बनवाया और कार्यादेश जारी कर दिए है।

श्री मदान ने बताया कि विगत 25 वर्ष पूर्व शहर में हुए जल संकट के समय गंज स्थित सूखे कुंवे में राजेंद्र सिंह चौहान ने श्री रामायण मंडल गंज द्वारा सुन्दरकाण्ड का पाठ करवाकर भगवान से अच्छी बारिश हेतु प्रार्थना की गई थी जिसके परिणाम स्वरूप शहर में जोरदार बारिश भी हुई थी। कुएं की सफाई करवाकर उसके गहरीकरण और कवर्ड के कार्यादेश जारी कर उसके संरक्षण हेतु कैट के जिलाध्यक्ष मनोज भार्गव, सचिव दीपक खुराना, कोषाध्यक्ष मनोज मेहता, प्रचार सचिव राजेश मदान, किराना एवं जनरल व्यापारी संघ के अध्यक्ष बंटी मोटवानी, दीपक सलूजा, अमीर झाम, बलवंत मदान, अशोक मदान, दीपक गुगनानी, राजेंद्र सिंह चौहान, कज्जू राठौर, अर्जुन राठौर, महेश पालीवाल, राजेश अग्रवाल, रूपेश सुरे, आशीष राठौर सहित अन्य व्यापारियों ने नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर व नगरपालिका प्रशासन का आभार व्यक्त किया है।

लोगों को रक्तदान के लिए जागरूक करने निकाली रैली

जागरूकता गीतों के माध्यम से रक्तदान करने के लिए लोगों को किया प्रेरित

बैतूल। स्वास्थ्य विभाग द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को नपाध्यक्ष बैतूल श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर के मुख्य आतिथ्य में वाहन रैली का आयोजन किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुरमाडे ने बताया कि इस वर्ष की थीम रक्त दो, उम्मीद दो, साथ मिलकर हम जिंदगियां बचा सकते हैं निर्धारित की गई है। विश्व रक्तदान दिवस के अवसर पर लोगों को रक्तदान के लिए जागरूक करने के उद्देश्य से प्रात: 9 बजे ओपन ऑडिटोरियम बैतूल से रैली निकाली गई। स्वास्थ्य विभाग, मां शारदा सहायता समिति, रेडक्रास सोसायटी एवं जिले की समस्त रक्तदाता समितियों के संयुक्त तत्वावधान में मशाल जलाकर जागरूकता प्रसारित की गई। रैली में रक्तदान जागरूकता गीतों के माध्यम से आमजन से रक्तदान करने की अपील की गई। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर ने कहा कि रक्तदान महादान माना जाता है, क्योंकि रक्तदान से लोगों को नई जिंदगी मिलती है और समाज रक्तदाता के इस सराहनीय कार्य को हमेशा याद रखता है। रक्तदान से न तो शरीर में बीमारी आती है न शरीर कमजोर पड़ता है। इसलिये हम सभी को रक्तदान अवश्य करना चाहिये। विधायक प्रतिनिधि स्वास्थ्य डॉ.अशोक बारंगा ने बताया कि रक्तदान से एचआईव्ही होने का खतरा नहीं होता है। रक्तदान करने से हृदयाघात होने की संभावना कम होती हैं, क्योंकि रक्तदान से खून का थक्का नहीं जमता, खून कुछ मात्रा में पतला हो जाता है। वजन कम करने में मदद मिलती है, शरीर में नये ब्लड सेल्स बनने के कारण तंदुरुस्ती आती है। लिवर से जुड़ी समस्याओं से राहत मिलती है, आयरन की मात्रा संतुलित रहती है, कैंसर का खतरा कम रहता है, इसलिये जीवन रक्षा के लिए रक्तदान अवश्य करें।

रक्तदान से दो चेहरों पर खिलती है मुस्कुराहट- सीएमएचओ डॉ मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि विश्व रक्तदाता दिवस जरूरतमंद व्यक्तियों के लिये रक्त की जरूरत को पूरा करने के लिये मनाया जाता है। प्रत्येक वर्ष ऐसे अभियानों से अनेकों लोगों की जान बचती है और अन्य लोगों के हृदयों में रक्तदान के प्रति प्रेरणा की अलख भी जाग जाती है। रक्तदान से दो चेहरों पर मुस्कुराहट खिलती है- एक रक्तदान करने वाले व्यक्ति के चेहरे पर और दूसरा रक्त प्राप्त करने वाले व्यक्ति के चेहरे पर, इसलिये हमारा प्रयास होना चाहिये कि हम सदैव मुस्कुराहट के साथ रहें। किसी की जिंदगी बचाकर हम एक नेक कार्य करते हैं। सिविल सर्जन डॉ जगदीश घोरे ने बताया कि महान वैज्ञानिक कार्ल लेण्डस्टाइन का जन्म 14 जून 1868 को हुआ था और उन्होंने मानव रक्त में उपस्थित एग्ल्यूटिनिन की मौजूदगी के आधार पर रक्तकणों ए,बी, और ओ. रक्त समूह की पहचान की थी। रक्त के इस वर्गीकरण ने चिकित्सा विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी खोज के लिये कार्ल लेण्डस्टेन को 1930 में नोवल पुरस्कार दिया गया। इसलिए उनकी याद में पूरा विश्व रक्तदाता दिवस मनाता है। रक्तदान मानव संतुष्टि है।

रक्तदान करने के पूर्व इन बातों का रखें ध्यान- जिला रक्तकोष अधिकारी डॉ अंकिता सिते ने बताया कि रक्तदान से पहले कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिये- रक्तदाता का वजन 45 से 50 किलोग्राम से कम न हो, 18 वर्ष की आयु के बाद ही रक्तदान करें, रक्त देने से 24 घण्टे पहले से ही शराब, धूम्रपान और तंबाकू का सेवन न करें, स्वयं की मेडिकल जांच करा लें, सुनिश्चित करें कि आपको कोई बीमारी न हो, रक्तदान करने से पहले अच्छी नींद ले, तला हुआ खाना और आइसक्रीम न खायें। आवाज दो जिंदा हैं टीम द्वारा लल्ली चौक पर पुष्प वर्षा कर रैली का स्वागत किया गया। पीएम श्री एक्सीलेंस शासकीय महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ मीनाक्षी चौबे द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के दल एवं स्टाफ के साथ रैली का स्वागत किया गया। मेडिटेक इंस्टीट्यूट बैतूल के सभी विद्यार्थियों द्वारा हाथों में रक्तदान जागरूकता की तख्तियां लेकर आमजन को रक्तदान के लिये जागरूक किया गया। ओपन ऑडिटोरियम में उपस्थित समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं रक्तदान समिति के सदस्यों, छात्र-छात्राओं द्वारा अहमदाबाद विमान दुर्घटना में मृतक यात्रियों को श्रद्धांजलि स्वरूप मौन रखा गया एवं रक्तदान जागरूकता की शपथ भी ली गई। जिला चिकित्सालय बैतूल में अहमदाबाद विमान दुर्घटना में दिवंगत हुए यात्रियों के लिये रक्तदान कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। रक्तकोष द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार दोपहर तक 16 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

चोरी के आरोपी से 1 लाख रुपये का मशरूका बरामद

बैतूल। कोतवाली पुलिस ने नकबजन (चोरी) के आरोपी दीपक उर्फ टशन राजपूत को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी के कब्जे से 20 नग सोने के मोती, जिसकी कीमत लगभग एक लाख रूपये है, बरामद किए गए हैं। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार 13 नवंबर 2023 को फरियादी चन्दनवाला गोठी पति अभय कुमार गोठी, निवासी गोठी कॉलोनी मोती वार्ड बैतूल द्वारा रिपोर्ट की गई थी कि अज्ञात आरोपी द्वारा उसके घर से सोने-चांदी के जेवरात चोरी कर लिए गए हैं। रिपोर्ट पर कोतवाली थाना में धारा 457, 380 भादंवि के तहत प्रकरण दर्ज कर विवेचना में लिया गया। प्रकरण में पूर्व में दो विधि विरुद्ध बालकों को गिरफ्तार कर किशोर न्यायालय बैतूल में प्रस्तुत किया जा चुका है। उक्त बालकों के कब्जे से लगभग 3,60,000 कीमत के जेवरात (1 सोने की चेन, 1

अंगूठी, 1 जोड़ी सोने के झाले, 1 लेडीज अंगूठी) पूर्व में जप्त किए जा चुके हैं। उनके अन्य साथी दीपक उर्फ टशन राजपूत पिता सुरेन्द्र राजपूत निवासी टावर मोहल्ला पिपरिया को गिरफ्तार कर न्यायालय से पुलिस रिमांड प्राप्त किया गया। पूछताछ के दौरान आरोपी के कब्जे से 20 नग सोने के मोती, कीमत लगभग एक लाख रूपये बरामद किए गए। इस कार्रवाही में निरीक्षक रविकांत डेहरिया, उनि पंचम सिंह उईके, आर. नितिन चौहान, प्र.आर. महेन्द्र, प्र.आर. तरुण पटेल, प्र.आर. शिव कुमार की सराहनीय भूमिका रही।

बरहापुर में महिला सरपंच के साथ मारपीट, जान से मारने की धमकी

ग्रामीणों ने एसपी से की शिकायत, दबंगों पर कार्रवाई की मांग

बैतूल। अब ग्राम पंचायत के जनप्रतिनिधि भी गांव में सुरक्षित नहीं हैं। ग्राम पंचायत बरहापुर में महिला सरपंच के साथ सरेआम दुर्व्यवहार मारपीट करने का मामला सामने आया है। इस मामले में ग्रामीणों ने पुलिस अधीक्षक से शिकायत की है। भैंसदेही तहसील के इस गांव की सरपंच दुर्गा पति तुलसीराम चतुरकर जब दो पक्षों के बीच जमीन विवाद को सुलझाने पहुंचीं, तो मौके पर मौजूद दबंगों ने उनके साथ गालीगलौज करते हुए हाथापाई की। यहां तक कि सरपंच की साड़ी पकड़कर उन्हें गिरा दिया गया और जान से मारने की धमकी दी गई। घटना के संबंध में सरपंच दुर्गा चतुरकर ने एसपी कार्यालय पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने बताया कि वे अपने घर पर थीं, तभी लिलाबाई बघेल नामक महिला उनके घर पहुंची और कहा कि उसके देवर उसे मकान बनाने के लिए जमीन में बराबरी से हिस्सा नहीं दे रहे हैं। सरपंच दुर्गा चतुरकर मामले को सुलझाने के लिए मौके पर गईं, जहां शुरुआत में सभी पक्ष बातचीत के लिए तैयार हो गए थे। लेकिन कुछ ही देर में माहौल बदल गया। मौके पर मौजूद संगीता बाई बघेल, संजु पिता बिसनु, सौरभ पिता अशोक और अशोक पिता बिसनु ने पहले लिलाबाई को गालियां देना शुरू कर दिया। जब सरपंच ने उन्हें रोका और समझाइश दी, तो चारों ने मिलकर सरपंच को ही अपशब्द कहना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा सरपंच होगी अपने घर की, हमारी बात में क्यों टांग अड़ा रही है। इसके बाद अनावेदकों ने सरपंच को धक्का देकर गिरा दिया और साड़ी पकडक़र खींचा। सरपंच के साथ हाथापाई भी की गई, जिससे उन्हें हाथ-पैर में चोटें आईं। यही नहीं, जान से मारने की धमकी देते हुए अनावेदकों ने कहा अगर हमारे बीच आई, तो तुझे खत्म कर देंगे। घटना से आहत सरपंच ने अन्य ग्रामीणों के साथ एसपी कार्यालय पहुंचकर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि गांव में अगर पंचायत प्रतिनिधियों को ही अपमानित किया जाएगा और उनकी सुरक्षा नहीं होगी, तो आम लोगों की समस्याओं को कैसे सुलझाया जा सकेगा। ग्रामीणों की मांग है कि दोषियों पर तत्काल एफआईआर दर्ज कर सख्त कार्रवाई की जाए, ताकि पंचायत की गरिमा बनी रहे और जनता का विश्वास बहाल हो सके। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि यह घटना लोकतांत्रिक व्यवस्था पर हमला है, महिलाओं के सम्मान के खिलाफ भी एक गंभीर अपराध है।

संजय कपूर

जिस खेल को खेलते हुए संजय कपूर का निधन हुआ, उस खेल के वे काफी शौकीन थे। उन्हें अकसर पोलो खेलते और घोड़ों के साथ वक्त बिताते हुए देखा जाता था और अब उसी पोलो को खेलते हुए उनकी जान चली गई। संजय कपूर काफी पढ़े-लिखे थे। पढ़ाई पूरी करने के बाद अपने पिता का बिजनेस संभाला। उनके पिता सुरिंदर भारत के ऑटो कंपोनेंट इंडस्ट्री में अग्रणी थे।

पोलो खेलते हुए दुनिया से चले गए

एकता शर्मा

करिश्मा कपूर के पूर्व पति और सोना कॉमस्टार के चेयरमैन संजय कपूर का 12 जून की रात निधन हो गया। इस खबर से हर कोई सन्न रह गया। जब उनका निधन हुआ वे इंग्लैंड में थे और पोलो खेल रहे थे। पोलो खेलते समय घोड़े पर सवार थे, तो उनके मुंह में मधुमक्खी चली गई। इ के बाद उन्हें सांस लेने में तकलीफ होने लगी और फिर उन्हें हार्ट अटैक आ गया। तुरंत ट्रीटमेंट मिलने के बावजूद भी बिजनेसमैन को बचाया नहीं जा सका।

संजय कपूर का निधन सिर्फ उनके परिवार के लिए ही नहीं, बल्कि बिजनेस जगत के लिए भी एक बड़ा झटका है। हालांकि, अभी तक संजय के परिवार ने कोई बयान जारी नहीं किया, लेकिन उनकी कंपनी ने एक स्टेटमेंट जारी किया है। संजय कपूर के निधन की खबर सुनने के बाद करिश्मा कपूर की बहन करीना कपूर, उनके पति अभिनेता सैफ अली खान, एक्ट्रेस की बेस्ट फ्रेंड मलाइका अरोड़ा, अमृता अरोड़ा इस दुख की घड़ी में करिश्मा को

संभालने के लिए उनके घर पहुंचीं। इसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर काफी तेजी के साथ वायरल हुआ।

करिश्मा कपूर के पूर्व पति संजय कपूर काफी पढ़े-लिखे थे। उन्होंने सबसे पहले देहरादून के दून स्कूल से लेकर मुंबई के द कैथेड्रल और जॉन कॉनन स्कूल से अपनी शुरुआती पढ़ाई पूरी की। इसके बाद वे आगे की पढ़ाई करने के लिए विदेश चले गए। उन्होंने लंदन से कॉर्पोरेट स्ट्रेटेजी और एचआर में बीबीए किया था। संजय ने एमआईटी और हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से प्रेस्टीजियस एग्जीक्यूटिव कोर्स किए। उनकी इन योग्यताओं ने एक बिजनेस लीडर के रूप में उनके कौशल को और निखारा।

संजय कपूर ने पढ़ाई पूरी करने के बाद अपने पिता का बिजनेस संभाला। उनके पिता सुरिंदर भारत के ऑटो कंपोनेंट इंडस्ट्री में अग्रणी थे। उन्होंने सोना ग्रुप की स्थापना की, जो ऑटोमोटिव पार्ट्स बनाता है। संजय ने साल 2003 में अपने पिता की कंपनी जॉइन की और फिर ऑटोमोटिव की दुनिया में ग्लोबल लेवल पर अपनी पहचान बनाई। संजय कपूर सोना कॉमस्टार के चेयरमैन थे और फोर्ब्स 2025 के आंकड़ों के अनुसार, उनकी नेट वर्थ 1.1 बिलियन यूएस डॉलर थी। उनकी भारत और विदेशों में प्रीमियम प्रॉपर्टीज थीं। इसके अलावा उन्होंने टेक और मैन्युफैक्चरिंग स्टार्टअप्स में उनका निवेश था।

संजय कपूर ने तीन शादियां की थी। उनकी पहली शादी डिजाइनर नंदिता महतानी से 1996 में हुई। हालांकि, दोनों के रास्ते साल 2000 में अलग हो गए। इसके बाद उन्होंने साल 2003 में एक्ट्रेस करिश्मा कपूर से शादी की और इंडस्ट्री में छा गए। एक्ट्रेस संग भी उनका रिश्ता ज्यादा नहीं चल पाया और 2016 में दोनों का तलाक हो गया। तलाक के दौरान एक्ट्रेस ने बिजनेसमैन पर कई गंभीर आरोप भी लगाए गए थे। इसका बाद संजय ने तीसरी शादी साल 2017 में मॉडल प्रिया सचदेव से की।

उनकी पहली वाइफ से उन्हें कोई बच्चा नहीं था। इसके बाद करिश्मा कपूर और संजय के दो बच्चे बेटी समायरा और बेटा कियान। वहीं, प्रिया सचदेवा की पहले से एक बेटी थी, जिसका नाम सफीरा चटवाल है। ऐसे में संजय और प्रिया की शादी होने के बाद वह सफीरा के स्टेप फादर बन गए। फिर प्रिया और संजय ने साल 2018 में अपने बेटे अजारियस का स्वागत किया। ऐसे में संजय कपूर के चार बच्चे हैं।

वे सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहते थे और वहां देश-विदेश से जुड़े कई मुद्दों पर अपना रिएक्शन देते थे। अपने निधन से चंद घंटों पहले उन्होंने 'एक्स' पर अहमदाबाद में हुए एयर इंडिया के प्लेन क्रैश को लेकर पोस्ट कर अपना दुख जाहिर किया था। इसके अलावा उन्होंने चार दिन पहले एक ऐसा पोस्ट किया, जो उनकी मौत के बाद वायरल हुआ।

रियल बॉक्स

परदे पर कई कहानियां कहती है फिल्मी बरसात

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

सावन और सिनेमा का एक खास रिश्ता रहा है। बरसात के प्रति फिल्मकारों का प्रेम इसी से झलकता है कि उन्होंने बरसात को केंद्र में रखकर कई यादगार फ़िल्में बनाई और आज भी बनाई जा रही है। बरसात ने ही गीतकारों और फिल्मकारों की कल्पनाशीलता को एक नई उड़ान दी। रोमांस, विरह, चुहलबाजी और मनुहार को दर्शाने के लिए फिल्मकारों ने बरसात को जरिया बनाया। ऐसे में संगीतकारों और गीतकारों ने भी अद्भुत सौंदर्य परख और काव्यानुभूति का परिचय देते हुए बरसात के गानों को यादगार बना दिया। बरसात सिर्फ गानों में ही दिखी, ऐसा नहीं है। बरसात ने फिल्मों में पात्र की तरह भी कमाल दिखाया है। कभी कहानी में ट्विस्ट लाना हो या क्लाइमेक्स को रोमांचक बनाना हो, बरसात हिट फार्मूला साबित हुई है। कई फिल्मकारों ने बरसात का उपयोग मौके की नजाकत को उभारने के लिए किया। कुछ फिल्मों में बरसात मधुर मिलन और खुशी की सूत्रधार बनी तो कुछ फिल्मों नायक नायिका को जुदा कराने वाली खलनायिका बन बैठी!

मानव मन की तमाम भावनाओं जैसे हर्ष, व्यथा, रोमांस, प्रतिशोध, हिंसा को व्यक्त करने के लिए हिंदी फिल्मों में बारिश को सशक्त माध्यम की तरह इस्तेमाल किया जाता रहा। फिल्मों में नायक-नायिकाओं और अन्य चरित्रों, परिस्थितियों और मनोदशाओं को व्यक्त करने के लिए बारिश का सहारा लिया गया। 'बरसात की एक रात में भारत भूषण को मधुबाला के दीदार कराने का श्रेय बरसात को ही जाता है। कई फिल्मों में हीरो बरसात में बस-स्टॉप पर खड़ी हीरोइन को देखते ही प्यार कर बैठता है। कुछ फिल्मों में बरसात में एक ही जगह फंसे नायक-नायिका कट्टर दुश्मनी होने के बावजूद प्यार करने लगते हैं। 'हिना' की कहानी की दिशा बारिश ने ही तो बदली थी। तेज बारिश के चलते ही ऋषि कपूर अपनी मंगेतर के पास जाने की बजाए पाकिस्तान की हिना यानी जेबा बख्तियार के पास पहुंच जाता है। 'मैंने प्यार किया' में नायक सलमान खान जीतोड़ मेहनत से जमा किए जब पैसे नायिका के पिता को देने जा रहा है, तो विलेन अपने गैंग के साथ उसे बरसात में मारता-पीटता है।

राज कपूर की तो करीब सभी फिल्मों में बरसात के दृश्य देखने को मिलते रहे। 'बरसात' के बाद आवारा, मेरा नाम जोकर और 'सत्यम शिवम सुंदरम' के बरसाती दृश्य आज भी उस दौर के दर्शकों को याद आते होंगे। राज कपूर की फिल्म 'श्री 420' में बरसते पानी में छाते के आदान-प्रदान को लेकर गीत 'प्यार हुआ इकरार हुआ, प्यार से फिर क्यूं डरता है दिल' फिल्माया गया। राजकपूर और नरगिस ने एक-दूसरे की आंखों में गहराई से झांकते हुए बरसते पानी के बीच जिस तरह एक-दूसरे को छाता देकर बारिश से बचाने का प्रयास किया, वह लाजवाब था। जब राज कपूर नरगिस के प्रति प्यार दर्शा रहे थे, उस समय रेनकोट में तीन बच्चों के दृश्य ने इस गीत को और भी प्रभावी बनाया। किशोर कुमार की फिल्म 'चलती का नाम गाड़ी' भी पुराने दर्शक कैसे भूल सकते हैं। बारिश में भीगी शरमाती मधुबाला को, जो अपनी खराब कार किशोर कुमार के गैरेज में लेकर आती है। इसी दृश्य ने उन्हें 'एक लड़की भीगी भागी सी' गीत गाने को प्रेरित। फिल्म में ये गाना बरसात की उस ताकत का अहसास कराने के लिए फिल्माया गया था, जो दो अनजान लोगों में प्रेम के अंकुरण को पैदा कर देता है। रोमांटिक गीतों का उपयोग फिल्मों में औजार की तरह किया जाता है, जो अपने संगीत से दिलों के भीतर उमड़ रहे प्रेम को प्रदर्शित कर देते हैं।

1969 में आई 'आराधना' में 'रूप तेरा मस्ताना' गीत गाते नायक-नायिका का मिलन होता है। 1973 की फिल्म 'जैसे को तैसा' में 'अब के सावन में जी डरे' गीत के दौरान नायक-नायिका की मुद्राएं आज भी याद है। 1974 की मनोज कुमार की फिल्म 'रोटी,

कपड़ा और मकान' में नायिका 'हाय हाय ये मजबूरी' गीत गाते हुए नायक को दो टकिया की नौकरी का ताना देती है। 2007 में प्रदर्शित फिल्म 'लाइफ इन ए मेट्रो' में नायक नायिका के बीच रोमांस इसी बारिश के मौसम में परवान चढ़ता है। नायक, नायिका की पहली मुलाकात के प्यार में बदल जाने के दृश्य दिखाने के लिए भी बारिश का मौसम बड़ा माकूल माना जाता है। 'बरसात की रात' (1960) का सदाबहार गीत 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात' वाले दृश्य के जरिए नायक-नायिका को कभी विस्मृत न करने की भावना शिद्दत से दर्शाता है।

हिंदी फिल्मों के ऐसे दृश्यों की भरमार है, जिनमें नायक-नायिकाओं के मनोभाव प्रकट करने के लिए इसी बारिश का सहारा लिया गया है। 1989 की फिल्म 'चांदनी' में विनोद खन्ना अपनी दिवंगत पत्नी की याद में जो गीत गाता है उसके लिए बारिश की पृष्ठभूमि उपयुक्त लगती है। 1984 की फिल्म 'मशाल' में ट्रेजडी किंग दिलीप कुमार अपनी घायल पत्नी की मदद के लिए भीगी रात में ही गुहार लगाते हैं। 'कंपनी' (2002) और 'जॉनी गद्दार' (2007) के दृश्यों में काफी खून-खराब था, जिसे फिल्माने के लिए बारिश का सहारा लिया गया था। मनोज कुमार जैसे सदाचारी फ़िल्मकार ने भी 'रोटी कपडा और मकान' और 1981 में आई 'क्रांति' में देह दर्शन के लिए बरसात को माध्यम बनाया था।

आमिर खान अपनी फिल्म 'लगान' (2001) में सूखा पीड़ित गांव में भगवान से पानी बरसाने की प्रार्थना के लिए 'घनन घनन घिर आए रे बदरा' गाता है। गाने के खत्म होते-होते नायक-नायिका बारिश में भीगते नजर आते हैं। देवानंद की 1965 में आई 'गाइड' में भी सूखाग्रस्त गांव में पानी बरसाने के लिए सन्यासी से प्रार्थना की जाती है। अनेक फिल्मों के शहरी पृष्ठभूमि के चरित्र भी बारिश का आनंद लेते दिखाई देते रहे हैं। 1977 की फिल्म 'प्रियतमा' में नीतू सिंह 'छम छम बरसे घटा' और माधुरी दीक्षित 'दिल तो पागल है' (1997) में बच्चों के साथ सड़कों पर नाचते हुए यह गाना 'चक धूम धूम' कुछ ऐसी ही कहानी सुनाते हैं। 1973 की फिल्म 'दाग' में तो लगभग सभी घटनाएं भारी वर्षा के दौरान ही होती है। रहस्यमयी फिल्मों को तो बरसात और भयावह बना देती है। 1964 की फिल्म 'वो कौन थी' में बरसात के बीच रहस्यमयी मुद्रा में साधना पर फिल्माया गीत 'नैना बरसें रिमझिम रिमझिम' कौन भूल सकता है। बलात्कार के दृश्यों को भी बरसात में फिल्माकर कई बार वीभत्स रूप दिया गया है। 1985 में आई 'अर्जुन' में छतरियों की भीड़ में फिल्माया गया मारपीट का दृश्य आज भी याद आता है। अमिताभ पर फिल्माया 'आज रपट जाए' गीत भी दर्शकों को गुदगुदाने में सफल रहा था।

कुछ फिल्मों के शीर्षक भी बरसात पर आधारित रहे। पहली फिल्म 'बरसात' 1949 में राज कपूर की आई, 1995 में बॉबी देओल ने भी 'बरसात' में काम किया, 2005 में फिर बॉबी देओल की फिल्म 'बरसात' नाम से आई। इसके अलावा 'बरसात की रात (1960), बरसात की एक रात (1981), बरसात (भोजपुरी) और 'बिन बादल बरसात' नाम से फिल्म आई। कई फिल्मों में बरसात के प्रतीक सावन को भी महत्व दिया गया। सावन की घटा, आया सावन झूम के, सावन को आने दो, प्यासा सावन, बरसात, बरसात की एक रात, और बारिश ऐसी ही कुछ फिल्में हैं, जिनके नाम में तो सावन अथवा बरसात है, परंतु उनके कथानक से बारिश का कोई लेना-देना नहीं था। कुछ समय पूर्व अंग्रेजी-हिंदी में बनी मीरा नायर की 'मानसून वेडिंग' की कथावस्तु में जरूर वर्षा का कुछ महत्व था। यह फिल्म भारत में बरसात के मौसम में पंजाबियों की शादी से संबंधित कहानी पर आधारित थी।

सबसे मजेदार फिल्म तो 1970 में प्रदर्शित 'सावन भादो' थी! इसमें न तो सावन की फुहार नजर आई और न भादौ की भारी बरसात! इसके बावजूद फिल्म में रेखा के लावण्य की बरसात ने इसे सफल फिल्मों की सूची में जगह दिलवा दी थी। ऑस्कर के लिए नामित आमिर खान की फिल्म 'लगान' की कहानी में बदलाव बरसात की वजह से ही आया है। बरसात गांव को धोखा दे देती है, गरीब लोग खेती नहीं कर पाते हैं और लगान देने में असमर्थ होते हैं। भुवन (आमिर खान) अंगरेजी साम्राज्य से लोहा लेने के लिए प्रेरित होता है। फिल्म के क्लाइमेक्स में मैच जीतने की खुशी में नाचते गांव वालों पर झमाझम बूंदे गिरने लगती है। जैसे अपना उद्देश्य पूरा होते ही बरसात भी गांव वालों की खुशी में शरीक होने आ गई। फिल्मकारों के लिए बरसात सिर्फ गाने या क्लाइमेक्स की सिचुएशन ही नहीं है, महत्वपूर्ण टर्निंग पॉइंट भी है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'रामायण' में शूर्पणखा का किरदार रकुल निभाएगी

फिल्म 'रामायण' इन दिनों चर्चा में है। नितेश तिवारी के निर्देशन में बन रही इस फिल्म की स्टारकास्ट और लीक हुई तस्वीरों ने पहले ही दर्शकों में उत्साह भर दिया। रणबीर कपूर, साईं पल्लवी और यश जैसे बड़े सितारों से सजी इस फिल्म में अब एक और बड़ा खुलासा हुआ। जो शूर्पणखा के रोल को लेकर है। फिल्म में रावण की बहन शूर्पणखा की दमदार भूमिका में रकुल प्रीत सिंह नजर आएगी।

इस किरदार के लिए पहली पसंद वो नहीं थी, बल्कि ये ग्लोबल स्टार थीं? एक रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म के मेकर्स इस पावरफुल रोल के लिए पहले प्रियंका चोपड़ा को कास्ट करना चाहते थे। शूर्पणखा को रामायण की कहानी का टर्निंग पॉइंट माना जाता है, इसलिए मेकर्स इस रोल के लिए प्रियंका को कास्ट करना चाहते थे। प्रियंका अपने इंटरनेशनल प्रोजेक्ट्स में इतनी बिजी हैं, कि डेट्स मिलना मुमकिन नहीं था. ऐसे में मेकर्स ने रकुल प्रीत सिंह को अप्रोच किया और

उन्होंने तुरंत इस रोल के लिए हामी भर दी।

रकुल ने इस किरदार में एक अलग तरह की एनर्जी और ताजगी डाली है। वह शूर्पणखा के इमोशंस और इंटेंसिटी को बखूबी निभा रही हैं। 'रामायण' एक डुओलॉजी है, यानी इसकी दो फिल्में आएंगी। इस फिल्म का पहला पार्ट दिवाली 2026 में रिलीज होगा, जबकि दूसरा पार्ट दिवाली 2027 में रिलीज होने की बात सामने आई है।

कास्टिंग पर नजर डालें तो, भगवान राम के किरदार में रणबीर कपूर, माता सीता के रोल में साई पल्लवी, तो रावण के किरदार में यश, वहीं हनुमान जी के रोल में सनी देओल, तो लक्ष्मण के किरदार में रवि दुबे, मंदोदरी के रोल में काजल अग्रवाल, तो कैकेयी के किरदार में लारा दत्ता नजर आएंगे। फिल्म की शूटिंग जोरों पर है। रणबीर कपूर ने अपने हिस्से की शूटिंग पूरी कर ली है और यश इन दिनों मुंबई में शूट कर रहे हैं।

बेटिंग ऐप के विज्ञापन को गलत नहीं मानते आमिर

मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान सिर्फ अपनी फिल्मों के लिए ही नहीं, बल्कि अपने उसूलों के लिए भी जाने जाते हैं। खासकर जब बात ब्रांड एंडोर्समेंट की आती है। हाल ही में वह एक बेटिंग ऐप के विज्ञापन में नजर आए, जिसे देखकर सब चौंक गए। क्योंकि, उन्होंने कभी शराब और तंबाकू जैसे उत्पादों का एड नहीं किया है। ऐसे में इंटरव्यू के दौरान उनसे पूछा गया कि उन्होंने बेटिंग ऐप का एड करने के लिए हां क्यों बोला!

आमिर ने दिए इंटरव्यू में बताया कि वो किसी भी ब्रांड को चुनने से पहले दो बातें जरूर देखते हैं। पहली , क्या वो प्रोडक्ट अपने वादे पर खरा उतरता है? दूसरी, वो कभी उस प्रोडक्ट की कीमत

नहीं बताते। आमिर कहते हैं कि मैं ब्रांड एंबेसडर हूं, सेल्समैन नहीं। मैं प्रोडक्ट की खासियतों पर बात कर सकता हूं, लेकिन उसकी कीमत बताना मेरा काम नहीं। जब आमिर से पूछा गया कि उन्होंने शराब और तंबाकू की एड करने से मना कर दिया था फिर ये बेटिंग ऐप की एड क्यों की? तब आमिर ने जवाब में कहा, वो स्क्रिप्ट इतनी मजेदार थी कि मैं इनकार नहीं कर पाया। मैं उसे पढ़कर हंस पड़ा था।

अगर कोई प्रोडक्ट अवैध है, तो उसे प्रतिबंधित करें, लेकिन अगर वैध है तो मुझे उसे करने दें। शाहरुख खान, अजय देवगन, अक्षय कुमार, और ऋतिक रोशन जैसे बड़े सितारे पान मसाला ब्रांड से जुड़ चुके हैं, लेकिन आमिर अब तक ऐसे किसी भी ब्रांड से नहीं जुड़े हैं। इसकी वजह बताते हुए आमिर ने कहा कि उन्होंने कई बड़े ऑफर्स ठुकरा दिए। क्योंकि, उनके लिए सिद्धांत पैसे से ऊपर हैं।

'अग्निसाक्षी' के निर्देशक को विदा करने कोई नहीं आया!

अशोक जोशी

जिस समय पार्थो घोष सक्रिय थे उनके आसपास सितारों की फौज खड़ी रहती थी। लेकिन, अपने जन्म दिन के एक दिन बाद 9 जून को जब उन्होने दिल के दौरे के चलते इस संसार से बिदाई ली, तो उनके

अंतिम दर्शन से लेकर उनके अग्निसंस्कार में कोई फिल्मी हस्ती मौजूद नहीं थी। उनके दाह संस्कार के समय बनाए गए एक विडियो में यह दिखाया गया कि उनकी चिता अकेली जल रही थी।

देश समाज के साथ-साथ सिनेमा जगत में भी संवेदनाएं समाप्त होती जा रही है। पिछले कुछ दिनों कुछ ऐसी घटनाएं हुई, जिससे इस बात को बल मिलता है कि सिनेमा जगत से ज्यादा स्वार्थी दूसरा कोई नहीं। पहली घटना अक्षय कुमार द्वारा अपने ही को-स्टार परेश रावल पर 25 करोड़ रुपए का दावा ठोकने की है। उन्होंने यह कदम इसलिए उठाया, क्योंकि परेश रावल ने 'हेरा फेरी-3' में काम करने से मना कर साइनिंग अमाउंट वापस लौटा दिया था। दूसरी घटना पिछले सप्ताह की है जब हिंदी सिनेमा को कई यादगार फिल्में देने वाले चर्चित निर्देशक पार्थो घोष का 9 जून को निधन हो गया। उनके अंतिम संस्कार में कोई भी नहीं पहुंचा। ये वो निर्देशक है जिन्होंने 90 से 2000 के दशक में दर्शकों को सस्पेंस, भावनाओं और सामाजिक संदेशों से भरपूर कहानियां दीं। वे खासतौर पर अपनी सुपरहिट फ़िल्में '100 डेज' और 'अग्नि साक्षी' के लिए जाने जाते हैं।

अपनी मृत्यु की तारीख 9 जून से एक दिन पहले 8 जून 1949 को कोलकाता में जन्मे पार्थो घोष का बचपन कला, साहित्य और संगीत के बीच गुजरा। फिल्मों के प्रति उनका लगाव उन्हें मुंबई ले आया। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत साल 1985 में बंगाली सिनेमा में एक सहायक निर्देशक के रूप में की थी। इसके बाद उन्होंने हिंदी फिल्मों की ओर रुख किया और निर्देशन की बागडोर संभाली। पार्थो घोष को पहली बार बड़ी पहचान मिली साल 1991 में आई '100 डेज' से। माधुरी दीक्षित और जैकी श्रॉफ अभिनीत इस सस्पेंस-थ्रिलर फिल्म को दर्शकों और समीक्षकों ने खूब सराहा। यह फिल्म तमिल फिल्म 'नूरवथु नाल' का हिंदी रीमेक थी। इस फिल्म की सफलता ने उन्हें बॉलीवुड में

मजबूत जगह दिलाई। इस फिल्म की कथा पटकथा तो चुस्त थी ही, इसके संगीत ने भी धूम मचा दी थी।

इसके बाद उन्होंने 1992 में दिव्या भारती और अविनाश वधावन को लेकर 'गीत' बनाई। लेकिन, उनके करियर का बड़ा मोड़ 1993 में आया, जब उन्होंने मिथुन चक्रवर्ती और आयशा जुल्का के साथ 'दलाल' बनाई, जो बॉक्स ऑफिस पर बड़ी हिट साबित हुई। इस फिल्म को लेकर खासकर इसके एक गीत को लेकर काफी विवाद भी हुआ। लेकिन, फिल्म के हिट होते ही सारे विवाद हवा हो गए और वह एक सफल निर्देशक की पंक्ति में खड़े हो गए।

साल 1996 में आई जैकी श्राफ, मनीषा कोईराला और नाना पाटेकर अभिनीत 'अग्नि साक्षी' ने पार्थो घोष को एक संवेदनशील और गंभीर विषयों पर फिल्में बनाने वाले निर्देशक के रूप में स्थापित किया। नाना पाटेकर, जैकी श्रॉफ और मनीषा कोइराला की मुख्य भूमिकाओं वाली इस फिल्म की कहानी घरेलू हिंसा जैसे मुद्दे पर केंद्रित थी। इसे दर्शकों ने काफी पसंद किया। यह फिल्म हॉलीवुड फिल्म 'स्लीपिंग विद द एनिमी' पर आधारित थी। इसे बाल ठाकरे के परिवार के बिन्दू माधव ठाकरे ने बनाया था। पौने पांच करोड़ रुपए के बजट में बनी 'अग्नि साक्षी' ने अपनी लागत से आठ गुना कमाई करके न केवल बॉक्स ऑफिस पर सफलता

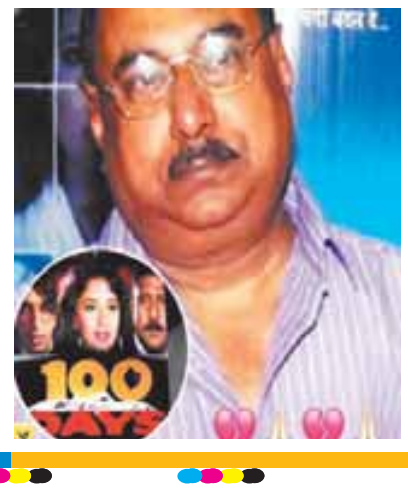

हासिल की, बल्कि नाना पाटेकर को बेहतरीन अभिनय के लिए 1197 का राष्ट्रीय पुरस्कार भी दिलवाया।

'अग्नि साक्षी' को फिल्मफेयर अवॉर्ड्स में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक की श्रेणी में नामांकन मिला था। पार्थो घोष ने भारतीय सिनेमा को ऐसी कहानियां दी, जो आज भी दर्शकों की स्मृति में जीवित हैं। पार्थो घोष को उनके योगदान के लिए सराहा भी गया। पार्थो घोष ने अपने फिल्मी करियर में 15 से अधिक फिल्में निर्देशित की, जिनमें थ्रिलर, रोमांस और सामाजिक विषयों की विविधता देखने को मिली। उनकी अंतिम फिल्म थी 'मौसम इकरार के, दो पल प्यार के' जो 2018 में रिलीज़ हुई।

जिस समय पार्थो घोष सक्रिय थे उनके आसपास सितारों की फौज खड़ी रहती थी। लेकिन, अपने जन्म दिन के एक दिन बाद 9 जून को जब उन्होने दिल के दौरे के चलते इस संसार से बिदाई ली, तो उनके अंतिम दर्शन से लेकर उनके अग्निसंस्कार में कोई फिल्मी हस्ती मौजूद नहीं थी। उनके दाह संस्कार के समय बनाए गए एक विडियो में यह दिखाया गया कि उनकी चिता अकेली जल रही थी।

एक ख्याति प्राप्त निर्देशक के अंतिम समय हुई इस उपेक्षा और अनदेखी को दर्शकों और प्रशंसकों ने रोष के साथ विभिन्न माध्यमों पर प्रस्तुत किया है। एक प्रशंसक ने 'एक्स' पर लिखा 'छलावा है ये फिल्मी दुनिया। यहां रिश्ते भी सफलता और असफलता का मुख देखते है और मौत भी। एक समय के हिट निर्देशक पार्थो घोष के अंतिम समय चार कंधे भी नहीं मिले।' दूसरे प्रशंसक ने लिखा 'जीवन की यही सच्चाई है, जिस पार्थो घोष की एक समय बॉलीवुड में तूती बोलती थी, आज श्मशान में अकेले ही जल रहे है। कोई भी अंतिम दर्शन को कोई नहीं आया।' तीसरे प्रशंसक ने भी गुस्सा निकालते हुए लिखा 'मुर्दा, निष्प्राण, बॉलीवुड अग्निसाक्षी, 100 डेज और 'दलाल' जैसी चर्चित फिल्में बनाने वाले निर्देशक पार्थो घोष के अंतिम संस्कार में कोई स्टार, मेगा स्टार, मिलेनियम स्टार, किंग खान, भाई नहीं आया।'

सबसे ज्यादा तल्ख टिप्पणी तो हमेशा विवाद में रहने वाले केकेआर ने की है। उन्होंने लिखा कि जब पार्थो घोष जैसे सफल और विख्यात निर्देशक की अंतिम यात्रा में कोई कंधा देने नहीं आया, तो मैं समझ सकता हूं कि मेरी अंतिम यात्रा में कौन आएगा! इसलिए मैं तो यही चाहता हूं कि हवाई यात्रा करते हुए मेरा प्लेन क्रैश हो जाए और मैं उसमें समाप्त हो जाऊं। यह तो महज एक कल्पना है। लेकिन, फिल्मी दुनिया का आगे क्या हश्र होगा इसकी कल्पना करते हुए सोचा जा सकता है कि यहां सारे रिश्ते केवल बॉक्स ऑफिस की खिड़की से तय होते हैं।

जनार्दन द्विवेदी की कविताओं में संवेदना, जीवन दृष्टि और लोकतांत्रिक चेतना

पुस्तक समीक्षा
जो शेष रहा

दिविक रमेश
वरिष्ठ साहित्यकार और समीक्षक

हिंदी साहित्य की दुनिया को एक नई और सार्थक आवाज तब मिली जब प्रख्यात समाजसेवी, प्रखर वक्ता, वरिष्ठ शिक्षाविद् और पूर्व सांसद जनार्दन द्विवेदी का कविता-संग्रह 'जो शेष रहा' पाठकों के समक्ष आया। यह संग्रह न केवल उनकी काव्य-प्रतिभा का परिचायक है, बल्कि उनके समूचे जीवन-दर्शन, आत्मसंवाद और सामाजिक-राजनीतिक चेतना की गहराइयों को भी उद्घाटित करता है।

प्रारंभिक छवि और छुपा कवि

मैंने जनार्दन द्विवेदी को पहले पहल दिल्ली विश्वविद्यालय के एक विद्वान अध्यापक और ओजस्वी वक्ता के रूप में देखा, फिर एक सौम्य, सहज और बौद्धिक राजनीतिज्ञ के रूप में पाया। किंतु उनका कवि रूप लंबे समय तक अज्ञात रहा। जब द्विवेदी जी का यह संग्रह हाथ में आया, तो यह एक सुखद आश्चर्य की तरह था, जैसे किसी रत्न को अचानक खोज लिया गया हो।

कविताओं की पृष्ठभूमि

संग्रह की प्रस्तावना के अनुसार, ये वे कविताएँ हैं जो उनके राजनीतिक जीवन की व्यस्तताओं के बीच बच गईं। लगभग 150 कविताएँ उन्होंने रचीं, जिनमें से 44-45 को इस संग्रह में स्थान मिला। इनमें दो बाल कविताएँ, एक पिता द्वारा लिखी गई स्मृतिपरक रचना और एक समस्या पूर्ति के रूप में लिखी कविता भी शामिल है।

कविता और कवि की आत्मा

कविता उनके भीतर हमेशा जीवित रही—यह बात उनकी कविता 'कविता मुझमें' में स्पष्ट होती है- 'कविता मुझमें फिर भी हमेशा जगती रही है।' यह संग्रह उनकी अंतर्ध्वनि, आत्मसंवाद और आत्ममंथन की उपज है। कविताएँ कभी दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं, तो कभी गहन सामाजिक विवेक का प्रमाण देती हैं। मोहभंग, व्यंग्य और स्वीकारोक्ति जैसे स्वर इन रचनाओं में सहजता से घुले हैं।

राजनीतिक अंतर्दृष्टि की कविताएँ

संग्रह की प्रमुख कविताएँ जैसे 'नेतृत्व का नवगीत', 'आपका लोकतंत्र', और 'जो बन गए हों बड़े उनसे बात कम करें', मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य पर तीखी टिप्पणी करती हैं। वे सत्ता के ढोंग, लोकतंत्र के क्षरण और आम आदमी की अवहेलना को बेबाकी से उजागर करती हैं-'जितने बढ़े वे, उतना घटा लोकतंत्र है।'

समकालीन प्रश्नों पर सजग दृष्टि

'एक आस्तिक का विलाप' जैसी कविताओं में ईश्वर से भी जवाबतलबी है, जबकि 'कोरोना-काल' महामारी के अनुभवों को मानवीय दृष्टिकोण से छूती है। वहीं, 'क्या अनोखा जीव है यह आदमी' जैसे गीतों में मनुष्य के संघर्षशील, जिजीविषा से भरे रूप को उजागर किया गया है। 'हार कर भी जीत जाता आदमी,क्या अनोखा जीव है यह आदमी!'

धरती, आत्मचिंतन और मित्रता

कविताएँ जैसे 'इक्कीसवीं सदी का बीसवां साल', 'आज का दिन फिर बड़ा बेकार बीता', 'संस्कारी मन', 'मित्र मेरे' आत्मचिंतन की उपज हैं, जो मनुष्य के भीतर और बाहर दोनों को टटोलती हैं।

भाषा और अभिव्यक्ति

जनार्दन द्विवेदी की भाषा-शैली एकदम सहज, स्पष्ट और आत्मीय है। पाठक कहीं भी उलझता नहीं, न ही जटिलता का बोझ महसूस करता है।

संक्षेप में

'जो शेष रहा' सिर्फ एक कविता-संग्रह नहीं है—यह एक ऐसे व्यक्तित्व की जीवन यात्रा है, जिसने समाज, राजनीति, साहित्य और आत्मा—इन सभी के साथ गहरे सरोकार रखे। यह संग्रह उस कवि का आख्यान है जो ताउम्र अपने भीतर कविता को संजोए रहा, चाहे दुनिया ने उसे किसी और भूमिका में पहचाना हो।यह संग्रह हिंदी साहित्य जगत के लिए एक बहुमूल्य धरोहर बन कर उभरा है और निश्चित ही इसका स्वागत साहित्य प्रेमियों के बीच व्यापक रूप में होगा।

पुस्तक-जो शेष रहा (काव्य संग्रह)
लेखक- जनार्दन द्विवेदी
प्रकाशक- अक्षर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
वर्ष- 2025

आस्था के चरण में छाले नहीं पड़ते

धर्म कर्म

विवेक कुमार मिश्र
लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

भक्ति, मन की मुक्तिदशा है । भक्ति भाव में भक्त हर तरह के बंधन से मुक्त होकर जीवन को पूर्ण उत्सव के रूप में जीता है । जब राग द्वेष से मुक्त होकर हम अपने आराध्य को जीते हैं उसी को केवल महसूस कर रहे होते हैं तो हमें किसी और की सत्ता दिखाई नहीं देती । भक्त और भगवान के बीच कोई और नहीं होता, ऐसे में भक्त इस भरोसे के साथ अपने भगवान के पास जाता है कि उसकी हर बात भगवान के यहां सुनी जायेगी । भक्त अपनी कथा, अपनी कहानी और अपनी पूरी दुनिया को लेकर भगवान के पास जाता है और उसे यह पूरा भरोसा होता है कि भगवान को पता है कि उसकी क्या समस्या है । वह भगवान से कुछ कहता नहीं है वह तो बस चुपचाप अपने आराध्य के पास आकर खड़ा हो जाता है । क्योंकि उसे पता है कि भगवान को सब पता चल जायेगा और उसकी हर मनोकामना भगवान पूरा करेंगे । वह इतना ही कहता है कि प्रभु आपसे क्या कहें । आपको तो सब पता है फिर मेरे अभाव को दूर करें हे नाथ। हे प्रभु। मेरी और कौन सुनेगा...बस आपसे ही उम्मीद है । आप मेरे समय मेरे दिन बदलेंगे । इस तरह अपनी पूरी सत्ता सौंप देता है भगवान को और भगवान हैं कि उसके दिन बदलेंगे । भक्त और भगवान के बीच जो रिश्ता है वह भरोसे का है अपनी आस्था को अपनी आंखों के आगे प्रमाणित होते देखने का है । भक्ति रस में डूबे हुए आदमी को किसी तरह के अभाव की स्थिति नहीं आती । वह अपने आप को हर समय भाव में ही डूबा हुआ महसूस करता है । भाव ऐसा की भगवान उसके साथ हैं तो फिर किसी तरह के अभाव की स्थिति उसके सामने आ ही नहीं सकती । वैसे भी जो और जिस तरह का अभाव उसके सामने आता है वह भी हरि इच्छा मानकर वह ग्रहण करता है । भक्त और भगवान के बीच जो यह भक्ति का सिमेंट है वहीं उन्हें जोड़ता है । इस जोड़ के कारण ही न जाने कहां कहां से कितने ही दुःख सहते हुए भक्त अपने भगवान से मिलने के लिए आ जाते हैं । यह मिलन भी अद्भुत होता है । हाहाकार में भी आनंद में डुबा भक्त और भक्त की इस दशा को देखते हुए भगवान अपने भक्त को ऐसा आह्लादित कर देता है कि उसे कुछ और चाहिए ही नहीं । भक्त की आस्था ही है जो उसे दूर जंगल में, पहाड़ों पर और दुर्गम से दुर्गम स्थानों तक ले जाती है । यह आस्था ही जो भूख , प्यास सब सहन करने की शक्ति देता है । भक्त जो खाता है, जो कुछ उसके पास होता वह सबकुछ अपने भगवान को सौंप कर निश्चिंत हो जाता है कि प्रभु पार लगायेंगे। आस्था के भरोसे ही वह कदम बढ़ाता है । भक्त जब कदम बढ़ा देता है तो रुकता नहीं, फिर कोई और ताकत उसे रोक नहीं पाती वह तो बस चलता ही चला जाता है। उसके कदम तो भगवान के शरण में जाकर ही थमते है यह अटूट विश्वास भक्त में होता है कि उसकी रक्षा कोई और नहीं भगवान ही करेंगे और इसी भाव को लेकर वह भक्ति साधना में लीन रहता है। मौसम की प्रतिकूलता भी उसके विश्वास को डिगने नहीं देता । यहीं वह आस्था है जो जन जन के भीतर विश्वास के रूप में समायी है । आस्था वह ज्वार है जो उसे अपने आराध्य के पास धूप, बारिश, और कड़ाके की ठंड में भी लेकर जाता है । जब आस्था प्रबल होती है तो कैसी भी विपरीत स्थिति क्यों न हो आदमी चल पड़ता है । अभी भीषण गर्मी पड़ रही है । कहीं से कोई राहत की फुहार नहीं मिल रही है पर आस्था के चरण में छाले नहीं पड़ते और पड़ते भी हों तो महसूस नहीं होते । आदमी अपने आराध्य देव के दर्शन के लिए बस जा रहा है, इस क्रम में उसे कुछ नहीं दिखता । पांव धरती पर रखते ही जलने से लगते हैं पर जब भगवान के दर्शन की बारी आती है तो जलते पांव भी कदम सहज ही आगे बढ़ जाते हैं कोई दिक्कत महसूस नहीं होती । हरे कृष्ण हरे कृष्ण राधे राधे करते सब आगे बढ़ते ही जाते हैं । जयपुर के आराध्य देव गोविंद देव जी हैं और यहां गोविंद देव जी के प्रति अगाध श्रद्धा समर्पण और आस्था देखने को मिलती है । किसी भी समय आप क्यों न जाएं श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा है , ऐसा नहीं है कि आप जाये और सबकुछ खाली खाली हो, इतने लोग हमेशा होते हैं कि भगवान के दर्शन के लिए आपको एकटक आंखें रखनी पड़ती है और फिर जो दिव्य दर्शन होता है उसमें आप महसूस करते हैं कि कोई सत्ता है जो सबकुछ को संभाल रखी है । इतने लोग और सब क्रम से

दर्शन करते रहते हैं । किसी को कोई जल्दी नहीं है न ही किसी को विशेष होने का भान , सब बस गोविंद जी की सेवा में, उनकी एक झलक पाने के लिए आते हैं । लोगों के हाथ श्रद्धा में उपर ही उठे रहते हैं । मन से, आत्मा से और काया से हर रूप में सबके मन में बस अपनी श्रद्धा होती है और यह श्रद्धा ही संसार से जोड़ती है । यहीं वह भूमि है जो मन को हर बंधन से मुक्त करने का भी काम करती है । ईश्वर अपने भक्त को मुक्त रखता है । हमें हर तरह के बंधन से मुक्त करता है और अपनी अथाह श्रद्धा से ऐसे जोड़ता है कि उसके बिना हम कुछ नहीं हैं । तभी तो एक से बढ़कर एक बड़ी सत्ता वाले एक से बढ़कर एक विशिष्ठ व्यक्ति भी यहां आकर ऐसे बैठ जाते हैं कि बस गोविंद देव जी के प्रसाद लेकर जाना है और प्रसाद क्या भगवान को पूजा , भोग चढ़ा कर जब पुजारी जी श्रृद्धालुओं पर जल को छिड़कते हैं तो उस समय भक्त की दशा, उसका आह्लाद देखते ही बनता है । भक्त भक्ति भाव में अपनी जगह पर आह्लादित होकर झूम उठते हैं । यह जन जन का भक्ति भाव और आह्लाद देखते ही बनता है । जनता भाव में डूबकर आह्लादित होते हुए जय श्री कृष्णा हरे कृष्णा हरे कृष्णा और जय गोविन्द जी जय गोविंद जी की जय श्री कृष्णा जय श्री राधे जय श्री राधे राधे राधे राधे राधे जय श्री कृष्णा इस तरह से करती है कि एक समवेत ध्वनि गूंज उठती है जय श्री कृष्णा जय श्री गोविंद ।

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

फादर्स डे: क्या उन्हें अब मेरी ज़रूरत नहीं रही

वो पर्दे के पीछे रहता है पर हमें हमेशा अहसास होता है वो साथ है। कई बार हमारी नादानियों को इग्नोर कर देता है। चोरी छुपे उसकी पेंट की जेब से कॉलेज जाते समय हम पैसे निकाल लेते हैं। उसके नोट गिने हुये होते हुए भी वो कुछ नहीं कहता। तुम्हारी पढ़ाई व संगति को लेकर वो हमेशा सजग रहता है। तुमने जब पहली सिगरेट ट्राय की थी, तब भी उसे पता चल गया था। पहली बार साइकिल पर पैर जमाना उसने ही सिखाया। बाहरवीं की फेयरवेल पार्टी में पहली बार टाई की नॉट उसी ने बांधी थी, हालांकि अब तुम उनकी टाई ठीक करते हो, सूट सिलेक्ट करते हो। कई बार उनके जूते उन्हें बिना बताये पार्टी में पहनकर तुम चुपचाप रख देते हो और सुबह ऑफिस जाते समय वो मुस्कुरा के उन्हीं जूतों पर पॉलिश करते हैं। अचानक कार पर खरोंच के निशान देखते ही तुम्हें बुला कर डांटते हैं, तब माँ के पल्लू में छिप जाते हो, माँ कहती है ऐसे ही तो सीखेगा।

हॉस्टेल से फोन करते हो या बाहर जॉब करते हो तो रोज़ सुबह-शाम माँ से फोन पर लंबी लंबी बातें करते हो और पापा को 'हाय बोलना' कहकर फोन रख देते हो लेकिन जब तुम्हें पैसों की ज़रूरत होती है तो तुरंत फोन लगा कर मांग लेते हो। तुम्हारी परीक्षाओं, इंटरव्यू के समय बेचैन हो माँ से कहते हैं ज़रा फोन लगाओ ना सब ठीक तो है। खुद ब्रांडेड चीज़ ना खरीद तुम्हें दिलाते हैं ताकि कॉलेज में तुम्हें नीचा ना देखना पड़े। खुद साधारण फोन रख स्मार्ट फोन दिलाते हैं। तुम्हारी शिक्षा का लोन खुद चुकाते हैं जब तुम दबे स्वर में कहते हो ''पापा अब मैं कमाता हूँ मैं कर लूंगा तो हंस के कह देते हैं ठीक है, ठीक है बाद में ले लूँगा।''

स्कूल में एडमिशन के लिये घंटों लाइन में खड़े रहना, प्रोफेशनल कॉलेज में एडमिशन के बाद हॉस्टेल छोड़ने जाना ये सब बिना शिकायत करते हैं जब पता लगा कि मैं कभी कभी बीयर लेता हूँ तो उन्होंने कोई हिदायत ना देकर अपने साथ बिठाया और इशारा किया लत नहीं डालनी है, दोस्तों के बहकावे में नहीं आना है, मैं हूँ ना तुम्हारा दोस्त। ये बात अलग है तुम उन्हें कभी अपना दोस्त नहीं बना सके पर उन्होंने तुम्हारी ''गर्लफ्रेंड'' (दूसरी जाति) को सर आंखों पे लिया।

शॉपिंग के समय जिस चीज़ पर तुम उंगली रखते वो बिना टैग, जेब देखे तुम्हें फौरन वो चीज़ दिला देते हैं। जब तुम सो जाते हो तुम्हारे कमरे में आकर धीरे से तुम्हारा कंबल ठीक कर मुस्कुरा के मुग्ध हो कर बत्ती बुझाते हैं और माँ से कहते हैं ''बड़ा दुबला सा हो गया है दूध, फल लेता है या नहीं दूसरे दिन टेबल पर ड्राय फ्रूट्स, फल दूध की मात्रा बढ़ जाती है। जब तुम्हारे कॉलेज या नौकरी पे जाने का वक़्त होता है तब हवन-पूजा पाठ करवाते हैं तुम्हारे स्वास्थ्य के लिये महामृत्युंजय पाठ करवाते हैं। रत्न जड़ित अंगूठी लाते हैं। तुम झुंझलाते हो, हॉस्टल जाकर अंगूठी ड्राअर में डाल देते हो। ना सही तुम्हारी आस्था भगवान में पर उन के प्रेम के

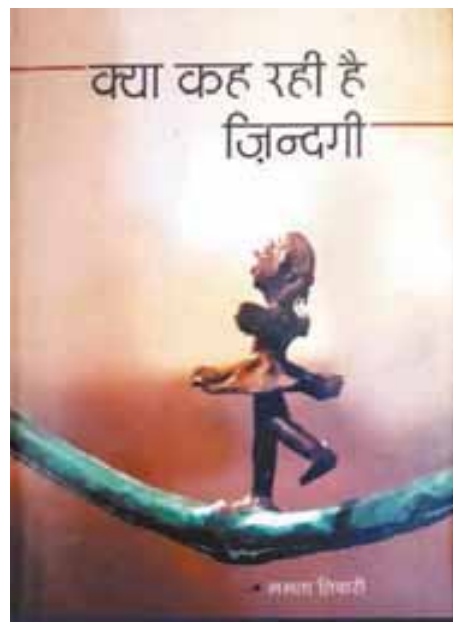

प्रति तो विश्वास रख सकते हो। दिन में एक फोन लगा सकते हो। स्वास्थ्य की परवाह कर सकते हो। जो आजकल सबसे कीमती है वो 'वक़्त' उन्हें दे सकते हो। वॉक पर उनके साथ दो कदम चल सकते हो उन्हें खुश करने के लिये। वो तुम्हारी की गई बहुत छोटी छोटी बातों से खुश हो जाते हैं तो उस शख़्स को कभी ना भूलो जिसको हम 'पिता' कह पुकारते हैं।

कुछ दिनों से मैं अनमना था। बच्चे बाहर से आये हुये है। घर में रौनक है। पत्नी, दौड़-दौड़ कर व्यंजन बना रही है। सब खाने का मज़ा ले रहें है, नहीं... मैं भी सबके साथ हूँ। मैं भी उनकी आंखों से दुनिया देख रहा हूँ। उनके ज्ञान के आगे खुद को बौना महसूस कर रहा हूँ क्यों? क्या इस दिन का मैने बेताबी से इंतजार नहीं किया था? उनकी छोटी बड़ी ज़रूरतों को पूरा करते मैं कई बार हांफ जाता। जब बजट बाहर होने लगता और पढ़ाई की फीस ज़्यादा। बेचैनी से रातों को चहलकदमी करता। बच्चे माँ को माध्यम बनाकर बातें करते।

आप को मेरी बात रास नहीं आ रही होगी ना, फिर भी हम कितना भी एडवांस्ड हो जायें, कहने को उनके दोस्त भी बन जायें, पर शाम को पत्नी के फोन कीघंटी बजती, मैं जिज्ञासा से उसकी बातें सुनने की कोशिश करता, वो पूछती पापा से बात कराऊँ, अच्छा-अच्छा बाद में कर लेना। फोन रखकर कहती मीटिंग आ गई उसकी। मैं इस जवाब से संतुष्ट नहीं होता, पर बुरा भी नहीं मानता, बस पूछता सब ठीक हैं ना पैसों की ज़रूरत तो नहीं। इतना कहते कहते मेरे मित्र की आंखों के कोर भीग गये, हालांकि उन्हें कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी। मैं ये सब उनके ही नहीं मेरे ग्रुप के बहुत से दोस्तों के चेहरे पर लिखा देख रही थी। मैंने सांत्वना देते हुये कहा देखिये आप ने कितनी अच्छी परवरिश की है। बच्चे आप का कितना सम्मान करते हैं बच्चे आपका लिहाज करते है, डरते हैं। वही तो।

वो भावुक हो गये मुझे नहीं चाहिये सम्मान या डर, मैं चाहता हूँ जैसे वो अपनी माँ के गले लटक कर झूमते हैं, मेरे साथ भी वैसे ही पेश आयें। मेरे जाते ही उनकी हंसी ठिठोली थम जाती है, पत्नी के द्वारा ही मुझ तक सारी बातें पहुँचती, कि बड़े को कोई लड़की पसंद है। हम होटल जाते पहले की तरह, मैं आर्थिक रूप से सक्षम हूँ, पर वो जेब में हाथ नहीं डालने देते, झट कार्ड निकाल बिल भर देते हैं। घर पर भी कुछ आर्डर करना चाहता, तब तक पार्सल आ जाता है। हां, उसे बचपन से शॉपिंग में ही कराता हूँ बेहतर ब्रांड की, पर पूछते डरता हूँ वहाँ भी उसने कार्ड निकाल लिया तो? अब सलाह देने का कोई काम भी नहीं रहा। मैं सच कह रहा हूँ वे इतने सक्षम और अपडेट हैं, कि मुझे मेरे स्वास्थ्य, लाइफ स्टाइल, सेविंग्स के बारे में माँ के माध्यम से समझाते हैं। आपको कैसा लगता है, फिर मैंने पूछा? बहुत अच्छा इसी दिन का मैंने इंतज़ार किया। फिर इतनी बेचैनी क्यों मैंने पूछा ? जाने क्यों लगता है ममता जी मैं कुछ अलग थलग पड़ गया हूँ। वो मुझसे दूर हो गये है। बांहों में भरना चाहता हूँ, वे आदर से पैर छूकर हट जाते हैं। उन्हीं बच्चों से बात के लिये झिझकता हूँ जो, बचपन में मेरे गले लटक के पूछते थे पापा आज आम लाओगे या साइकिल दिला दोगे जब फर्स्ट आऊँगा। आज तो उनके लिये मैंने अलग गाड़ी रखी है कि जब वे आयें तो घूमने के लिये उनके पास अलग गाड़ी हो। अचानक वो फूट पड़े, उन्हें अब मेरी ज़रूरत नहीं मैंने कहने की कोशिश की तो क्या आप पर आश्रित हों आप के बच्चे लायक नहीं बने। आसमाँ छुयें, वैसी ही कुछ तमन्ना की थी ना आपने, तो फिर दुःख कैसा ? आपने सारा जीवन उनके लिये सब किया।

बस्स..... पैसे ही दिये, सब कुछ उनकी माँ ने किया। मैं मानता हूँ बच्चों को जब पैसे की अहमियत नहीं थी तब उन्हें मेरा वक्त चाहिये था और वो मैं उन्हें दे नहीं सका। उनकी माँ ने दिया। अरे ! तो आप भी तो उन्हीं के लिये पैसे कमा रहे थे इसका उन्हें अहसास है। हाँ, ये तो है वो आंसू से गीली आंखे फिर चमकने लगी। चुपचाप दवा ख़त्म होते ही टेबल पर आ जाती है। डॉक्टर के पास चैकअप के लिये ले जाता है। मेरी मनपसंद बीयर लाता है। अभीमेरे दोस्तों को बर्थडे की पार्टी दी अपने पैसों से। बस कह नहीं पातें ना क्योंकि आप ने दूरी बना कर रखी आप संकोच क्यों करते है वे आपके अपने है वो नहीं बढ़ा पा रहे हाथ तो आप बढ़ा लीजिये ना कदम... आगे। हाँ शायद तुम ठीक कहती हो... सोचते सोचते वे चले गये।

दूसरे दिन वो नाचते से मेरे पास आये अरे! बड़ी गलतफ़हमी में था आपने सच कहा था मैंने ही दूरी बना रखी थी जो शायद रात के अंधेरे में आंसुओं में बह गई। रात अचानक चुपचाप दबे कदमों से वो स्टडी में आया। जहाँ मैं पढ़ते-पढ़ते सो गया था या शायद माँ की अनुपस्थिति ने भी हौसला बढ़ाया। मेरी तरह वो भी संकोची था। मैंने कब अपने पिता से कहा था मैं उन्हें मैं प्यार करता हूँ। बस किये हुए का अहसास प्यार और नज़दीकियाँ बढ़ाता है। धीरे से उसने मेरे गले में हाथ डाला धीमे से मेरे कानो में फुसफुसाया आय लव यू पापा आय रियली मिस यू। हम दोनों चुपचाप रोते रहे। सुबह चाय की टेबल पर दोनों की आंखे टकराती, मुसकुराती पूछ रही थी और क्या कह रही है जिंदगी

मैंने कभी कहा तुमसे कि
मैं भी डरता हूँ
पिता को डरना मना है
पर हो जाता हूँ चिंतित
जब तुम बाज़ार से आने में
कर देते हो देर
जब छोटू स्कूल बस के लिये
सड़क पार करता है
या जब बड़ा ड्रायविंग करता है
घूमती है मेरी दुनिया तुम लोगो के इर्द-गिर्द
तुम्हे पैसों की तंगी ना हो
जिस चीज़ पर हाथ रखो
दिला सकूं
बस्स ये छोटे-छोटे डर है मेरे
जो मुझे तुम्हारे करीब होने से रोकते है
मेरे अपने आंसू गिरने से मुझे टोकते है
परिवार के लिये ही जीता मरता हूँ
कमज़ोर ना लगूँ तुम्हारे सामने
फिर भी कहता हूँ
तुम सबको खोने से डरता हूँ
हां मैं भी डरता हूँ।

हरियाली में उदर पूर्ति के बाद मां के साथ धींगामश्ती !

फोटो- ऋतुराज बुड़ावनवाला